प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम

¼d{kk 1 ls 5 rd ds fy;s½

बेसिक शिक्षा परिषद्
उत्तर प्रदेश

lLdj.k&

e[; lj{k.k	}kjk%	श्री सुनील कुमार, प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा एवं अध्यक्ष, स्टेर कोर कमेटी, एन. सी.एफ.–2005
lj{k.k	}kjk%	राज्य परियोजना निदेशक, उ0प्र0 सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, निशातगंज, लखनऊ।
funs'ku	}kjk%	श्री सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उ0प्र0, लखनऊ।
leUo;u	}kjk%	फ़ैजुर्रहमान, प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद।
ijke'k	}kjk%	प्रो0 बी0पी0सिंह, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
		प्रो0डॉ0 ए0के0 बझलवार, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
		प्रो0 सरोज पाण्डेय, इग्नू, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
		प्रो0 पी0के0साहू, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
		प्रो0 शबनम हमीद इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
		श्रीमती वर्चस्विनी जौहरी, प्रधानाचार्या राजकीय शिशु प्रशिक्षण महाविद्यालय,इला0
leh{kk ,oa lEiknu	}kjk%	प्रो0 हेरम्ब चतुर्वेदी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
		प्रो0 धन्नजय यादव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
		श्री रमेश तिवारी सहायक उप शिक्षा निदेशक (पत्राचार) राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद
ys[ku	}kjk%	राजसिंह, सुशीला यादव, कोशलेश पाण्डेय, सुषमा यादव, उषा अग्रवाल, प्रेमलता सिंह, डॉ0 ममता दूबे, अनुराधा पाण्डेय, मनीषा कुशवाहा, दीपा मिश्रा, अंशिका यादव, डॉ0 इन्दू सिंह, धर्मेन्द्र कुमार यादव, केशव कुमार, रंजना पाण्डेय, उष्मा यादव, संजय यादव, रागिनी श्रीवास्तव, विभा दुबे, उषा किरणगुनी, गीता माथुर, डॉ0 कुलदीप तिवारी, राखी श्रीवास्तव, गोपेश मिश्र, आशीष भट्ट।
dEI;Vj ys vkmV	}kjk%	मनोज गोयल, राजेश कुमार यादव।

© उत्तर प्रदेश शासन

fp=kdu ,oa mRiknu % पाठ्य पुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उ0प्र0

jktfu;Dr çdk'ku ,oa en.kd %

çdk'ku o"k&

çfr;ksa dh la[;k %

çkDdFku

सीखना–सिखाना एक सर्वोच्य तथा श्रेष्ठ कार्य, परन्तु अत्यन्त जटिल प्रक्रिया हैं प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के साथ सीखना–सिखाना तो निश्चत ही अधिक संश्किष्ट और चुनौतीपूर्ण कार्य है। अध्यापन–विज्ञान और विशेषतः मनोविज्ञान के चिन्तकों की अवधारणा है कि शैशव का उत्तरार्ध और वाल्यकाल का पूर्वार्द्ध समग्र जीवन का सर्वाधिक संवेदनशील क्षेत्र है। उसे अपने घर की सीमित परिधि से निकलकर, विद्यालय–समाज के विविधता पूर्ण परिवेश में उसे सामंजस्य स्थापित करने की चुनौती सामने आती है। विद्यालय में बच्चों को समुदाय की एक व्यापक पृष्ठभूमि प्राप्त होती है, जहाँ उनके भावी जीवन का शिलान्यास होता है। इस प्रक्रिया का मूलाधार पाठ्यक्रम होता है।

विद्यालयों में बेसिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के दृष्टिकोण से प्रमुख सचिव बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश शासन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई बैठक में लिए गए निर्णयानुसार कक्षा 1 से 5 तक के समस्त विषयों के पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण एवं विकास किया गया है। पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण एन0सी0एफ0–2005, आर0टी0ई0–2009, एन0सी0ई0आर0टी0,नई दिल्ली द्वारा निर्धारित सी0वी0एस0ई0 के पाठ्यक्रम एवं उत्तर प्रदेश के एस0सी0एफ0 में निहित बिन्दुओं के आलोक में किया गया है। जिनका लक्ष्य है– बच्चों को अधिक से अधिक परिवेशीय एवं व्यावहारिक जानकारी देना तथा उनके अनुभवों से जुड़ी विषय–वस्तु समाहित करते हुए शिक्षा को रटने की प्रक्रिया से मुक्त बनाते हुए एवं बच्चों के बस्ते के बोझ को कम करना।

प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम विकास में एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली, इलाहाबाद विश्व विद्यालय, इलाहाबाद, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, राज्य विज्ञान शिक्ष संस्थान, उ0प्र0, मनोविज्ञानशाला, इलाहाबाद, आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, उ0प्र0, एवं राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद के विशेषज्ञों साहित परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं ने सहयोग प्रदान किया है।

निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद एवं राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, तथा सभी शिक्षविद् एवं विशेषज्ञों के मनोवांछित सहयोग के प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

हमें आशा ही नहीं, अपितु विश्वास है कि नवीन पाठ्यक्रम के उद्देश्यपूर्ण परिवर्तन बच्चों के विकास में लाभकारी सिद्ध होंगे।

लखनऊ।
जून, 2013

f'k{kk funs'kd ¼csfld f'k{kk½
एवं
अध्यक्ष, बेसिक शिक्षा परिषद,
उ0प्र0

☸ ikB~;Øe % d{kk 1 ls 5 ☸

✡ vuØef.kdk ✡

Ø- l-	ikB~; fo"k;	i"B l[;k
1.	भाषा (हिन्दी)	5—21
2.	गणित शिक्षण	22—59
3.	पर्यावरणीय अध्ययन	60—78
4.	समाजोपयोगी उत्पादक कार्य (कार्यानुभव)	96—103
5.	कला	104—110
6.	संगीत (गायन)	111—116
7.	शारीरिक शिक्षा, खेल तथा योगासन	117—133
8.	स्काउटिंग / गाइडिंग	134—141
9.	नैतिक शिक्षा	142—149
10.	संस्कृत	159—167
11.	अंग्रेजी	168—185

mnZ % mnZ ek/;e esa i<us okys cPpksa dks mnZ ek/;e dh ikB~;iqLrdsa miyC/k djk;h tk;A

çkFkfed Lrjh; ikB~;Øe ¼d{kk 1 ls 5½

☸ dkyka'kksa dk foHkktu rFkk ewY;kadu O;oLFkk ☸

Ø0 l0	ikB~; fo"k;	izfr lIrkg dkyka'k		i.kkZad		mRrh.kkZad
1	2	3		4		5
		d{kk 1&2	d{kk 3&5	d{kk 1&2	d{kk 3&5	
1.	भाषा (हिन्दी)	9	9	50	50	17
2.	गणित	6	8	50	50	17
3.	पर्यावरणीय अध्ययन	6	6	अ,ब,स	50	17
4.	कार्यानुभव	5	5	अ,ब,स	50	17
5.	कला तथा संगीत	3	4	अ,ब,स	50	17
6.	शारीरिक शिक्षा—खेल	6	6	अ,ब,स	50	17
7.	व्यायाम तथा योगासन, स्काउटिंग / गाइडिंग					
8.	नैतिक शिक्षा	1	2	अ,ब,स	50	17
9.	संस्कृत	—	4	अ,ब,स	50	17
10.	अंग्रेजी	—	4	—	50	17
	;ksx	36	48	100	450	

fgUnh

बच्चे जब विद्यालय पहली बार आते हैं तो वे परिवार के सदस्यों–माता–पिता, भाई बहन, रिश्तेदारों को छोड़कर आते हैं। विद्यालय में वहाँ का वातावरण, कक्षा का वातावरण, शिक्षक एवं उसके सहपाठी सभी उसके लिए अनजान रहते हैं, जिससे बच्चे स्वाभाविक रूप से वह सहमे रहते हैं। यहाँ आवश्यक है कि सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों को घर एवं परिवार जैसा माहौल एवं प्यार–दुलार दें, जिससे बच्चे आप से आत्मीय हों तथा उन्हें घर एवं विद्यालय के वातावरण में अन्तर न महसूस हो। जब इस प्रकार का वातावरण मिलता है तो बच्चे अपने को सुरक्षित, खुश एवं संतुष्ट महसूस करते हैं। उसके बाद वे अपने कक्षा के अन्य बच्चों से घुलने–मिलने का प्रयास करते हैं। धीरे–धीरे वे शिक्षक के करीब आते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चे अपने अन्तर्मन की बातों को सहजता पूर्वक कहने की स्थिति में आ जाते हैं।

''बच्चा जब विद्यालय आए
माहौल वहाँ वो घर सा पाए
घुल–मिल जाएं शिक्षक ऐसे
कि सीखना हो आसान
खेल–खेल में सब कुछ सीखें
सहज सरल हो जाए ज्ञान''

सभी बच्चे अपने घर, परिवार एवं परिवेश से अपनी बोलचाल की भाषा में अपने अनुभवों को लेकर विद्यालय आते हैं। विद्यालय में पहली बार आने वाला बच्चा बोलचाल के कुछ शब्दों और उनके अर्थ से परिचित होता है। लिपिबद्ध चिह्न और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ बच्चों के लिए अमूर्त हैं इसलिए सीखने का प्रारम्भ, बच्चों को भयमुक्त वातावरण प्रदान कर उनसे उनके परिवेश के रूचिपूर्ण विषयों पर वार्तालाप करके किया जाए, जिससे वे बेझिझक होकर अपनी बातों को कह सकें जैसे वो अपने पारिवारिक सदस्यों या प्रियजनों से करते हैं। वार्तालाप उनकी स्थानीय भाषा में हो, घर–परिवार से संबंधित हो एवं आस–पास के पर्यावरण के अनुरूप हो।

> वस्तुतः पाठ्यक्रम का तात्पर्य कक्षा एवं आयु के संदर्भ में सीखी जाने वाली विषयवस्तु से है अर्थात प्रत्येक कक्षा एवं आयु के अनुसार विषयवार जिन बिन्दुओं की समझ बच्चों में विकसित कर लेनी चाहिए उन्हें क्रम में लिखित रूप देना ही 'पाठ्यक्रम' है।

जब बच्चे पहली कक्षा में प्रवेश लेते हैं, उनकी अपनी भाषा एवं शब्द भण्डार, कुछ अंको की जानकारी, रिश्तेदारी एवं आस–पास की साधारण समझ होती है, फिर भी हम बच्चे को अनगढ़ा मिट्टी का बर्तन समझते हैं और उनके ज्ञान को कक्षा में पाठ पढ़ाते समय जोड़ना आवश्यक नहीं समझते। उनसे विद्यालय के बाहर की दुनिया के बारे में बात नहीं करते, उल्टे हम छपे हुए शब्दों और चित्रों की सहूलियत का सहारा लेकर उन पर पाठ्य पुस्तक में दिये गये ज्ञान को थोपते हैं, जो उनके संसार एवं अनुभवों से परे है। यह स्थिति ही बच्चों को विद्यालयी पर्यावरण से सामन्जस्य स्थापित करने में बाधक है।

उक्त बातों को ध्यान में रखते हुए कक्षा–1 का पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। यह पाठ्यक्रम विषयवार नहीं है, बल्कि इसमें विभिन्न विषय, जैसे– हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान आदि समेकित हैं। इसके अन्तर्गत बच्चों के दिन–प्रतिदिन के अनुभव के आधार पर विभिन्न क्रियाकलापों को विकसित किया गया है, जैसे– कहानी, कविता, गीत, भ्रमण, खेल व चित्र आदि।

> कक्षा में विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे जैसे कम सुनने वाले कमजोर दृष्टि वाले या हकलाने वाले बच्चे हों तो शिक्षक उनके व्यवहार का सूक्ष्म निरीक्षण करके उनकी पहचान करें तथा उनकी समस्याओं को समझें। उन्हें अन्य बच्चों के समकक्ष लाने के लिए उन पर विशेष ध्यान दें तथा उन्हें अधिक से अधिक अवसर व समय दें। उदाहरण के लिए कम सुनने वाले बच्चे से जोर से बोलें, कमजोर दृष्टि वाले बच्चे को आगे बैठाएं, हकलाने वाले बच्चे के उच्चारण पर ध्यान दें। उन्हें कक्षा एवं कक्षा के बाहर प्रत्येक गतिविधि में शामिल करें और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे। इससे उन बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा तथा सीखने की क्षमता तथा उपलब्धि स्तर में वृद्धि होगी।

mnn';

- बच्चों को कक्षा में सामन्जस्य स्थापित करने हेतु वातावरण/माहौल तैयार करना।
- बच्चों में अपनी इच्छानुसार अपने अनुभवों एवं विचारों को बताने हेतु अभिप्रेरित करना– यह तभी सम्भव है जब बच्चे विद्यालयी वातावरण में सहज महसूस करें। बच्चों को स्थानीय भाषा में अपनी बात कहने का पूरा अवसर एवं समय मिले। शिक्षक ऐसा माहौल बनाएं कि बच्चे अपनी जिज्ञासाओं को शिझकों के मध्य रख सकें।
- उनमें परिवेश के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करना और एवं स्वयं करके सीखने का अवसर प्रदान करना।
- ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना, जिससे बच्चों में खोजी प्रवृत्ति का विकास हो।
- बच्चों को दूसरों की बात सुनकर स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने योग्य बनाना, जिससे वे अपनी कल्पनाओं के आधार पर छोटी–छोटी कहानियाँ सुना सकें।
- बच्चों को परिवेश से सम्बन्धित छोटे–छोटे शब्दों को समझकर पढ़ने योग्य बनाना।
- उनको शब्दों की पहचान कराकर लिखाना एवं छोटे वाक्य बनाना सिखाना।
- बच्चों को अंग्रेजी (द्वितीय भाषा के रूप में) सीखने के लिए प्रेरित करना।
- दैनिक जीवन में प्रयुक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग कर सकना, जैसे– अभिवादन करना, पशु–पक्षियों के नाम एवं फल–सब्जियों के नाम आदि।
- अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों को पहचानने, पढ़ने एवं लिखने योग्य बनाना।
- बच्चों को दैनिक जीवन में कहाँ–कहाँ गणित का प्रयोग किया जाता है, उसके प्रति जागरूक करना।
- बच्चों में आस–पास की वस्तुओं के माध्यम से कम–ज्यादा, हल्का–भारी, आगे–पीछे, ऊपर–नीचे की व्यावहारिक समझ विकसित करना।

ikB;Øe ,slk gks fd&

- उसमें लचीलापन हो।
- बच्चों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करने वाली हो।
- बच्चों को इतनी स्वतंत्रता हो कि वे स्वयं अनुभवों द्वारा ज्ञान का स्वतः सृजन कर सकें।
- बच्चों की जिज्ञासाओं को बढ़ाने वाली हो।
- खोजी प्रवृत्ति बढ़ाने वाली हो।

- बच्चों में अंको की समझ विकसित करके उनका प्रयोग करना, सिखाने के लिए अवसर देना।
- परिवेश में पाई जाने वाली विभिन्न वस्तुओं के आकार की पहचान करना।
- बच्चों को अपने प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण से परिचित कराना एवं उसके प्रति जागरूक करना।
- अमूर्त ज्ञान के बजाय अपने जीवन के भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं के जीवन्त अनुभवों को पर्यवेक्षण एवं चित्रांकन द्वारा समझ सकें।
- बच्चों को उनके परिवार से शुरू होने वाली सामाजिक घटनाओं से लेकर वृहद स्तर पर परिवेशीय घटनाओं के प्रति जिज्ञासु बनाना।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करना एवं उन्हें विभिन्न क्रियाकलापों में समान अवसर देना।
- बच्चों में स्वयं स्वच्छ रहने एवं घर, पास–पड़ोस, विद्यालय की साफ–सफाई एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक करना।
- बच्चों में ईमानदारी, सहयोग, बड़े–बुजुर्गों के प्रति सम्मान, परिवार के सदस्यों से मिल–जुल कर रहना, पेड़–पौधों एवं पशु–पक्षियों के प्रति प्रेम व दयाभाव की अच्छी आदतों का विकास करना।
- कला, संगीत एवं नाटक के प्रति बच्चों की उत्सुकता जागृत करना।

ikB; lkexzh

- कक्षा–1 में भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी), गणित, विज्ञान एवं सामाजिक विषय की विषयवस्तु समेकित रूप में एक पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत की जाय एवं कक्षा–2 में भाषा (हिन्दी, अंग्रेजी) विज्ञान एवं सामाजिक विषय की विषयवस्तु समेकित रूप में एक पाठ्यपुस्तक में तथा गणित की अलग पाठ्यपुस्तक विकसित की जाए। पाठ्यपुस्तकें बच्चों को अधिक से अधिक करके सीखने का अवसर देने वाली हो। उनमें खोजबीन करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाली गतिविधियाँ समाहित हो।
- पाठ्यपुस्तकें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को भी ध्यान में रखकर बनायी जाएं, जिसमें कुछ पाठ एवं उदाहरण ऐसे हो जो समानता का भाव प्रदर्शित करते हो।
- इस स्तर पर बच्चे अपनी भाषायी क्षमताओं को विकसित कर रहे होते हैं अर्थात् सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना सीख रहे होते हैं, इसलिए भाषा के विकास पर विशेष जोर दिया जाए। क्योंकि भाषा ही गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन के शिक्षण का आधार है।
- पठन सामग्री में हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकता, स्वच्छता, बीमारी, ईमानदारी, सहयोग, बड़े–बुजुर्गों के प्रति सम्मान, पेड़–पौधों एवं पशु–पक्षियों से प्रेम, दया व उनकी सुरक्षा, आचार–व्यवहार, नैतिक मूल्यों अच्छी आदतों का विकास करने, जैसे– नल बन्द करना, बिजली का स्विच बंद करना आदि बातें भी सम्मिलित की जाए।
- कक्षा 1 में बच्चों को 1 से 100 तक की संख्याओं को पहचानना, समझना, गिनना एवं लिखना आना चाहिए। बच्चों को वस्तुओं को गिनने साधारण जोड़ व घटाने का कौशल विकसित किया जाए। कक्षा 2 में इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए हासिल वाले जोड़ व उधार के घटाने तक ले जाएं।
- बच्चों में सुरक्षा सम्बन्धी आदतें विकसित की जाएं, जैसे– आग, चाकू, बिजली के सामान से दूर रहना, सड़क पार करना एवं सड़क पर खेलने से होने वाली दुर्घटना से सावधान करना आदि है।

fØ;kdyki@rkj&rjhds ¼f'k{k.k fof/k;k½

प्रारम्भिक अवस्था में भाषा सिखाने के दौरान बच्चों का आपस में एवं शिक्षक से बातचीत करना आवश्यक होता है। बातचीत बच्चों के भय, संकोच व झिझक को तोड़ती है। उनके दायरे को बढ़ाती है। बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है। बातचीत के माध्यम से बच्चों के मस्तिष्क में विषय से संबंधित काल्पनिक चित्र बनने लगते हैं और वे आगे–पीछे की बातों को जोड़कर बोलना सीख जाता है।

- बच्चों को भाषा सीखने के लिए ऐसी गतिविधियाँ कराई जाएं, जिससे बातचीत के अधिक से अधिक अवसर मिलें और उनमें सुनने एवं बोलने के कौशलों का विकास हो सकें।
- शिक्षण मुख्य रूप से क्रियाकलाप आधारित होना चाहिए, जैसे भाषा ज्ञान हेतु कहानियों, कविताओं, गीत एवं विभिन्न प्रकार के खेल शामिल किये जाएं।
- कक्षा 1 के पाठ्यक्रम में भाषा, गणित सामाजिक अध्ययन विषय को समेकित रू॰ में दिया गया है अतः पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय भाषा, गणित व पर्यावरण तीनों पक्षों पर प्रकाश डालें, जैसे पाठ में बने पक्षियों के चित्रों के बारे में बात–चीत इस प्रकार करें–
- चित्र में क्या–क्या दिख रहा है? नाम बताओ (भाषा)
- चित्र में कितने पक्षी दिख रहे हैं? (गणित)
- पक्षियों के घरों का क्या कहते हैं? पक्षियों का रंग, उनके पंखों इत्यादि के बारे में चर्चा करें। (पर्यावरण)
- बच्चों के पास अपने परिवेश तथा आस–पास की दुनिया का अच्छा–खासा अनुभव होता है। शिक्षण के लिए बच्चों के विद्यालय तथा कक्षा के बाहर की गतिविधियाँ शामिल की जाएं, जैसे– अवलोकन करना, तुलना

करना, पैटर्न बनाना आदि। इससे बच्चे ध्वनि, अंको, संख्याओं, रंग, दृश्य, आकार आदि की विविधताओं और समानताओं को समझ सकेंगे।

- पाठ्यपुस्तकों में विषय सामग्री के साथ–साथ बहुतायत रूप से चित्रों का प्रयोग करें। चित्राधारित पाठ बच्चे की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाते हैं। यहाँ उच्चारण शुद्धता पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
- कक्षा में वातावरण ऐसा न हो जो बच्चों के ऊपर दबाव डाले, बल्कि उसे अपनी गति से आगे बढ़ने का मौका दिया जाए, जैसे– पर्यावरण एवं उनसे जुड़े मूल्यों के प्रति दायित्व बोध विकसित करने हेतु बच्चों को छोटी–छोटी गतिविधियों में सम्मिलित किया जाए। बीज बोना, पौधे लगाना, पेड़–पौधे में पानी देना, पानी को व्यर्थ बरबाद न करना आदि करने से बच्चों में पर्यावरण संरक्षण की समझ स्वयं ही आ जाती है।
- विभिन्न विषयों को सिखाते समय स्थानीय भाषा का प्रयोग हो क्योंकि स्थानीय भाषा के माध्यम से सीखना स्वाभाविक होता है। कक्षा में अधिक से अधिक स्थानीय भाषा का प्रयोग हो जो बच्चे अपने घर से सीखकर आए हों, फिर बच्चों को धीरे–धीरे उपयुक्त एवं मानक भाषा की तरफ ले जाएं।
- गणित जैसे अवधारणात्मक विषय को ठोस–मूर्त वस्तुओं का उपयोग करते हुए शिक्षण करने के अलावा बच्चों की जानकारी से सम्बन्धित संदर्भों से जोड़कर गणित को सरल एवं सरस बनाया जाय।
- अंग्रेजी भाषा की जानकारी हेतु सर्वप्रथम बच्चे के पर्यावरण से सम्बन्धित शब्दों, वाक्यों का प्रयोग किया जाय तो वह रूचिकर होगा व भाषा का स्थानान्तरण हिन्दी से अंग्रेजी में आसान होगा। जैसे– यदि हमें 'P ' बताना है तो Pencil, Pen, Parrot, Peacock को चित्रों के माध्यम से जानकारी देंगे, क्योंकि यह बच्चे के आस–पास के परिवेश से सम्बन्धित होते है और वे इससे परिचित होते हैं। अन्यथा 'P' से Penguin बताना निरर्थक होगा।

> eY;kdu dk mnn'; g
>
> - उन कठिनाइयों को पहचानना है जो सीखने के दौरान बच्चों के सामने आई है।
> - उन अभ्यासों/पाठों को पहचानना है जो कठिन प्रतीत हुए है।
> - फिर उन कठिनाइयों को, अभ्यासों को रोचक व आसान बनाकर बच्चों के बीच उनकी पुनरावृत्ति करना है।
> - सबसे महत्वपूर्ण मूल्यांकन यह है कि हमारे सीखने–सिखाने के तरीके कितने सफल हुए ? कहीं हमें कुछ बदलने की आवश्यकता तो नहीं है।

- प्रायः बच्चों को बिना किसी पूर्व–तैयारी के सीधे अक्षर लिखने को कह दिया जाता है। लिखना सीखने के पहले बच्चे ध्वनियों, आकृतियों की पहचान करना सीखें। इसके बाद चित्र बनाना, आकृतियों, अक्षरों एवं शब्दों पर अँगुली फिरवाएँ इसके बाद लिखना सिखाएँ। इससे बच्चों को लिखना आसान हो जाएगा।
- विषय सामग्री को पढ़ना सिखाने पर भी ध्यान दिया जाय, जिससे बच्चे शब्दों के अक्षरों को तोड़–तोड़ कर न पढ़े, बल्कि चित्रों के साथ तथा अपने आस–पास के परिवेश की जानकारी एवं अनुभवों के आधार पर समझकर पढ़े।
- शिक्षण प्रक्रिया में गतिविधियाँ कराते समय शिक्षक ध्यान रखें कि सामान्य बच्चों के साथ–साथ विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों को भी उनकी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किसी न किसी रूप में शामिल करें, जिससे उनका मनोबल बढ़े तथा उनमें स्वावलम्बन की भावना जागृत हो।

> मूल्यांकन प्रक्रिया में बच्चों के दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों के द्वारा उसके ज्ञान, समझ, क्षमता तथा प्रदर्शन का सतत् एवं व्यापक रूप से आकलन करना है। बच्चों के सीखने के संदर्भ में, मूल्यांकन सभी बच्चों को सीखने के प्रेरित करने और प्रत्येक बच्चे की क्षमता, उम्र, स्तर एवं परिवेश को ध्यान में रखते हुए उसे एक निश्चित स्तर पर पहुँचाने का साधन होना चाहिए।

eY;kdu

शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है। छात्र–छात्राओं में शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया सतत् होती है इसलिए मूल्यांकन भी सतत् होना चाहिए। मूल्यांकन का उद्देश्य बच्चे की सीखने की क्षमताओं को बिना किसी भय, जोर, दबाव के जाँचना–परखना है और सीखने की कठिनाइयों एवं समस्याओं को पहचान कर शिक्षण विधि में सुधार लाना है।

अतः कक्षा में मूल्यांकन करते हुए निम्नवत बातों को ध्यान में रखा जाए–

- मूल्यांकन पूर्णतया अनौपचारिक हो, सतत् एवं व्यापक हो, मूल्यांकन में बच्चों की मौलिकता, कल्पनाशीलता, सृजनशीलता के आंकलन में पर्याप्त अवसर हो।
- सभी बच्चों की सीखने की गति एवं प्रक्रिया भिन्न–भिन्न होती है। अतः प्रत्येक बच्चे की गति के अनुसार प्रगति का मूल्यांकन आवश्यक है अर्थात प्रत्येक बच्चे की प्रगति की तुलना उसकी पिछली स्थिति से की जानी चाहिए।
- मूल्यांकन में बच्चों की केवल अकादमिक प्रगति को नहीं देखना है बल्कि प्रत्येक बच्चे के नैतिक, सामाजिक, शारीरिक एवं भावात्मक विकास की भी जानकारी प्राप्त करना है।
- मूल्यांकन बच्चे के दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों पर आधारित हो।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का मूल्यांकन उनकी क्षमता और सीमाओं को ध्यान में रखकर किया जाए। इस स्तर पर किसी भी प्रकार की मौखिक व लिखित औपचारिक परीक्षा न ली जाए।

इस प्रकार बच्चों की रटने को प्रवृत्ति के बढ़ावा न मिले उसकी समझ विकसित हो, उसे कहाँ मदद की आवश्यकता है? उसकी अभिरूचियाँ क्या है? उसकी व्यक्तिगत और विशेष आवश्यकताएँ क्या है? उसके कौशल क्या है? इन जानकारियों को प्राप्त करने के लिए मूल्यांकन अवश्य किया जाना चाहिए।

fgUnh &1

mnn';	lEck/k	fØ;kdyki
lqudj le>uk • बच्चों में बातचीत को सुनकर समझने का कौशल उत्पन्न करना।	• कही गई बातों को सुनकर समझना • हिन्दी भाषा की सभी ध्वनियों की सुनकर समझना।	• बच्चों से घुल–मिल कर बात–चीत करें, जिससे उनकी झिझक दूर हो सके एवं उन्हें विद्यालय में घर परिवार जैसा वातावरण दें। • बच्चों को घर–परिवार, परिवेश आदि से सम्बन्धित बातचीत करके उन्हें सहज बनाएं। • बच्चों के कविता, कहानी एवं गीत के माध्यम से भाषा की सभी ध्वनियों की पहचान कराएँ। • बच्चों के बाद स्वयं भी कविता सुनाएँ एवं ध्वनियों की पहचान इस प्रकार कराएँ, जैसे' 'अ' से 'अनार' कितना मीठा, रस भरा हुआ हर दाने में। 'आ' से बोलें हम 'आम' सभी वह भी मीठा है खाने में।। 'इ' से 'इमली' जो खट्टी है, चटनी स्वादिष्ट बने इससे। 'ई' से बोलें हम लोग 'ईख' चीनी मीठी बनती जिससे।।
ckyuk • बच्चों में अपनी बात एवं अनुभव को बताने की उत्सुकता जगाना।	• चित्राधारित पाठ जैसे– मेरा परिवार, बाग, पशु–पक्षी के बारे में बातचीत कर आत्माभिव्यक्ति कराना। • शिष्टाचार के बारे में मौखिक अभिव्यक्ति। • अपने मन में आ रहे विचारों को अपनी भाषा में व्यक्त करना।	• आस–पड़ोस एवं पालतु पशु–पक्षियों के बारे में बातचीत कर उनको बोलने का अवसर दें। • कविता, कहानी, चित्र कथा आदि के द्वारा बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित करें। • बच्चों के परिवेश से सम्बन्धित कविता सुनाएँ जिससे बच्चों को भी बोलने की उत्सुकता उत्पन्न हो, जैसे– फूलों की क्यारी यह देखो, कई तरह के फूल खिले। गेंदा, बेला औ सूर्यमुखी कुछ फूलों की भी हैं बेलें।। कुछ गुलाब के पौधे भी हैं, फूलों से जो भरे हुए। रंग–बिरंगी मस्त तितलियाँ, फूलों का रस–चूस लिए।।

i<uk • भाषा की ध्वनियों, शब्दों को बच्चों के अनुभव से जोड़कर पढ़वाना।	• हिन्दी भाषा के सभी वर्णों की पहचान कराना। • बिना मात्रा वाले शब्दों को चित्रों के माध्यम से पढ़वाना। • दो या तीन शब्दों के सरल वाक्यों को पढ़ने का कौशल विकसित कराना। • सभी मात्राओं की पहचान कराना।	• बच्चों द्वारा उन्हीं की जानकारी से जोड़कर, पढ़वाना। • कहानी व कविताओं को चित्रों से एवं उनके अनुभव से जोड़कर ऊँगली रखकर पढ़वाना, जैसे – देखो यह तालाब बना है, पक्का कितना है सुन्दर। जल भरने को बनी सीढ़ियाँ, चौड़ी चारों ओर सुघर।। बतखें जल में तैर रही हैं, इधर–उधर इठलाती हैं। कुछ बच्चे जब दाना देते, खाने को आ जाती हैं।। लेकर घड़ा हाथ में अपने, पानी भरने को आई। रजिया, राधा और साथ में दोनों की अम्मा, आई।।
fy[kuk • लिखने की पूर्व तैयारी कराना। • भाषा की सभी ध्वनियों एवं सरल शब्दों को लिख सकना।	• मस्तिष्क एवं ऊँगलियों में सामन्जस्य बनवाना। • सुड़ौल एवं स्वच्छ लिखना सिखाना।	• बच्चों को कुछ भी बनाने के लिए स्वतंत्र कर दें। बच्चा जब स्वतंत्रता के साथ किसी भी तरह की आकृति बना ले, तब उससे उसी आकृति को पुनः देखकर बनाने को कहें। इससे आप यह देखेंगे कि बच्चा पहली बार जिस आकृति को बनाया उस समय उसने केवल ऊँगलियों का प्रयोग किया एवं दूसरी बार उसी आकृति को बनाने में बच्चे ने मस्तिष्क एवं ऊँगलियों दोनों का ही प्रयोग किया। • सीधी, आड़ी तिरछी रेखाओं व गोलों से सम्बन्धित कविता सुनाकर अक्षर लिखवाना सिखाएँ जैसे– लाइन एक खड़ी हम खींचे, एक बिन्दु मध्य में चुन लें। उसी बिन्दु से इस लाइन के गोला बायीं ओर बना लें।। दायीं ओर उसी बिन्दु से, नीचे एक सूँड़ लटकायें। ऊपर लाइन पड़ी खींचकर, 'क' लिखना इस तरह सिखायें।।

fgUnh &2

mnns';	lEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
l|udj le>uk • आस–पास की घटनाओं, वस्तुओं को देखकर व सुनकर अपने अनुभवों से जोड़ पाने की क्षमता का विकास करना।	• हिन्दी की सभी ध्वनियों को सुनकर पारस्परिक अन्तर को समझना। विशेष रूप से– ष, स, श, ब, व, ढ, ढ़, ड, ड़, क्ष, छ तथा ण, न की ध्वनियाँ। • सभी प्रकार के संयुक्ताक्षर को सुनकर समझना। • कविता–कहानियों में निहित भावों को सुनकर समझना।	• बातचीत के समय विभिन्न, ध्वनियों में अन्तर बताना एवं बच्चों से उन ध्वनियों को सुनना एवं उसका सही प्रयोग करना बताना जैसे– सड़क–शहर, देश स्वदेश, वाहन, बहन, मेढ़क–ढक्कन, डमरू–बड़ा कक्षा–छत, चरण–मनन इत्यादि। • बोलचाल में आये संयुक्ताक्षर शब्दों की पहचान कराना एवं बच्चों के सक्रिय सहभागिता द्वारा प्रयोग करना बताना जैसे– कुत्ता, पत्ता, बन्दर, मच्छर इत्यादि। • कविता एवं कहानियों को बच्चों के अनुभवों से जोड़कर सुनना एवं सुनाना– जैसे गर्मी बीती वर्षा आई खेतों में हरियाली छाई। हल लेकर चल पड़ा किसान बोने ज्वार, बाजरा, धान।। रंग–बिंरगी चिड़िया चहकी फूलों की क्यारी भी महकी। पड़ने लगा बाग में झूला खुशियों से सबका मन फूला।।	• विभिन्न ध्वनियों को सुने और समझे कि क्या उच्चारण शुद्ध रूप से हो रहा है। • इसी प्रकार की अन्य कविताएँ भी सुनाएँ एवं कविता से सम्बन्धित चर्चा करें देखें कि बच्चे कविता के भाव को समझ रहे हैं।
ckyuk दूसरों के विचारों को सुनकर शुद्ध उच्चारण के साथ अपने विचार व्यक्त करना।	• हिन्दी भाषा की सभी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण। • कविता, कहानी आदि को बिना झिझक तथा लय एवं भाव के साथ सुनाने के लिए प्रेरित करना। • अपने अनुभव को आत्मविश्वास पूर्वक व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना। • बोलते समय अंत में विराम	• आपसी बातचीत के माध्यम से बच्चों की प्रतिक्रिया जानना। जैसे– बच्चों से उनके विषय में, उनके परिवेश के बारे में बातचीत करना और उन्हें अधिक बोलने का मौका देना। • कविता, कहानी एवम् चित्रों के माध्यम से बच्चों से उनके विचार व्यक्त कराना। • चित्र बच्चों के परिवेश के पशु, पेड़–पौधे इत्यादि हो।	• जिन विषयों पर आपने बातचीत किया उस विषय पर बच्चों ने अपनी बात बतायी या नहीं। अगर नहीं बताया तो क्यों जानकारी का अभाव या झिझक। अगर जानकारी नही ंतो जानकारी दें। अगर झिझक है तो उसे दूर करने हेतु कुछ अन्य गतिविधियाँ कराएँ।

	देकर बोलने की क्षमता विकसित करना। • परिवेश से सम्बन्धित व्यवसाय एवं उनसे जुड़े व्यक्तियों के सम्बन्ध में बच्चों को बोलने के लिए प्रेरित करना। • यातायात के नियमों के बारे में जानकारी देना जैसे– जेब्रा क्रासिंग, फुटपाथ, रेलवे क्रासिंग एवं हेलमेट का प्रयोग।	• कविता एवम् कहानियों को उचित लय एवम् हाव–भाव के साथ बोलने को प्रेरित करना।	
i<uk बच्चों द्वारा अक्षर जोड़कर पढ़ने की बजाय समझकर पढ़ने की क्षमता का विकास करना।	• सभी मात्राओं को प्रयोग करने का कौशल विकसित करना। • शब्दों एवम् वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ समझकर पढ़ने का कौशल विकसित करना। • विराम चिह्नों यथा– अल्प विराम पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक पहचानते हुए विषयवस्तु का अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना सिखाना।	• परिवेश में उपलब्ध सन्दर्भो, चित्रों और छपी हुई सामग्री से पढ़ाने का प्रयास करें। बच्चे उन सामग्रियों से पूर्व परिचित होने के कारण सहजता से पढ़ने का प्रयास कर सकेंगे। • श्रव्य–दृश्य सामग्री, चार्ट्स, फ्लैस कार्ड्स, पत्र–पत्रिकाओं आदि के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को रूचिकर बनाएँ।	• बच्चे उपलब्ध सामग्री के विराम इत्यादि का ध्यान रखते हुए शुद्ध–शुद्ध पढ़ रहे हैं या नहीं। यादि नहीं तो शुद्ध–शुद्ध पढ़कर सुनाएँ। • संज्ञा, सर्वनाम और लिंग की पहचान हो गयी है कि नहीं इसके लिए कुछ शब्द बोलकर या श्यामपट्ट पर लिखकर पूछें।
fy[kuk लिपीय चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को समझकर उनमें सह सम्बन्ध बनाते हुए लिखने की क्षमता का विकास करना।	• स्वर, व्यंजन एवं मात्राएँ सुडौल व शुद्ध रूप में लिखने का क्षमता का विकास करना। • संयुक्ताक्षरों एवम् अनुशासिक ध्वनियों को शुद्धता के साथ लिखना सिखाना।	• चित्र बनाकर उस चित्र के आधार पर बच्चों से चार–पाँच वाक्य लिखने को कहा जा सकता है। जैसे– गाय, बैल, बकरी, आम, कुआँ, हैंडपम्प, माँ का चित्र इत्यादि। • सुलेख एवम् आलेख का अभ्यास कराना। • श्यामपट्ट कॉपी पर कविता, कहानी तथा अनुभवों को लिखने का अभ्यास कराना। • कविता कहानी को लिखवाना।	• जिस चित्र को आपने दिया उस पर बच्चों ने जो लिखा है उसकी जाँच कर लें और स्वयं भी उस विषय में बताएँ। • सुलेख एवम् आलेख की जाँच कर लें एवम् त्रुटियों में सुधार करें।

d{kk 3 ls 5

fgUnh Hkk"kk f'k{k.k dh vko';drk

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने भावों और विचारों को दूसरे तक पहुँचाते हैं। भाषा के द्वारा ही हम दूसरों की कही या लिखी बातों को सुनकर या पढ़कर समझते हैं। जीवन के विविध क्षेत्रों में कार्य करने, उसे समझने एवं जुड़ने के लिए भाषा एक औजार की तरह कार्य करती है। अन्य विषयों के अध्ययन में भी भाषा (हिन्दी) प्रमुख भूमिका निभाती है। अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा के दौरान बच्चों में हिन्दी भाषा के व्यापक एवं विविध स्वरूपों की गहरी समझ विकसित हो। उनमें भाषा सम्बन्धी समस्त कौशलों का विकास हो तथा दैनिक व्यवहार में आत्मविश्वास पूर्वक भाषा का प्रभावी उपयोग कर सकें। बच्चों में स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत को विकसित करना, ताकि वे पढ़ी हुई सामग्री से संज्ञानात्मक और भावनात्मक स्तर पर जुड़ेंगे और इसके बारे में स्वतंत्र और मौलिक विचार व्यक्त कर सकें। कक्षा 3 में आते–आते लिखना एक प्रक्रिया के रूप में प्रारम्भ हो जाता है और वह अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से लिखने लगते हैं। कक्षा 4 एवं 5 में बच्चा लिखने, पढ़ने में पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाता है।

mnn';

- पूर्व अर्जित भाषायी कौशलों का क्रमिक विकास करना।
- दूसरों के विचारों को सुनकर/पढ़कर उन्हें ग्रहण करने एवं प्रतिक्रिया विकसित करने की क्षमता का विकास करना।
- अपनी बात को दूसरों के समक्ष प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना एवं अपने भावों, विचारों, अनुभवों को तर्कपूर्ण एवं क्रमबद्ध ढंग से वर्णन करना।
- कविता, कहानी, वर्णन, संवाद आदि को पढ़कर या सुनकर उनके संज्ञानात्मक एवं भावात्मक दोनो पक्षों को समझना।
- वर्णों, शब्दों तथा वाक्यों का शुद्ध उच्चारण के साथ सुडौल, स्वच्छ तथा शुद्ध लिखना।
- मातृभाषा की समस्त ध्वनियाँ, संयुक्ताक्षरों, स्वरों, व्यंजनो एवं अनुनासिक ध्वनियों को पहचानने, उच्चारण करने तथा लिखने की क्षमता का विकास करना।
- व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध भाषा लिखने एवं मौखिक रूप से प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
- कहानी, नाटक, संवाद को सुनकर तथा पढ़कर घर, कक्षा एवं राष्ट्रीय समारोह तथा अन्य सामाजिक अवसरों पर अभिनय करने की क्षमता तथा विचारों और भावों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करना।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, शुद्ध, अशुद्ध, शब्द–अर्थ, विलोम, मुहावरे, लोकोक्ति आदि को समझना तथा अवसरानुकूल प्रयोग करने का कौशल विकसित करना।
- पुस्तकों के प्रति रूचि जागृत करना एवं स्वाध्याय की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- कला, संगीत एवं नाटक के माध्यम से विषयवस्तु को रोचक एवं स्पष्ट करना है, इससे बच्चों में कला, संगीत एवं नाटक के प्रति भी उत्सुकता जागृत होगी।
- बच्चों में नैतिक मूल्यों जैसे– ईमानदारी, सहयोग, बुड़े–बुजुर्गों के प्रति सम्मान परिवार के सदस्यों से मिलजुल कर रहना, पेड़–पौधों एवं पशु पक्षियों के प्रति प्रेम व दयाभाव का विकास करना।

Hkk"kk fl[kkus dh f'k{k.k fof/k;k

- प्राथमिक स्तर पर मौखिक भाषा को अधिक महत्व तथा सुनने, बोलने की दक्षताओं पर विशेष ध्यान दिया जाय। प्रारम्भ में यह प्रयास किया जाना चाहिए कि बच्चा अपना अनुभव बेझिझक अभिव्यक्त करें, चाहें भाषा शुद्ध हो या अशुद्ध। उसके घरेलू भाषा से क्रमशः मानक भाषा की ओर ले जायें।
- शिक्षण प्रक्रिया को रूचिकर एवं विविधता पूर्ण बनाने के लिए दृश्य–श्रव्य सामग्री, चार्ट, फ्लैश कार्ड्स, पत्र–पत्रिकाओं से कतरनें आदि एकत्रित कर प्रदर्शित करना चाहिए।
- कक्षा में सहज, आत्मीय वातावरण निर्मित करने के लिए बच्चों से उनके घर, परिवेश, पसंद–नापसंद, संगी–साथियों के बारे में बातचीत करनी चाहिए, जिससे उनकी झिझक खुले और वे अपनी बात स्वतन्त्र रूप से व्यक्त कर सकें।
- चित्र बनाकर कहानी बनवाना, गीत, कविता सुनना–सुनाना, शब्द अंत्याक्षरी, नाटक, अभिनय जैसी गतिविधि आधारित क्रियाकलाप बच्चे की भाषा–सामर्थ्य में वृद्धि करते हैं।
- समान ध्वनियों एवं संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को उदाहरणों द्वारा समझाना। जिन सम्बोधों पर बच्चे ज्यादा गलतियाँ करते हैं, उन्हें समझकर एवं उसी अनुसार उनमें शुद्ध उच्चारण की आदत डालें।
- सुलेख, श्रुतलेख आदि का पर्याप्त अभ्यास कराना।
- विभिन्न चुनौतियों वाले बच्चों को उनकी क्षमता एवं पृष्ठभूमि के अनुसार सिखाना। विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों हेतु विशेष रूप से निर्मित सामग्री का प्रयोग करते हुए उनके भाषायी कौशलों का विकास करना।

> विशेष आवश्यकता वाले बच्चों हेतु उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करना। शिक्षक उन बच्चों पर व्यक्तिगत ध्यान देकर उनकी समस्याओं का निराकरण करें, जैसे– कमजोर नजर या कमजोर श्रवण शक्ति वाले बच्चों को आगे बैठाया जाय। ताकि उसे शिक्षक के दिए गए निर्देशों एवं श्यामपट्ट पर लिखी गई बातों को समझने में कठिनाई का अनुभव न हो। उन बच्चों को पढ़ने के लिये प्रोत्साहित करना अर्थात कक्षा के प्रत्येक बच्चों से पाठ पढ़वाना चाहिए।

- पुस्तक को पढ़ते समय कठिन शब्दों को शब्दकोश में से देखकर उनके अर्थ समझने का अवसर दिया जाए।
- अनुभव पर आधारित घटना या यात्रा का वर्णन बच्चों से लिखवाना एवं अधूरी कहानी को पूरी कर सुनाने तथा लिखने को कहा जा सकता है।

eY;kdu

मूल्यांकन प्रक्रिया में तीसरी या पाँचवी कक्षा में थोड़ा बदलाव होगा और इस स्तर पर कुछ औपचारिक मूल्यांकन भी किया जाएगा। इस स्तर के बच्चों को पता होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है। सत्र में कई बार छोटी–छोटी लिखित और मौखिक परीक्षाएं ली जाएं न कि एक ही बार में। यह प्रक्रिया बच्चों के मन में डर पैदा करने वाली न हो सहजता के साथ मूल्यांकन किया जाय। शिक्षक को बच्चों को विभिन्न गतिविधियों पर ध्यान रखते हुए उसकी प्रगति को जाँच करनी चाहिए, जैसे– कक्षा में परिचर्चा में भाग लेते हुए, समूहवार काम करते हुए, लिखित कार्य करते हुए आदि।

मूल्यांकन करते समय शिक्षक बच्चे की प्रगति को तुलना किसी पूर्व कल्पित मापदण्ड से न करें, अपितु बच्चे की प्रगति का आकलन सूक्ष्म रूप से करके प्रत्येक बच्चे का रिकार्ड रखे, जिससे शिक्षक हर सप्ताह या पखवाड़े में प्रत्येक बच्चे की प्रगति के बारे में टिप्पणी दे सकें।

fgUnh &3

mn~ns';	lEcks/k	fØ;kdyki	eY;kdu
lquuk			
• बच्चों में हिन्दी भाषा को सुनकर समझने की क्षमता विकसित करना।	• कविता, कहानी, प्रसंगों तथा रोचक संस्मरणों को ध्यानपूर्वक सुनकर समझना। • कविता, गीत, लोकगीत, राष्ट्रगान आदि को सुनना, समझना तथा शुद्ध उच्चारण, लय एवं उतार–चढ़ाव को सुनकर समझना।	• बच्चों के रूचि के अनुसार परिवेश से सम्बन्धित प्रसंग पर चर्चा करेंगे एवं उनके अनुभव को सुनेंगे। • पास–पड़ोस में देखे गए दृश्यों तथा स्वतंत्रता आन्दोलन की घटनाओं पर चर्चा करेंगे।	• बच्चों से स्वतंत्र अभिव्यक्ति कराकर उनका मूल्यांकन करें।
cksyuk			
• प्रसंगों एवं रोचक संस्मरणों को सुनकर उसको बोलने के लिए प्रेरित करना।	• अपने आस–पास की वस्तुओं, दृश्यों, घटनाओं एवं सामाजिक समस्याओं को सुनकर उस विषय पर चर्चा करना। • शिष्टाचार सम्बन्धी शब्दों का प्रयोग करते हुए मानक भाषा में विचार व्यक्त करना। • हिन्दी भाषा के सभी ध्वनियों, वर्णों, अनुस्वार एवं चन्द्रबिन्दु में अन्तर करके शुद्ध उच्चारण करना।	• चित्रों के माध्यम से कविता, कहानी एवं पहेलियाँ बनाने एवं बोलने का अवसर प्रदान करना। • विभिन्न विषयों पर बच्चों द्वारा वार्तालाप एवं अभिनय द्वारा उनके विचार व्यक्त कराया जाए। जैसे– बच्चे को स्थानीय मेले का वर्णन करने को कहा जाए। • विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों हेतु कक्षा में वाचन को प्रोत्साहित करने का माहौल बनाना। हिन्दी की सभी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण कराना।	• कविता, कहानी एवं राष्ट्रगान को स्वर, लय तथा हाव–भाव के साथ गाने के लिए कहना।
i<uk			
• सांस्कृतिक मूल्यों पर्यावरण के प्रति जागरूकता की समझ के साथ पढ़ने के कौशल का विकास करना। • भाषा व्याकरण व सौन्दर्य का बोध कराते हुए पढ़ने का अभ्यास	• विभिन्न त्यौहार, वेशभूषा, रहन–सहन परिवेश, पर्यावरण संरक्षण, देश प्रेम, प्रार्थना, पौराणिक प्रसंग, समता, समानता, मानवीय मूल्य आदि से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री को समझते हुए पढ़ाना। • विलोम, समानार्थी, तुकान्त, अतुकान्त तथा समान ध्वनियों	• विभिन्न महापुरुषों की जीवनी, प्रेरक प्रंसग बताना। • प्रत्येक त्यौहार को प्रोजेक्ट के रूप में मनवाना व उसकी जानकारी देना। • बातचीत के दौरान विलोम, समानार्थी, तुकान्त, अतुकान्त शब्दों की पहचान एवं उसका	• विभिन्न महापुरूषों की जीवनी प्रेरक प्रसंग समूहवार सुनकर। • प्रोजेक्ट कार्य कराकर। • सस्वर वाचन कराकर।

कराना।	वाले शब्दों को पहचानते हुए पढ़ना। • पढ़ी जा रही सामग्री में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, विराम चिह्न, वचन, लिंग, काल की पहचान कराना।	प्रयोग कराना। • पाठ में निहित संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, वचन, लिंग, काल, विराम–चिह्न आदि को छाँटकर उनका प्रयोग कराना।	
fy[kuk • दूसरों की अभिव्यक्ति को सुनकर उचित गति से शब्दों एवं वाक्यों को लिख सकना। • देवनागरी लिपि के सभी ध्वनि संकेतों को सुडौल, स्वच्छ, सुन्दर तथा उचित दूरी का ध्यान रखते हुए शुद्ध रूप में लिखना सिखाना। • लिखते समय अर्द्धविराम, पूर्ण विराम, प्रश्नवाचक, विस्मयाबोधक आदि विराम चिह्नों का सही प्रयोग कराना। • श्यामपट्ट पर लिखी विषयवस्तु को देखकर अपनी उत्तरपुस्तिका पर सुडौल व स्पष्ट लिखवाना।	• स्वर, व्यंजन, मात्राओं, को सुडौल तथा शुद्ध रूप में लिखना। • अनुलेख, श्रुतलेख तथा सुलेख का अभ्यास कराना। वर्णों के मेल से शब्द तथा शब्दों के मेल से वाक्य बनाना। • प्रश्नों के उत्तर लिखना, अभ्यास, कार्य करना।	• समानार्थी तथा समान ध्वनियाँ वाले शब्दों छाँटकर लिखवाना। • विभिन्न वर्गो के मेल से नए–नए शब्द बनवाना। अधूरी कहानी को पूरा करना, छोटी–छोटी कविताओं को लिखवाना।	• बच्चों के शब्द प्रयोग से सम्बन्धित त्रुटियों को दूर करते हुए मूल्यांकन करना और बच्चों के शब्द–कोष को बढ़ाना। • बच्चे जब कहानी–कविता आदि का वाचन करें तो सस्वर लयात्मकता का ध्यान रखा जाय। • मूल्यांकन के दौरान शिक्षक बच्चों के सस्वर वाचन का भी पूरा ध्यान रखेंगे। उनकी त्रुटियों में सुधार करेंगे।

fgUnh &4

mnns';;	lEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
lqudj le>uk • पूर्व अर्जित भाषायी कौशलों का उत्तरोत्तर विकास करना।	• कक्षा स्तर के अनुसार गद्यखण्ड, कहानी, नाटक, संवाद, महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंगों को सुनना एवं समझना।	• कक्षा में बच्चों को विभिन्न विषयों पर जैसे– महापुरूषों, स्थानीय स्थलों, पर्यावरण, ज्ञान–विज्ञान, ऐतिहासिक धरोहरों के विषय में जैसे–	• विभिन्न विषयों जैसे महापुरुषों, पर्यावरण इत्यादि पर बातचीत के दौरान ध्यान दें कि

	• विषयवस्तु में निहित तथ्यों, विचारो, भावों एवं घटनाओं को सुनकर समझनां • सुनी गयी विषयवस्तु में शब्दों, वाक्यांशो, विराम चिह्नों, समान ध्वनियों आदि को सुनकर समझना। • कविता, गीत, कहानी सुनकर आनन्दानुभूति करना।	महात्मागाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर इत्यादि महापुरूष, सारनाथ, प्रयाग, लालकिला इत्यादि के विषय में बातचीत करना। कविता व कहानियाँ भी सुनाना। • (महापुरूषों या स्थलों के नाम की अन्त्याक्षरी भी करा सकते हैं) • विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों हेतु सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने सम्बन्धी विशेष क्रियाकलाप करवाना।	सभी बच्चों ने वार्ता में भाग लिया है कि नहीं। यदि नही तो क्यों? बच्चों को विषयवस्तु की जानकारी न होने पर उन्हें पुनः विषय वस्तु की जानकारी दें।
ckyuk • कविता, कहानी, लेख इत्यादि पर अपने भाव व्यक्त कर सकना।	• कविता, गीत, कहानी आदि का उतार–चढ़ाव व हाव–भाव के साथ सस्वर वाचन। • सामाजिक जीवन देश–प्रेम तथा पर्यावरण जैसे विषयों पर बातचीत करना। • किये गये वार्ताओं पर प्रश्नोत्तर करना।	• बच्चों की अभिव्यक्ति को प्रेरित करने वाली गतिविधियाँ कराना जैसे बच्चों से कहानी, कविता बुलवाएँ। • पढ़ी गई सामग्री का सारांश सुनाना। • परिवेशीय, सामाजिक मुद्दों पर उनके विचार लेना।	• परिवेश के विषय में बच्चों के विचार को जाने और उनके अल्पज्ञान को और बढ़ाएँ। • किसी पढ़ी हुई कहानी का सारांश बच्चों से पूछें। न बता पाने पर स्वयं बताएँ।
i<uk • पुस्तकों के प्रति रूचि उत्पन्न करना। • पठन के द्वारा जानकारी प्राप्ति में समर्थ बनाना।	• वाक्यांशों, प्रकरणों आदि को स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना। • पाठ्यसामग्री में आये विराम चिह्नों, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, प्रत्यय, उपसर्ग, तत्सम–तद्भव, देशज शब्दों को पहचानते हुए प्रयोग करना। • मुहावरों, लोकोक्तियों का अर्थ समझना व प्रयोग करना। • पढ़ी गई सामग्री में निहित भावों विचारों, तथ्यों को सुनकर समझना।	• बच्चों के समक्ष आदर्श वाचन करना तथा अनुकरण वाचन कराना। • श्यामपट्ट पर नए शब्द, वाक्यांश लिखकर बच्चों से उनका शुद्ध उच्चारण कराना। • बच्चों से पुस्तकालय की पुस्तकों को पढ़वाना, पढ़ी गयी विषयवस्तु पर बच्चों से चर्चा–वार्ता करना। • अखबारों से कविता–कहानियों का संकलन तैयार करवाकर पढ़वाना। • कठिन शब्दों के लिए 'शब्दकोश' का प्रयोग	• किसी पाठ का अनुकरण वाचन कराएँ। और यह देखें कि बच्चा शुद्ध–शुद्ध उच्चारण कर रहा है या नहीं। यदि नही तो शुद्ध उच्चारण बतायें।

		करवाना। • पाठक मंच की स्थापना करना। • सामान्य वार्ता व पुस्तक वाचन के दौरान आए मुहावरे एवम् लोकोक्तियों को समझाना।	
fy[kuk • मनपसन्द विषय का चुनाव कर लिखना • आत्मविश्वास के साथ लिखना।	• अपने अनुभवों एवं विचारों को लिखना। • कविता, कहानी के अंशों को उचित विराम चिन्हों का प्रयोग करते हुए लिखना। • संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय का उचित प्रयोग करके लिखना। • प्रधानाध्यापक, परिवार के सदस्यों, व मित्रों को पत्र लिखना।	• बच्चों से सुलेख, अनुलेख, श्रुतलेख का अभ्यास कराना। • बच्चों से उनकी पसन्द और नापसन्द विषयों पर लिखित अभिव्यक्ति कराना। • अधूरी कहानी लिखकर पूरा कराएं। • वर्ग पहेली भरवाना।	• अधूरी कहानी लिखकर पूरा कर पा रहे हैं या नहीं। यदि नहीं तो पूरा कराने में सहयोग करें। • बच्चों द्वारा लिखे गऐ सुलेख, श्रुतलेख या अनुलेख की जाँच करें कि वह शुद्ध–शुद्ध लिखा है या नहीं। यदि कहीं गलतियाँ हैं तो उसे शुद्ध करें।

fgUnh &5

mnn's';	lEckf/kr	fØ;kdyki	eY;kdu
lqudj le>uk • बच्चों में पुस्तकों के प्रति रूचि जागृत करना।	• पाठ्यपुस्तक की विधाओं जैसे निबन्ध, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि से परिचित होना और उन्हें सुनकर उनमें प्रयुक्त स्वराघात, बलाघात, विस्मय, व्यंग्य, हर्ष, विषाद जैसे भावों को समझना। • गद्य एवं पद्य के पाठों एवं प्रकरणों को ध्यानपूर्वक सुनना तथा उनमें निहित भावों एवं विचारों को समझना। • बोलने वाले की कथन शैली के अनुसार भावों को सुनकर समझना।	• सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रसंगों को सुनना–सुनाना। • सुनाये गये प्रसंगों पर वार्तालाप करना। • बच्चों की रूचि के अनुसार परिचित विषय या प्रसंग पर चर्चा। • विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों हेतु सुनने, बोलने, पढ़ने लिखने की विशेष गतिविधियों का प्रयोग। • सुनने की गतिविधि के लिए कानाफूसी आदि खेल करा सकते हैं।	• इस बात पर ध्यान दें कि जिन प्रसंगों पर वार्तालाप कर रहें है उस पर बच्चे ने भाग लिया कि नहीं। • इस बात पर भी ध्यान दें कि व प्रसंगों को सुन रहा है या नहीं। • कानाफूसी गतिविधि में आप भी भाग लें जिससे होने वाली ध्वन्यात्मक ऋुटियों को जान सकें।

ckyuk • दूसरों के विचारों को सुनकर समझना और उस पर तर्कसंगत प्रश्न पूछना।	• विभिन्न सामाजिक समस्याओं जैसे– पर्यावरण असंतुलन, लैंगिक असमानता, बालश्रम, अशिक्षा, शांति के लिए शिक्षा, जनसंख्या वृद्धि, कुपोषण, सड़क एवं यातायात के नियमों आदि पर अपने मौलिक विचार व्यक्त करना। • पूछे गये प्रश्नों का उचित व तर्कसंगत ढंग से उत्तर देना। • वार्तालाप के दौरान उचित बलाघात, आरोह–अवरोह का प्रयोग करना। • घर कक्षा, बालसभा, सामाजिक तथा राष्ट्रीय समारोहों में अवसरानुकूल अपने विचारों को व्यक्त करना।	• वाद–विवाद प्रतियोगिता कराना। • पाठ्यपुस्तक के पाठों का सस्वर वाचन कराना। • पुस्तकालय में पढ़ी गई पुस्तकों पर वार्तालाप • संवाद कैसे बोलें? इसकी गतिविधि कराना जेसे अँधेर नगरी नामक पाठ का संवाद बुलवाना।	• आप देखें कि बच्चा वाद–विवाद प्रतियोगिता में भाग ले रहा है कि नहीं। यदि नही तो कारण जानने का प्रयास करें। व उसे दूर करें। • पाठ्यपुस्तक के पढ़े गये पाठों पर चर्चा अवश्य करें। जिससे बच्चो ने पाठ ध्यान से पढ़ा है कि नहीं यह ज्ञात हो जाएगा।
i<uk • शिक्षण सामग्री को बोधात्मक तथा भावात्मक स्तर पर जोड़कर पढ़ने की क्षमता का विकास करना।	• पाठ्यपुस्तक में दिए गए सामग्रियों का अर्थग्रहण करते हुए मौन वाचन करना। • पाठ्यपुस्तक में दिए गए कवियों तथा लेखकों के सामान्य परिचय की जानकारी करना। • अभियान गीत, प्रयाणगीत आदि का सस्वर वाचन करना। • भिन्न–भिन्न पत्र–पत्रिकाओं में दी गयी सामग्री को प्रवाह के साथ पढ़ना।	• पाठ्यपुस्तकों के पाठों का सस्वर वाचन व मौन वाचन कराना। • संदर्भ पुस्तकों को पढ़ना तथा कठिन शब्दों को शब्दकोष में से देखकर उनके अर्थ समझने का अवसर दिया जाए। • अधूरी कहानियाँ देकर उन्हें पूरा करने के लिए कहा जाए।	• अधूरी कहानियाँ पूरी कर पा रहा है कि नहीं। इस पर ध्यान रखें। • शब्दकोष देकर किसी निश्चित शब्द को देकर उससे ढूँढने को कहें। यदि उसे ढूँढने पर कठिनाई आए तो निवारण करते हुए शब्दकोष का प्रयोग करना सिखाएँ।
fy[kuk • आत्मविश्वास के साथ लिख पाना। • विषयवस्तु और विचारों के प्रस्तुतीकरण में लेखन की तकनीकी का विकास।	• अपने अनुभवों, विचारों, भावों को शुद्ध भाषा में क्रमबद्धता के साथ लिखना। • पढ़ी अथवा सुनी गयी सामग्री को विराम चिन्हों का सही प्रयोग करते हुए लिखना।	• विभिन्न विषय देकर बच्चों से कहानी, कविता, निबन्ध, याता–वर्णन आदि लिखवाना। • संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय वाले शब्दों को छाँटकर	• किसी पाठ का एक पैराग्राफ देकर बच्चों से संज्ञा, सर्वनाम इत्यादि छँटवाएँ। बच्चे को इसकी कितनी समझ विकसित हुई है इस

	• परिवार के सदस्यों एवं मित्रों को पत्र तथा अध्यापकों को प्रार्थना पत्र लिख पाना। • विभिन्न सामाजिक विषयों, पर्वों, मेला, त्यौहार आदि पर मौलिक रूप से निबन्ध लिखना। • किसी दिये गये, अनुच्छेद का शीर्षक व सारांश लिख पाना। • संज्ञा सर्वनाम, क्रिया विशेषण, उपसर्ग, प्रव्यय, तत्सम् तद्भव, देशज शब्द, सामाजिक पद, वाक्य रचना के नियम आदि का ज्ञान तथा लेखन में उसका प्रयोग करना।	लिखवाना। • बच्चों से बाल पत्रिका लिखवाना जैसे बच्चों द्वारा बनाये गये चित्र, कविता, कहानी, कार्टून इत्यादि को एक जगह पत्रिका की तरह संकलित करना।	पर ध्यान दें। • किसी विषय को देकर जिन कहानियों को बच्चों से लिखवाया है उसको देखें कि विषय की जानकारी बच्चे को है।

xf.kr f'k{k.k

यदि हम अपने परिवेश का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करें तो हम पाते है कि हमारा सम्पूर्ण परिवेश गणित से भरा पड़ा है। प्रकृति स्वयं ही अपने पूर्ण गणितीय ढाँचे को प्रस्तुत करती है। उदाहरणस्वरूप पर्यावरण पृथ्वी का चक्कर लगाना, तारों और ग्रहों की गति, पौधों और वृक्षों का विकास,फूलों का खिलना आदि पूर्ण 'सममितता' का ठोस प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। अधिगम के आधारभूत कौशलों और ज्ञान को प्राप्त करने में गणित ही बच्चों को पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। यदि इसे अच्छे ढंग से और उन तरीकों से जो बच्चे के निजी परिवेश और अनुभव से सम्बन्धित हों, पढ़ाया जाय। हमारी ही तरह एक बच्चे को भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था से ही गणित के ज्ञान की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रारम्भिक स्तर के एक बच्चे को केवल गणित ही निम्न बिन्दुओं को समझने में सामर्थ्य प्रदान कर सकता है :–

- घड़ी/कैलेण्डर/रेलवे समय सारणी को पढ़ने में ।
- खरीददारी करने में।
- द्रव्यमान, उँचाई, तापमान आदि को ज्ञात करने में।
- अनुमान लगाने और परिणामों की जाँच करने में।
- ग्राफ, चित्रों आदि की सहायता से आँकड़ों को प्रस्तुत करने एवं व्यवस्थित करने में।
- परिवेश में उपलब्ध सममितता और पैटर्न को समझने में।
- तर्क, चिन्तन, समस्या का समाधान करने वाले कौशलों आदि को विकसित करने में।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में यह स्पष्ट है कि हमारा सारा व्यावहारिक जीवन गणित से आच्छादित है। अतः हम सबके लिये गणित का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। गणित क्या है, गणित के प्रति गलत धारणाएँ क्या हैं, प्राथमिक स्तर पर गणित में व्यापक समस्याएँ क्या हैं, आदि पर थोड़ा दृष्टिपात कर लेना भी समीचीन प्रतीत होता हैः–

xf.kr D;k g\

- यह एक यथार्थ और सत्य ज्ञान है।
- यह किसी कथन की सत्यता या असत्यता की परख तर्क के आधार पर करता है।
- यह तर्क, चिन्तन, कौशलों आदि का विकास करता है।
- यह अन्य विषयों के अध्ययन में सहायक है।
- यह मस्तिष्क को अनुशासित करता है।

xf.kr d çfr xyr /kkj.kk,¡

- यह एक कठिन विषय है और इसे सब नहीं पढ़ सकते हैं।
- विशेष रूप से यह लड़कियों के लिये कठिन है।
- यह केवल प्रतीकों, सूत्रों और परिभाषाओं का विषय है और इसका दैनिक जीवन में कोई प्रयोग नहीं है।
- यह एक नीरस विषय है, इसे रुचिकर बनाया ही नही जा सकता।
- प्रभावकारी जीवन यापन के लिये गणित का अध्ययन आवश्यक नहीं है।
- यह एक गम्भीर विषय है, इसे गम्भीरता से पढ़ाया जाय।
- इसमें अमूर्तपन है अतः यह बच्चों के सीखने में बाधक है।

çkFkfed Lrj ij xf.kr esa 0;kid leL;k,¡

प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण में अनेक समस्याएँ हैं जिनमें कुछ निम्नवत् हैं :–

- समय–समय पर किये गये सम्प्राप्ति परीक्षण यह प्रदर्शित करते हैं कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे गणित में बहुत ही कमजोर हैं।
- बच्चों को केवल रटकर गणितीय क्रियाओं को करने के लिये बाध्य किया जा रहा है। सम्प्रत्ययों को ठीक से समझाये बिना उन्हें सूत्र, परिभाषाओं आदि को रटने के लिये कहा जा रहा है।
- वर्तमान समय में गणित शिक्षण बच्चों के परिवेश तथा उनके अनुभवों से सम्बन्धित नहीं किया जा रहा है जिसके कारण यह विषय बच्चों की समझ से परे बना हुआ है।

उपर्युक्त तमाम विसंगतियों को ध्यान में रखते रखते हुये प्रस्तुत नवीन पाठ्यक्रम में निम्नलिखित पाँच अधिगम क्षेत्रों पर विशेष जोर दिया गया है :–

- संख्याएँ
- चार मूलभूत संक्रियाएँ
- मापन
- ज्यामितीय आकार
- आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या
- प्रस्तुत पाठ्यक्रम में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि प्राथमिक स्तर के बच्चों को निम्नांकित गणितीय सम्बोध अवश्य विकसित हो जायें :–
- संख्याओं के सम्प्रत्य की समझ
- शीघ्रता और यथार्थतापूर्वक चार मूलभूत गणितीय संक्रियाओं को कर सकने की सामर्थ्य
- विभिन्न मापों यथा–लम्बाई, द्रव्यमान, धारिता, समय, धन, तापमान आदि का अपने सन्निकट परिवेश में सही ढंग से प्रयोग कर सकने की दक्षता
- परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं की पहचान एवं वर्गीकरण, उनके आकारों तथा अन्य विशेषताओं के आधार पर कर सकने की योग्यता। इसके साथ ही साथ वस्तुओं के आकारों को दो या त्रिविमीय दिशाओं में खींचने का कौशल
- दैनिक जीवन की परिस्थितियों से सम्बन्धित चित्रों, ग्राफ आदि के रूप में दी गई सूचनाओं की व्याख्या एवं प्रस्तुतीकरण करने की योग्यता।

xf.kr fl[kkuk vklku gS] xf.kr f'k{k.k dks jkspd@vklku dSls cuk,¡\

- गणित में बच्चों का पूर्व अनुभव एवं उनकी रुचियों को ध्यान में रखकर।
- सिर्फ उत्तर पर ही अधिक ध्यान न देकर।
- बच्चों को ठोस वस्तुओं से खेलने व समस्याओं से जूझने का अवसर प्रदान करके।
- सैद्धान्तिक पक्ष पर अधिक बल न देकर क्रियात्मक कार्य।
- एक से अधिक पद्धतियों का प्रयोग करके।
- आसान से कठिन की ओर पहुँच कर।
- स्कूल के आस–पास या कक्षा में ऐसी बहुत सी वस्तुएँ उपलब्ध हैं जिनका उपयोग गणित सिखाने में किया जा सकता है।

- खेल, गतिविधि, प्रयोग एवं प्रदर्शन विधाओं का अधिकाधिक उपयोग कर बच्चों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया जाना चाहिये।
- उपयुक्त सुलभ साधनों एवं सामग्रियों की व्यवस्था द्वारा नीरसता को दूर करते हुए सम्बन्धित गणित विषय को रुचिकर बनाया जाय।
- अध्यापकों में भी गणित के प्रति रुचि रखने एवं समस्याओं के निदान का उपाय किया जाय क्योंकि गणित को रोचक बनाने का मुख्य उत्तरदायित्व शिक्षक पर है।
- समस्याओं के समाधान हेतु उन्हें रटवाने की ओर प्रेरित न करके समस्याओं को गहराई में ले जाकर प्रक्रिया पर अधिक बल दिया जाना चाहिये,इससे उनकी अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है।
- गणित नीरस विषय नहीं है इसका सौन्दर्यात्मक एंव कलात्मक पक्ष भी है। खेलकूद, गतिविधि एवं संख्या पर आधारित गणितीय खेलों द्वारा मनोरंजन को स्थान दिया जाय।
- गणित को व्यावहारिक जीवन एंव बच्चों की रुचियों से जोड़ने का प्रयास किया जाय।
- बच्चों के साथ परस्पर वार्तालाप, समूह में कार्य करने का अवसर दिया जाय। बार–बार अभ्यास करने, आत्मविश्वास के साथ अपनी बात कहने का अवसर दिया जाय।

xf.kr f'k{k.k ds mn~ns';

- बच्चों को गणित के महत्त्व से परिचित कराना।
- बच्चों में तर्क, चिन्तन, समस्या सुलझाना, निर्णय लेना, क्रमबद्धता, स्व–अनुशासन एवं निष्पक्षता आदि गुणों का विकास करना
- दैनिक जीवन में गणितीय समस्याओं को हल करने की योग्यता का विकास करना।
- बच्चों को लम्बा, चौड़ा, कम–अधिक, छोटा–बड़ा, हल्का–भारी आदि सम्बोधों का ज्ञान कराना।
- संख्याओं की गणना करने की क्षमता का विकास करनां
- विभिन्न ज्यामितीय आकारों का ज्ञान कराना।
- गणित में बिन्दु तथा रेखा के महत्त्व का ज्ञान कराना।
- गणित की चार मूलभूत संक्रियाओं से भलीभाँति परिचित कराना।
- गणित शिक्षण द्वारा कार्य करने की एकाग्रता का विकास करना।
- बच्चों में यथार्थ की खोज करने की प्रवृत्ति का विकास करना।
- गणित तथा अन्य विषयों के साथ सह–सम्बन्ध समझने की क्षमता का विकास करना।
- तर्कपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना।
- आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण एंव व्याख्या करने की क्षमता विकसित करना।

çkFkfed Lrjh; xf.kr ikB~;Øe esa vk;s fof'k"V 'kCnksa dk ljy fgUnh vuqokn

1. आरोही क्रम	बढ़ता क्रम
2. अवरोही क्रम	घटता क्रम
3. अपवर्तक	किसी संख्या को पूरा–पूरा काटने वाली संख्या
4. अपवर्त्य	किसी संख्या से पूरा–पूरा कटने वाली संख्या
5. भाज्य संख्या	जिस संख्या को दो से अधिक संख्याएँ पूरा–पूरा काटती हैं।
6. अभाज्य संख्या	जिस संख्या को केवल दो संख्याएँ काटती हैं।
7. समापवर्तक	दो या दो से अधिक संख्याओं को एक साथ ही पूरा–पूरा काटने वाली संख्यायें
8. समापवर्त्य	दो या दो से अधिक संख्याओं से एक साथ ही पूरा–पूरा कटने वाली संख्यायें
9. विभाज्यता	पूरा–पूरा विभाजित होना।

d{kk 1

mnns';;	lEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
l[;k&iwoZ dh tkudkjh • बच्चों में माध्यम से छोटा–बड़ा, हल्का–भारी, कम–ज्यादा, दूर–पास, आगे–पीछे की व्यावहारिक समझ विकसित करना।	l[;k&iwoZ dh tkudkjh • छोटा–बड़ा, ऊँचा–नीचा, मोटा–पतला, कम–ज्यादा, दूर–पास, ऊपर–नीचे, हल्का–भारी, अन्दर–बाहर, आगे–पीछे	• उपलब्ध चित्रों, मॉडलों, वस्तुओं द्वारा एवं कक्षा–कक्ष में उपस्थित बच्चों का प्रयोग करके बच्चों में इस सम्बोध को विकसित करने का अवसर दिया जाए। • परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं, जैसे गोली, कंकड़, चॉक के टुकड़े, पत्तियाँ आदि की दो ढेरियाँ बनवायें। अब किन्ही दो बच्चों को बुलाकर क्रम से एक–एक वस्तु उन ढेरियों में से एक साथ निकलवा कर अलग रखवाते जायें। जिस ढेरी की वस्तुऐं पहले खत्म हो जायं उसमें दूसरी ढेरी की अपेक्षा कम वस्तुएँ है इस प्रकार कम–ज्यादा का बोध करायें। • छोटा–बड़ा, मोटा–पतला, ऊँचा–नीचा, कम–ज्यादा यह तुलनात्मक अध्ययन है वस्तुओं द्वारा बच्चों को इसका बोध करायें।	• परिवेशीय वस्तुओं, चित्रों, चार्ट्स, फ्लैश कार्ड मॉडल की सहायता से खेल–खेल में बच्चों का मूल्यांकन करें।
1 ls 9 rd ds vad • 1–9 तक अंकों को समझना, गिनना एवं उनका व्यावहारिक प्रयोग करना। • परिवेशीय वस्तुओं का संकलन, एक जैसी वस्तुओं के समूहीकरण का अभ्यास।	1&9 rd ds vadks dk Kku • अन्तर्राष्ट्रीय अंक • संख्याओं के नाम, • गिनना, पढ़ना–लिखना, • घटते एवं बढ़ते क्रम में पूर्ववर्ती एवं अनुवर्ती संख्याएँ • क्रमसूचक संख्याएं, (पहला,	• वस्तुओं, चित्रों, मॉडलों की सहायता से 1 से .9 तक के अंको का प्रयोग गिनने, पढ़ने एवं लिखने सम्बन्धी क्रिया में किया जाए। • वस्तुओं के समूह बनवाकर उन्हें संख्या के अनुसार बढ़ते एवम् घटते	• परिवेशीय वस्तुओं तथा फ्लैश कार्ड की सहायता से प्रश्न किया जाए। • वस्तुओं का समूह बनवाकर समूह की संख्या के आधार पर बढ़ते एवं घटते क्रम में रखवाएं। • कक्षा के बच्चों की सहायता से क्रम सूचक प्रश्न

• संकलित वस्तुओं को गिनवाने की समझ। • 1–9 तक अंकों को पहचानना, गिनना एवं पढ़ना। • ताली के माध्यम से 1–9 तक की संख्याओं की समझ। • 1–9 तक की अंकों को क्रमवार लिखवाना। • परिवेशीय वस्तुओं एवं चित्रों की सहायता से जोड़ एवं घटाने की संक्रिया की समझ। • जोड़ एवं घटाने के लिए प्रयुक्त संकेतों (+, –) का प्रयोग करने का अभ्यास।	दूसरा ....) • जोड़ना (योगफल 9 से अधिक न हो) • घटाना। • जोड़ने एवं घटाने की संक्रिया में प्रयुक्त चिह्नों (+), (–) एवं (=) का प्रयोग।	क्रम में रखवाया जाय। • कुछ बच्चों को कतार में खड़ा कर उनके क्रम को (बच्चे का नाम लेकर) बच्चों द्वारा ज्ञात कराकर क्रम सूचक संख्या को स्पष्ट करें। • एक अंक की दो संख्याओं का जोड़, उंगलियों, तीलियों, कंकड़ों, गोलियों या कॉपी पर लाइन खिंचवाकर जोड़ने के कौशल का विकास करे।। • घटाने में भी उपर्युक्त क्रिया को अपनाया जाए।	किए जाए। • वस्तुओं एवं चित्रों की सहायता से जोड़ कराया जाए। • वस्तुओं, चित्रों की सहायता से घटाने का मूल्यांकन करें।
'kU; dh l dYiuk& • परिवेशीय वस्तुओं के माध्यम से वस्तुओं को घटाते हुए अन्त में शून्य की समझ का विकास जैसे– 3–1= 2, 3–2 = 1, 3–3=0	शून्य की अवधारणा एवं प्रयोग	• समूह में रखी वस्तुओं में एक–एक वस्तु को हटवाकर जब कोई वस्तु न बचे अर्थात् "कुछ नहीं" हो उसके लिए शून्य का प्रयोग करें। • संख्या में शून्य के जोड़ एवं घटाने को बताने के लिए वस्तु समूह में किसी वस्तु को न जोड़ने व न घटाने के प्रभाव से अवगत कराने सम्बन्धी क्रियाकलाप कराएं।	• परिवेशीय वस्तुओं, चार्ट एवं मॉडल की सहायता से मूल्यांकन करें।
10&20 rd dh l[;k,& • 10–20 तक संख्याओं को क्रमानुसार व्यवस्थित करना। • 20 तक संख्या की	10 l 20 rd dh l[;kvk dk Kku& • इकाई एवं दहाई का बोध। • घटते एवं बढ़ते क्रम में लिखना। • जोड़ एवं घटाने का अभ्यास।	• गिनतारा तथा अन्य वस्तुओं जैसे बीज, गोली, कंकड़ दोनों हाथों की उंगलियों की सहायता से सम्बन्धित सम्बोधों का समझ विकसित की जाए। • संख्या के अनुसार	• गिनतारा पर प्रदर्शित करायी गई संख्याओं, को शिक्षक लिखवाएं तथा बोली गई संख्याओं को गिनतारा पर प्रदर्शित कराएं। • कुछ संख्याएं देकर जैसे– 17, 11, 15, 18, 13 को

वस्तुओं को गिनवाना। • 10 वस्तुओं का बंडल बनाकर दहाई की समझ का विकास। • 20 तक की विभिन्न संख्याओं में इकाई एवं दहाई के अंकों को पढ़ने का अभ्यास। • 20 तक की संख्याओं में इकाई एवं दहाई का लिखने का अभ्यास। • वस्तुओं के माध्यम से जोड़–घटाने की समझ एवं उनका व्यावहारिक प्रयोग		वस्तुओं के समूह बनवाकर उन्हें संख्या के अनुसार बढ़ते और घटते क्रम में रखने का अवसर दें । • उंगलियों के द्वारा और कॉपी पर लाइन खींचवाकर जोड़–घटाने की कौशल का विकास करें।	आरोही अवरोही क्रम में लिखवाएं। • प्रश्न पूछकर जोड़–घटाने का मूल्यांकन करें।
21 l 99 rd dh l[;k,& • वस्तुओं एवं चित्रों के माध्यम से दहाईवार समूहों एवं इकाई अंक की समझ का विकास। • 21 से 99 तक की विभिन्न संख्याओं को दहाई के समूह एवं इकाई में पढ़ने एवं लिखने का अभ्यास। • 21 से 99 तक की संख्याओं को जोड़ने एवं घटाने का अभ्यास कराना।	21&99 rd dh l[;k,a & • बढ़ते एवं घटते क्रम में लिखना • दो अंकों वाली दो संख्याओं का जोड़ (बिना हासिल का), दो अंकों वाली दो संख्याओं का घटाना (बिना उधार लिए हुए)	• पूर्व की भाँति क्रियाकलाप कराया जाए।	• प्रश्न द्वारा मूल्यांकन किया जाए।
T;kfefr; *fofHkUu vkdkj&çdkj dh oLrq,a*	• गोलाकार, बेलनाकार,	• परिवेश में उपस्थित विभिन्न वस्तुओं जैसे गेंद, चॉक,	• परिवेश में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं की उनके आकार के

• परिवेश में पाई जाने वाली विभिन्न वस्तुओं के आकार की समझ विकसित करना। • परिवेश में उपलब्ध सरकने, लुढकने एवं स्थिर वस्तुओं का अवलोकन कराना एवं उनकी समझ विकसित करना	आयताकार, वर्गाकार वस्तुओं की पहचान कराना। • सरकने एवं लुढ़कने का अन्तर।	डस्टर, पेंसिल, पासा, पेन आदि को दिखाकर उनके आकार की पहचान करवाए तथा उन्हें मेज पर सरकाकर तथा लुढ़काकर बच्चों में लुढ़कने तथा सरकने वाली वस्तुओं में अन्तर की समझ विकसित करें।	अनुसार सूची बनवाएं। • चित्रों एवं मॉडल की सहायता से प्रश्न पूछ कर।
7- ekufl d vidxf.kr& /ku • प्रचलित मुद्रा को पहचानना। yEckbZ& eki u • उँगली, बालिश्त, हाथ एवं पग के माध्यम से छोटी दूरियों को नापने की समझ का विकास करना।	• 1 से 100 तक की मुद्रा का ज्ञान। • अनुमानित लम्बाई एवं दूरी का अनुमान।	• शिक्षक सिक्कों एवं नोटों की पहचान करवाएं। • बच्चों की किताब, कॉपी, पेंसिल बॉक्स आदि वस्तुओं की उनकी उंगली, बालिश्त (वेत्ता) एवं हाथ के द्वारा अनुमानित लम्बाई की समझ विकसित करें एवं दूरियों को पग की सहायता से नपवाकर अनुमानित दूरी की जानकारी करवाएं।	• चार्ट पर बने विभिन्न मूल्य के सिक्कों एवं नोटो के द्वारा बच्चों से पूछकर मूल्यांकन करें। • मौखिक प्रश्न पूछकर।

d{kk 2

mn~ns';	lEcks/k	fØ;kdyki	eY;kdu
• अन्तर्राष्ट्रीय अंको को देवनागरी लिपि में लिखने की जानकारी कराना। • तीन अंको तक की संख्याओं का समझ विकसित करना।	• देवनागरी अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय अंको के माध्यम से परिचय। • तीन अंको तक की संख्या को पढ़ना लिखना एवं स्थानीय मान ज्ञात करना। • 1 से................ 200, 201 से 300 .... 901 से 999 तक की संख्या को पढ़ना, लिखना एवं स्थानीय मान ज्ञात करना। • छोटी, बड़ी संख्याओं की समझ एवं संकेतों [<, =, >] के सही प्रयोग की जानकारी। • संख्याओं को बढ़ते क्रम (आरोही) एवं घटते क्रम (अवरोही) में लिखने की समझ विकसित करना। • किसी संख्या के ठीक एक पहले (पूर्ववर्ती) एवं ठीक एक बाद (अनुवर्ती) संख्या की जानकारी कराना। (1 से 999 के मध्य)	• श्यामपट्ट पर अन्तर्राष्ट्रीय तथा देवनागरी लिपि के अंको का छात्रो से परिचय कराना। • श्यामपट्ट पर तीन अंक की कोई भी संख्या लिखकर। • दायीं ओर से तीसरे अंक में सौ शब्द लगाकर शेष अंकों को पूर्व कक्षा 1 की भाँति पढ़ने का अभ्यास करायें। जैसे–705 को सात सौ पाँच, 823 को आठ सौ तेईस आदि। संख्याओं को शब्दों से अंकों में तथा अंकों से शब्दों में लिखने का कौशल विकसित करवायें। • यह अभ्यास करायें कि किसी संख्या में उनके अंकों का स्थानीय मान संख्या में अंकों के स्थान के अनुसार होता है। जैसे 513, 500 + 10 + 3 के बराबर है अतः 513 में 5 सैकड़े के स्थान पर है अतः इसका स्थानीय मान 500 होगा। 1 दहाई के स्थान पर है अतः इसका स्थानीय मान 10 होगा। 3 इकाई के स्थान पर है अतः इसका स्थानीय मान 3 ही रहेगा। • संख्याओं के छोटे और बड़े होने के क्रम को जानने के लिए पहले सैकड़े के अंक फिर दहाई के अंक अन्त में इकाई के अंक की तुलना करने की समझ विकसित करना। • दी गई संख्या में 1 घटाकर पूर्ववर्ती संख्या एवं दी गई संख्या में 1 जोड़कर अनुवर्ती संख्या ज्ञात करने का कौशल विकसित करना।	• तीन अंको की संख्याओं को फ्लैश कार्ड दिखाकर बच्चों से पढ़वाये। • तीन अंको की संख्याओं में स्थानीय मान बच्चों से ज्ञात करवाएं। • कई संख्याओं को लिखकर बच्चों से संख्याओं को घटते या बढ़ते क्रम में लिखने को कहा जायें। • कई संख्यायें श्याम पट्ट पर लिखकर संख्याओं की पूर्ववर्ती एवं अनुवर्ती संख्याओं को बच्चों से लिखवाएं।
	tksM+		
• दो अंकीय, दो या तीन संख्याओं का तथा तीन अंकीय,	• दो अंकीय दो या तीन संख्याओं का हासिल एवं बिना हासिल के	• जोड़ने की प्रक्रिया को अभ्यास कराते समय इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाय कि बच्चे इकाई के	• प्रश्न देकर जोड़ करवाएं

दो या तीन संख्याओं का हासिल एवं बिना हासिल के साथ जोड़ की समझ विकसित करना एवं व्यावहारिक जीवन में जोड़ की उपयोगिता की जानकारी कराना।	साथ जोड़। • तीन अंकीय दो या तीन संख्याओं का बिना हासिल एवं हासिल के साथ जोड़। • वार्तिक प्रश्न	अंक के नीचे इकाई का अंक, दहाई के अंक के नीचे दहाई का अंक इसी प्रकार सैकड़े के अंक के नीचे सैकड़े का अंक लिखें। • बच्चों से कोई भी दो संख्या श्यामपट्ट पर लिखवाएं जैसे 125 तथा 53 फिर एक बच्चे को बुलाकर दोनो संख्याओं को एक के नीचे एक लिखवाएं। अब दूसरे बच्चे को बुलाकर संख्याओं को जुड़वाएं। • दो वस्तुओं के मूल्य बताकर जुड़वायें।	
	?kVkuk		
• दो अंक की संख्याओं का तथा तीन अंक की संख्याओं का (बिना उधार लेकर तथा उधार लेकर) घटाने की समझ विकसित करना तथा व्यावहारिक जीवन में घटाने की उपयोगिता की जानकारी कराना।	• दो अंक की संख्याओं का घटाना। • तीन अक की संख्याओं का घटाना • वार्तिक प्रश्न।	• निम्न उदाहरण द्वारा घटाने की क्रिया को बताएं। (जैसे– 435 में से 289 को घटाना है।) सै0 द0 इ0 4 3 5 – 2 8 9 1 4 6 घटाने की क्रिया दाहनी ओर से प्रारम्भ करें। (i) $5 < 9$ से छोटा है। अतः 5 दहाई से 1 दहाई उधार लेकर 15 बनेगा। 15 में 9 घटाने पर 6 बचेगा। (ii) 3 दहाई की जगह 2 दहाई बचेगा। जो कि उसके नीचे वाली संख्या के 8 दहाई से छोटा है। इस प्रकार 2 दहाई सैकडे से 1 सैकडा उधार लेकर 12 दहाई बनाएंगा। 12 दहाई से 8 दहाई घटाने पर 4 प्राप्त होगा। (iii) 4 सैकड़े के स्थान पर 3 सैकड़ा बचेगा। उसमें से 2 सैकड़ा घटाने पर 1 प्राप्त होगा। • कुल बच्चों में कुछ लड़के है लड़कियों की संख्या निकलवाएं।	• प्रश्न देकर
	x|.kk		
• दो से दस तक के पहाड़ों को बोलना,	• 2 से 10 तक का पहाड़ा।	• बच्चों में एक ही प्रकार की वस्तुओं के माध्यम से समान संख्या में	• 2 से 10 तक के पहाड़े लिखवाएं एवं बीच–बीच

पढ़ना एवं समझ विकसित करना। एक अंकीय संख्या में एक अंककीय संख्या से गुणा के चिह्न को बताते हुए गुणा की जानकारी देना तथा गुणा में पहाड़े की उपयोगिता को बताते हुए व्यावहारिक जीवन से जोड़ने की समझ विकसित करना।	• एक अंककीय संख्या में एक अंककीय संख्या से गुणा। • दैनिक जीवन सम्बन्धी गुणा के प्रश्न।	जोड़ने की प्रक्रिया द्वारा पहाड़ा की अवधारणा विकसित कराएं। • वस्तुओं के माध्यम से जोड़ विधि द्वारा गुणा करने का कौशल विकसित करे (गुणा के चिह्न X का प्रयोग करते हुए) • बच्चों में पहाड़े की आवश्यकता को बताते हुए रूझान विकसित करें। यह बताए कि पहाड़े जोड़ने की प्रक्रिया को सरल बनाता है और कम समय में बड़ी–बड़ी संख्याएं जोड़ी जा सकती है। इस प्रकार बच्चों को पहाड़े याद कराएं जाए।	में से पूछें। • प्रश्न देकर जैसे– 4 X 3 =...................... 7 X 5 =......................
• एक अंकीय दो अंकीय संख्या में से एक ही संख्या को बार–बार घटाने की क्रिया द्वारा भाग की अवधारणा स्पष्ट करना। • व्यावहारिक जीवन में भाग की उपयोगिता की जानकारी कराना।	Hkkx एक अंकीय या दो अंकीय संख्या में एक अंकीय संख्या से भाग, जबकि शेषफल शून्य बचे।	• किसी वस्तु समूह को कई बराबर हिस्सों में बटवायें। • किसी वस्तु समूह में से एक निश्चित संख्या की वस्तुओं को बार–बार घटवाकर स्पष्ट करें। • कुछ वस्तुओं को लेकर एवं कुछ बच्चों को बुलाकर वस्तुओं को बच्चों में बराबर–बराबर बटवाएं। (जैसे– 20 वस्तुओं को 4 बच्चों में) पहले प्रत्येक को एक–एक वस्तु दें फिर इसी प्रकार दुबारा प्रत्येक को एक–एक वस्तु दें यह क्रिया तब तक करें जब तक कि सभी वस्तुएं समाप्त न हो जायें। अब प्रत्येक से पूछे कि उसके पास कितनी वस्तुएं है। पुनः बाँटने की क्रिया को इस प्रकार करें। कि जितने बच्चे है उतनी वस्तुए लेकर अलग कराते जाऐं (जैसे– 20 में 4 वस्तुए लेकर अलग रखते जाऐं)। इस प्रकार देखते हैं कि 5 बार में वे वस्तुए समाप्त हो जाती हैं। इस प्रकार प्रत्येक बच्चे को 5 वस्तुएं मिलती हैं। अब इसको भाग विधि द्वारा पहाड़े की सहायता लेकर बच्चों को समझाएं।	• प्रश्न देकर जैसे $4 \div 2$ $8 \div 2$ $15 \div 3$ $28 \div 7$
• रेखा एवं वक्र रेखा	• रेखा एवं वक्र खींचना।	• पटरी की सहायता से खींची गई	• रेखा, एवं वक्र को बच्चों

की समझ विकसित करना।		रेखा के दोनों ओर तीर ( ) लगवाकर स्पष्ट करें कि यह दोनों ओर उसी सीध में असीमित दूरी तक गई है। • दो बिन्दुओं को पटरी की सहायता से मिलवाकर रेखा खण्ड की अवधारणा स्पष्ट करें। • बिना पटरी की सहायता से (फ्री हैण्ड से) वक्र खिंचवाएं।	द्वारा पूछकर मूल्यांकन किया जाये
• समतल एवं वक्रपृष्ठ की समझ तथा विशिष्ट आकार की पहचान कराना।	• समतल एवं वक्रपृष्ठ की पहचान • त्रिभुज, आयत एवं वृत्त की पहचान एवं खीचना। • आयताकार, वर्गाकार, त्रिभुजाकार, वृत्ताकार, गोलाकार, घनाकार, वेलनाकार, शंक्वाकार, घनाभाकार वस्तुओं की पहचान।	• विद्यालयी परिवेश उपलब्ध वस्तुओं को स्पर्श द्वारा बच्चों को समतल एवं वक्रपृष्ट की पहचान कराएं। • त्रिभुज, आयत एवं वर्ग को, रेखा खण्ड के माध्यम से तथा वृत्त को सिक्के या ढक्कन की सहायता से बनवाने का कौशल विकसित करें।	• विभिन्न आकृतियों को दिखाकर उनका नाम पूछ कर बच्चों का मूल्यांकन किया जाये।
	/ku		
• भारतीय मुद्रा में विभिन्न मूल्य के रुपये के नोटो एवं सिक्कों की पहचान कराना एवं उनके प्रयोग की जानकारी देना।	• 1, 2, 5 एवं 10 रुपये के सिक्के तथा, 10,20, 50, 100, 500 एवं 1000 रुपये के नोट की पहचान। • विभिन्न सिक्कों एवं नोटों को बच्चों को देकर उनका योगफल याद कराना, जिसका योग 100 से अधिक न हो।	• विभिन्न प्रकार के नोटों एवं सिक्कों को दिखाकर उनकी पहचान कराएं। • खेल–खेल में प्रतीक नोटों के मूल्य का जोड़ सिखाएं।	• विभिन्न प्रकार के नोटों एवं सिक्कों को दिखाकर बच्चों से उनका मूल्य पूछा जाये।
	yEckbZ ekiu		
• लम्बाई मापने की सामान्य (प्रामाणिक) जानकारी देना एवं व्यावहारिक जीवन में इसकी उपयोगिता को बताना।	• लम्बाई (दूरी) को सेमी एवं मीटर में नापना, मीटर एवं सेमी में सम्बन्ध। • जोड़ एवं घटाने सम्बन्धी दैनिक जीवन	• विभिन्न वस्तुएं लेकर उनकी लम्बाई सेमी / मीटर में नपवायें। • मीटर फीते की सहायता से सेमी तथा मीटर के सम्बन्ध को स्पष्ट करें। कमरे, किताब, मेज इत्यादि की लम्बाई और चौड़ाई मीटर और	• मेज, कलम, पेंसिल बॉक्स इत्यादि को बच्चों से नपवाया जाए तथा • मीटर, सेमी के जोड़ घटाने पर आधारित प्रश्न देकर।

	में व्यावहारिक प्रश्न।	सेमी में नपवाकर कुल योग कराने का अभ्यास तथा लम्बाई व चौड़ाई में अन्तर की समझ एवं उसको ज्ञात कराने का अभ्यास करवायें।	
• दैनिक जीवन में तौलने की प्रक्रिया से अवगत कराना तथा उसकी उपयोगिता की समझ विकसित करना।	rkSy lEcU/kh rqyukRed ekiu • ग्राम, किलोग्राम में सम्बन्ध एवं दो वस्तुओं के तौल के योग एवं अन्तर सम्बन्धी व्यावहारिक प्रश्न। • 1 किग्रा0, 500 ग्राम, 250 ग्राम, 100 ग्राम एवं 50 ग्राम के बाँटो की पहचान।	• किग्रा को ग्रा0 तथा ग्राम को किग्रा0 में जोड़ने के अभ्यास को कराऐं। बदलने की समझ विकसित कराएं। • चित्रों के माध्यम से विभिन्न बाँटो की पहचान कराएं।	• किग्रा तथा ग्राम को के बाँटों को पहचनवाया जाये उनमें सम्बंध पूछा जाये एवं जोड़ घटाना कराया जाये।
• द्रव के आयतन एवं बर्तन की धारिता की समझ बच्चों में विकसित करना।	nzo dk vk;ru ,oa ik= dh /kkfjrk • कप, ग्लास आदि की सहायता से बाल्टी एवं टब की धारिता का मापन, • विभिन्न धारिता वाले 100 मिली 200 मिली, 500 मिली एवं 1 लीटर वाले नपना की पहचान • लीटर एवं मिली में सम्बन्ध (जोड़, घटाना)।	• बच्चों को एक बाल्टी देकर उसमें लोटे, ग्लास आदि से पानी भरवाकर बाल्टी की धारिता को स्पष्ट करें। • बच्चों को 100 मिली, 200 मिली, 500 मिली का पात्र देकर 1 लीटर पानी नपवायें। • दो विभिन्न धारिता वाले बर्तनों की धारिता का योग एवं अन्तर निकलवाएं।	• बच्चों से लीटर एवं मिली के जोड़ एवं घटाने को करायें।
• बच्चों में दिन सप्ताह, महीना वर्ष की समझ विकसित कराना।	le;&ekiu • वर्ष के महीनें एवं सप्ताह में दिन के नाम की जानकारी।	• कैलेण्डर की सहायता से सप्ताह, महीने दिन आदि का ज्ञान करायें।	• सप्ताह के दिनों के नाम वर्ष के महीनो के नाम बच्चों से लिखवायें।

d{kk 3

mnns';	lEck/k	fØ;k&dyki	eY;kadu
चार अंको तक की संख्याओं की समझ विकसित करना	• चार अंको तक की संख्याओं को पढ़ना, लिखना एवं स्थानीय मान ज्ञात करवाना। • छोटी बड़ी संख्याओं की समझ। • संख्या का पूर्ववर्ती एवं अनुवर्ती संख्या की जानकारी कराना। • संख्याओं को आरोही (बढ़ते क्रम) एवं अवरोही (घटते क्रम) में लिखने की समझ विकसित करना।	• दायें से चौथे स्थान के अशून्य अंक के साथ हजार लगाकर तीसरे अंक के साथ सौ लगाकर एवं दहाई इकाई को मिलाकर लिखवाएं तथा पढ़ने का कौशल विकसित कराएं। • कक्षा 2 की भाँति स्थानीय मान ज्ञात कराने का अभ्यास करवायें। • दो संख्याओं के मध्य छोटे–बड़े की जानकारी के लिए क्रमशः हजार, सैकड़ा, दहाई एवं इकाई के अंकों को देखते हुए परीक्षण करायें तथा संकेतों (>,=,<) का उचित प्रयोग करना सीखाएं। • पूववर्ती एवं अनुवर्ती संख्याओं को कक्षा–2 की भाँति लिखना तथा संख्याओं को आरोही एवं अवरोही क्रम में लिखने के कौशल का विकास कराएं।	• चार अंक की संख्याओं को बोलकर लिखवाये तथा लिखी गयी संख्या को पढ़वायें। • चार अंक की संख्याये देकर अंकों के स्थानीय मान निकलवायें। • प्रश्न देकर जाँच करें। • प्रश्न देकर जाँच करें।
अन्तर्राष्ट्रीय अंको का रोमन लिपि में लिखने की जानकारी कराना (एक से पचास तक)	• एक से पचास तक के अन्तर्राष्ट्रीय अंको का रोमन लिपि के अंको से परिचय।	• अर्न्तराष्ट्रीय अंको का रोमन अंकों में श्यामपट्ट पर लिखकर परिचय करायें।	• दोनो प्रकार के अंकों को एक साथ देकर अर्न्तराष्ट्रीय तथा रोमन अंकों को श्यामपट्ट पर लिखकर पढ़वाये तथा लिखने को कहें।
	tksM		
चार अंकीय संख्याओं तक के जोड़ की जानकारी कराना।	• चार अंकीय विभिन्न संख्याओ का जोड़। • वार्तिक प्रश्नों का व्यावहारिक	• पिछली कक्षा की भाँति बच्चो को जोड़ की प्रक्रिया को बतायें श्यामपट्ट पर चार	• प्रश्न देकर • प्रश्न देकर

	जीवन में उपयोग।	अंकीय दो या दो से अधिक संख्याओं को एक दूसरे के नीचे रखवाकर जुड़वाने में शिक्षक छात्रों की सहायता करें एवं जोड़ के कौशल को विकसित करें। पुनः पूर्व कक्षाओं की भांति बच्चों को निर्देश दे कि प्रत्येक संख्या के इकाई के अंक को इकाई के नीचे, दहाई के अंक को दहाई के नीचे, सैकड़े के अंकों सैकड़ो के नीचे इस प्रकार हजारवें अंक को हजार के नीचे रखें।	
चार अंकीय तक की संख्याओं के घटाने की जानकारी कराना।	?kVkuk • चार अंकीय दो संख्याओ के मध्य घटाना। • घटाने पर वार्तिक प्रश्न।	• पिछली कक्षा की भाँति बच्चों में घटाने का कौशल विकसित करें।	• चार अंकीय संख्याओं से सम्बन्धित घटाने के प्रश्न देकर • दैनिक जीवन में क्रिया कलाप के माध्यम से।
तीन अंकीय संख्याओं में एक अंकीय, दो अंकीय तथा 10, 20,........100, 200.......900 से गुणा की समझ विकसित करना एवं व्यावहारिक जीवन में इसकी उपयोगिता की जानकारी कराना।	x|.kk • गुण्य, गुणक और गुणनफल की समझ। • तीन अंकीय संख्या में एक अंकीय संख्या से गुणा। • तीन अंकीय संख्या में 0, 1, 10, 20.., 100, 200..... 900 से गुणा। • दो या तीन अंकीय संख्या में दो अंकीय संख्या से गुणा। • गुणा पर वार्तिक प्रश्न	• दो अंकों की भाँति तीनों अंकों की संख्याओं में एक अंक की संख्या से गुणा सम्बन्धी क्रिया–कलाप करायें। 2 6 1 – गुण्य X 3 – गुणक 7 8 3 – गुणनफल • तीन अंक या दो अंक की संख्या में दो या तीन अंक की संख्या से गुणा करते समय यह बताये कि जैसे 527 को यदि 28से गुणा करना है तो पहले 527 को 8 से गुणा कराये फिर 527 को 20 से गुणा कराये और इस प्रकार प्राप्त दोनों संख्याये	• तीन अंक की संख्या देकर एक अंक की संख्या से गुणा करवायें। • संख्याओं को देकर गुणा कराये सही उत्तर की जाँच करें। • किसी एक वस्तु के दाम बताकर ऐसी एक से अधिक वस्तुओं के दाम निकलवाने सम्बन्धी प्रश्न

		4216 तथा 10540 को जुड़वायें इस प्रकार 14756 प्राप्त होगा। पुनः 527 को 28 से गुणन विधि द्वारा गुणा करायें और प्राप्त गुणनफल को सत्यापित करायें • यह स्पष्ट करें कि गुणा की क्रिया स्थानीय मान के अनुसार की जाती है और अंत में गुणनफल को जोड़ दिया जाता है। • गुणा से सम्बन्धित दैनिक जीवन पर आधारित प्रश्न क्रिया कलाप के माध्यम से करायें। जैसे–एक घड़ी का मूल्य 502 है तो ऐसी 8 घड़ियों का मूल्य बताओ।	देकर जाँच करें।
दो या तीन अंकीय संख्या में शून्य, 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 एवं 10, से भाग (शेष युक्त या शेष 0) करने की समझ विकसित करना एवं व्यावहारिक जीवन में भाग क्रिया की उपयोगिता को बताना।	Hkkx • भाज्य, भाजक, भागफल और शेषफल की समझ। • शून्य से भाग अपरिभाषित। • दो या तीन अंकीय संख्या में एक अंकीय संख्या से भाग। • 10 से भाग तथा वार्तिक प्रश्न।	• भाज्य=भाजकXभागफल + शेषफल जैसे– 2) 7 (3 6 ——— 1 भाज्य = 7, भाजक = 2 भागफल = 3 शेष = 1 • किसी संख्या में ''0'' को घटाने पर संख्या में कोई परिवर्तन नहीं होता अतः किसी संख्या में ''0'' से भाग सम्भव नहीं है। अतः शून्य से भाग अ परिभाषित है। • वस्तु समूह में से ऐसी संख्या के वस्तु का समूह बनवायें जिससे पूरा–पूरा समूह बन जाय। फिर ऐसी संख्याओं के वस्तुओं के समूह बनवायें जिसमें कुछ शेष रह जाय। • पिछली कक्षा की भाँति भाग की क्रिया को बतायें।	• प्रश्नों के माध्यम से जाँच करे • वस्तुओं की ढेरी से भिन्न–भिन्न संख्या के वस्तुओं को समूह बनवाकर समूहो की संख्या तथा शेष वस्तु की संख्या पूछें। • दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न जैसे 10 कॉपी का दाम रु0 220 है तो एक कॉपी का दाम बताओ।

	fHkUu		
किसी पूर्ण वस्तु को उसके बराबर हिस्सो के द्वारा भिन्न की समझ विकसित करना एवं दैनिक जीवन में उसकी उपयोगिता को बताना।	• आधा, एक, चौथाई, तीन चौथाई इत्यादि भाग। • किसी भिन्न के अंश और हर तथा छोटी बड़ी भिन्न जबकि हर समान हो। • भिन्नो का जोड़ (समान हर वाली) • भिन्नों का घटाना (हर समान हो)।	• शिक्षक परिवेश में उपलब्ध वस्तु या वस्तुओं के समूह के दो बराबर भाग करके बतायें कि एक हिस्से को पूरे भाग का आधा या 1/2 कहलाता है इसी प्रकार वस्तु या वस्तुओं के समूह को चार बराबर भाग करके एक चौथाई (1/4), तीन चौथाई (3/4) इत्यादि भाग को स्पष्ट करें। • एक आयताकार कागज को लेकर उसको बीच से मोड़कर (बाहर ओर एक दूसरे को 6 क ले) पुनः कागज को कई बार मोड़ कर 16 या 32 बराबर भागों में बाँट दें। अब एक भाग कुल कागज का 1/16 या 1/32 भाग है। यदि पाँच भाग लिये जाये तो छात्रों से पूछें कि ये कुल कागज का कौन सा भाग है इस प्रकार छात्रों में भिन्न के ज्ञान का कौशल विकसित किया जाय। • कागज या वस्तुओं के माध्यम से हर और अंश का ज्ञान करायें तथा उन भिन्नों को प्रदर्शित करने वाले भागों की आपस में तुलना कराकर छोटे और बड़े भिन्न की समझ से अवगत करायें। अंश, हर बताकर भिन्न बनवायें जैसे (अंश = 1, हर = 5 तब भिन्न = $^{1}/_{5}$ होगी। अंश = 2, हर = 7 तब भिन्न = $^{2}/_{7}$) होगी। • परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं के माध्यम से दो भागों को मिलाकर किसी तीसरे के बराबर करके योग की क्रिया करायें (रंगाकर प्रत्येक भिन्न	• फ्रेक्शनल डिस्क की सहायता से $^{1}/_{2}$ $^{1}/_{4}$ $^{3}/_{4}$ $^{3}/_{10}$ भाग प्रदर्शित करायें तथा फ्रेक्शनल डिस्क से किसी भाग को दिखाकर उसे भिन्न के रूप में लिखवायें इसी प्रकार वस्तुओं के समूह में भी (कंकड़, बीज, चित्र) $^{1}/_{2}$ $^{1}/_{4}$ $^{3}/_{4}$ $^{3}/_{10}$ भाग प्रदर्शित करवाये। • प्रश्न देकर अंश, हर एवम् छोटी–बड़ी भिन्नों को पूछें। • प्रश्न देकर जाँच करें। • प्रश्न द्वारा।

		एंव उनके योगफल को प्रदर्शित भी करा सकतें हैं) • उदाहरण द्वारा भिन्न के घटाने की प्रक्रिया को बताएं जैसे रवि के पास 15 टॉफी है उसने 6 टॉफी अपनी बहन को तथा 9 टॉफी अपने भाई को दे दी। उसने भाई को बहन से टॉफी का कितना भाग ज्यादा दिया। इसको भिन्न के रूप में बताएं तथा घटाने का अभ्यास कराएं। 9/15 – 6/15 = 9–6/15= 3/15	
बिन्दु एवं रेखा खण्ड की तथा वस्तुओं के परिमाप की जानकारी देते हुये उसकी दैनिक जीवन में उपयोगिता को बताना।	T;kfefr • रेखाखण्ड को नापना एवं दी गई लम्बाई का रेखाखण्ड खींचना। • परिमिति (परिमाप) आयत, त्रिभुज वर्ग वृत्त।	• दिये गये रेखा खण्ड की लम्बाई नपवाकर लिखवाये। दी गई लम्बाई के बराबर रेखा खण्ड खींचवायें। • आकृतियों (त्रिभुज, वर्ग, वृत्त आयत) की धागे एवं स्केल के द्वारा परिमिति का बोध करायें।	• प्रश्न देकर। • कागज के टुकड़े, मेज चूड़ी आदि की परिमिति निकलवायें।
विभिन्न मूल्यों के सिक्को एवं नोटो में सम्बन्धों की समझ विकसित करना।	/ku • धन राशि का जोड़ घटाना	• रुपये के नोटों एवं सिक्कों को देकर उन्हें शब्दों एवं अंकों में लिखवाएँ। • विभिन्न वस्तुओं के मूल्य अंकित करते हुए सबका योग बतायें। • सांकेतिक पर्चियाँ बनवाकर खेल–खेल में कुछ रुपये देकर उनमें से कुछ रुपये की वस्तुओं को खरीदवायें तथा शेष रुपये को निकलवायें।	• प्रश्न देकर। • 500 रुपये में 100 या 50 के कितने नोट • 100 रूपये में 10 या 20 के कितने नोट • प्रश्न देकर
मिनट, घण्टा, दिन में सम्बन्ध की जानकारी देना। तथा घड़ी देखने की समझ विकसित करना।	le; ekiu • घण्टा और मिनटों में समय पढ़ना, दिनों को घण्टो में एवं घण्टो को मिनटों में एवं मिनट को सेकेण्ड में बदलना।	• घड़ी की सहायता से घंटे और मिनट बतायें, एक दिन और एक रात में कुल घंटों की संख्या का ज्ञान करायें।	• घड़ी की सहायता से जाँच करें।
दैनिक जीवन में तौल की	rky&ekiu • क्रिग्रा और ग्राम से सम्बन्धित	• 1 किग्रा में 1000 ग्राम होने का	• प्रश्नों के माध्यम

उपयोगिता को बताना।	जोड़ एवं घटाना।	बोध करायें दैनिक जीवन की वस्तुओं की नाप तौल करवायें तथा उन्हें लिखवाकर जोड़ने की क्रिया करवायें।	से जाँच करें।
धारिता मापने की छोटी बड़ी इकाईयों की जानकारी देना।	/kkfjrk ekiu • लीटर को मिली में बदलना। • जोड़ घटाना।	• 100 मिली, 200 मिली, 250 मिली के माध्यम से लीटर और मिली में सम्बन्ध बतायें। • लीटर तथा मिली के पात्रों की सहायता से जोड़ एवम् घटाने की क्रिया करायें।	• प्रश्न पूछकर
लम्बाई मापने की विभिन्न इकाईयों की जानकारी देना।	yEckbZ ekiu • किमी को मीटर एवं मीटर को सेमी में बदलना। • जोड़–घटाना।	• मीटर स्केल तथा मीटर फीता को दिखाकर मीटर तथा सेमी में सम्बन्ध स्पष्ट करायें। सड़क पर लगे किमी के निशानों को दिखाते हुए किमी एवं मीटर में सम्बन्ध स्पष्ट करें। • आयताकार कमरे मैदान आदि की लम्बाई–चौड़ाई नपवाकर लम्बाई–चौड़ाई का योग व अन्तर स्पष्ट करें। दो दूरियों को किमी तथा मी में नपवाकर, योग अन्तर की दक्षता का विकास करवायें।	• कमरों की लम्बाई–चौड़ाई मीटर में नपवाये तथा नापो को सेमी में लिखवाये। • प्रश्न द्वारा।

d{kk 4

mnns';	lEck/k	fØ;k&dyki	eY;kadu
लाख (छः अंकीय) तक की संख्याओं की समझ विकसित करना।	• लाख तक की संख्याओं को लिखना, पढ़ना एवं प्रत्येक अंक का स्थानीय मान ज्ञात करवाना। • छोटी बड़ी संख्याओं की समझ। • संख्या का पूर्ववर्ती एवं अनुवर्ती संख्या की जानकारी कराना। • संख्याओं को आरोही	• दायें से छठे स्थान के अंक के साथ लाख तथा पाँचवे व चौथे स्थान के अंको से बनी संख्या हजार लगाकर शेष को पूर्व की भाँति लिखवायें तथा पढ़ने का अभ्यास कराये जैसे 852453 को आठ लाख बावन हजार चार सौ तिरपन, 703582 को सात लाख तीन हजार पाँच सौ बयासी तथा 600035 को छः लाख पैंतिस पढ़ें। • निम्नविधि द्वारा बच्चों के स्थानीमान की जानकारी दें बच्चों से कोई छः अंकीय	• प्रश्न द्वारा लाख तक संख्याओं को लिखवायें, पढ़वायें तथा अंको के स्थान के अनुसार स्थानीय मान को पूछें। • प्रश्न देकर

	(बढ़ते क्रम) एवं अवरोही (घटते क्रम) में लिखने की समझ विकसित करना।	संख्या बनवाए जैसे– 7 5 4 3 2 6 लाख दस ह0 ह0 सै0 द0 इ0 7 5 4 3 2 6 संख्या का बिस्तारित रूप 7 X 100000 + 5X 10000 + 4X 1000 +3X100 +2X10+6 सात लाख चौवन हजार तीन सौ छब्बीस इसी प्रकार 5 या 6 अंको की संख्याओं को लेकर स्थानीमान ज्ञात करने की समझ विकसित करें। • छोटी बड़ी संख्याओं की समझ के लिए दो संख्यायों में क्रमशः लाख, दस हजार, हजार, सैकड़ा, दहाई और इकाई की तुलना करवाएं इसी प्रकार दो से अधिक संख्याओं के छोटे बड़े के अनुसार उन्हें अरोही एवं अवरोही क्रम में लिखवाएं।	• प्रश्न देकर।
छः अंकीय संख्याओं के जोड़ की जानकारी कराना एवं व्यावहार में उसकी उपयोगिता को बताना।	t kM • छः अंकीय संख्याओं के जोड़ • जोड़ के गुणधर्म • योग के वार्तिक प्रश्न	• पिछली कक्षा की भाँति बच्चों को जोड़ की प्रक्रिया को बतायें। • संख्याओं के क्रम को बदलते हुये जोड़ कराये और यह बतायें कि क्रम के बदल देने से योगफल में कोई अन्तर नहीं होता है। जैसे 5+3=8, 3+5= 8	• प्रश्न देकर जोड़ की जाँच करें।
छः अंकीय संख्याओं के घटाने की जानकारी कराना	?kVkuk • छः अंकीय संख्याओं का घटाना • घटाने पर वार्तिक प्रश्न	• शिक्षक पिछली कक्षा की भाँति बच्चों को घटाने के क्रियाकलाप कराएं।	• प्रश्न देकर घटाने की जाँच करें।
तीन अंकीय संख्याओं में तीन अंकीय संख्या से गुणा की समझ विकसित करना एवं व्यावहारिक जीवन में इसकी उपयोगिता को बताना। 20 तक के पहाड़ों की जानकारी देना	x|.kk • तीन अंकीय संख्या में तीन अंकीय संख्या से गुणा। • गुणा के गुणधर्म • गुणा पर वार्तिक प्रश्न • 20 तक के पहाड़े	• पिछली कक्षा की भाँति गुणा की प्रक्रिया को बतायें	• प्रश्न देकर गुणा का जाँच करें। • व्यवहारिक प्रश्न पूछ कर। जैसे एक घड़ी का मूल्य रु0 350 है। ऐसी 5 घडी का मूल्य पूछे और

			जाँच करें।
पाँच अंकीय संख्या में दो अंकीय संख्या (20 तक) तथा 30, 40, 50 .....90 से भाग की जानकारी देना एवं व्यावहारिक समझ विकसित करना।	Hkkx • पाँच अंकीय संख्याओं में 20 तक की दो अंकीय संख्याओं तथा 30, 40, 50........................ .....90 से भाग • भाग के गुणधर्म o वार्तिक प्रश्न	• पिछली कक्षा की भाँति भाग की क्रिया को बतायें।	• प्रश्न द्वारा जैसे 25) 12525 (• व्यवहारिक प्रश्न पूछ कर
अपवर्त्य और (अपवर्तक) की जानकारी देना।	• अपवर्त्य • अपवर्तक	• अपवर्त्य का बोध कराने के लिए स्पष्ट करं कि दी संख्या को 1,2,3, ... से गुणा करने पर प्राप्त संख्याएं उस संख्या की अपवर्त्य होती हैं। जैसे 5 के अपवर्त्य 5, 10,15,20 .... होंगे। अपवर्तक का बोध कराने के लिए इस क्रियाकलाप को करायें। 6 गोलियाँ ले उसमे से 1–1 गोली अलग रखते जायें। इस प्रकार 6 समूह प्राप्त होंगे [●] [●] [●] [●] [●] [●] पुनः 2–2 गोलियों को लेकर इस क्रिया को दोहरायें [●●] [●●] [●●] इस प्रकार 3 समूह प्राप्त होंगे इसी प्रकार 3, 4, 5, 6 गोलियाँ लेकर क्रिया करें। तीन गोलियाँ के दो समूह प्राप्त होगे। [●●●] [●●●] 4 बराबर गोलियों के समूह नहीं बने। [●●●●] [●●] 5 बराबर गोलियों के समूह नहीं बने। [●●●●●] [●] छः गोलियों का एक समूह बना। [●●●●●●] इस प्रकार देखा जाता है कि 6 गोलियों	• प्रश्न द्वारा

		के 1, 2, 3 तथा 6 गोलियाँ लेने पर बराबर गोलियों के समूह बन जाते हैं। अतः 1, 2, 3, 6 से संख्या 6 पूर्णता विभाजित हो जाती है अतः 1, 2, 3,6 संख्या 6 के अपवर्तक है। स्पष्ट करें किसी संख्या के अपवर्तक वे संख्याएं है जो उस संख्या को पूरा–पूरा विभाजित कर दें।	
भाज्य और अभाज्य संख्याओं की जानकारी कराना	• भाज्य और अभाज्य संख्यायें	• जिस संख्या के केवल दो अपवर्तक (गुणनखण्ड) हों (एक और स्वयं) वह संख्या अभाज्य (रूढ़संख्या) संख्या कहलाती है जैसे–7 के दो अपवर्तक (गुणनखण्ड) 1 और स्वयं 7 है। अतः 7 अभाज्य संख्या है। इसी प्रकार 3,5 11 और 13 आदि संख्यायें अभाज्य संख्यायें है। • ऐसी संख्या जिनके अपवर्तक (गुणनखण्ड) तीन या तीन से अधिक होते है भाज्य संख्यायें कहलाती हैं। जैसे 4 के 1,2,4 तीन अपवर्तक (गुणनखण्ड) है यह एक भाज्य संख्या है। इसी प्रकार 6, 8, 10, 12 आदि भाज्य संख्यायें है।	• संख्या समूह देकर भाज्य एवं अभाज्य संख्या छटवायें।
सम और विषम संख्याओं की जानकारी कराना।	o वस्तु समूह से 2–2 का समूह बनाने पर यदि कोई वस्तु न बचे तो समूह वाली संख्या सम संख्या होगी। यदि एक वस्तु शेष बचे तो समूह वाली संख्या विषम होती है।	• 14 मोतियों लेकर उसमें से दो–दो गोलियाँ निकलवाते जायें कोई भी गोली शेष नहीं बचेगी। अब 15 गोलियाँ लेकर इस क्रिया को पुनः करवायें एक गोली शेष बचेगी। इस प्रकार बतायें कि 14 सम संख्या तथा 15 विषम संख्या है।	• संख्या समूह देकर सम और विषम संख्यायें छटवायें।
समापवर्त्य व लघुतम समापवर्त्य तथा समापर्वत्य व महत्तम समापवर्तक की जानकारी देना।	• लघुतम समापवर्त्य या (ल0स0प0) तथा महत्तम समापवर्तक (म0स0प0) •	• दो या तीन संख्याओं 2, 4 तथा 6 के अपवर्त्य लिखवाएं तथा समान संख्याओं को घेरे जैसे 2 के अपवर्त्य = 2, 4, 6, 8, 10 (12) 14, 16, 18 20 22 (24) 26, 28, 30, 32, 34, 36...... 4 के अपवर्त्य = 4, 8 ,(12) 16 , (24) 20, 28, 32, 36...................... 6 के अपवर्त्य = 6, (12) ,18, (24) 30, 36..अब बच्चों से सामान्य संख्याओं को घेरने को कहें जैसे 12, 24, 36 ...... तथा बतायें कि ये संख्यायें समापवर्त्य कहलाती हैं। शिक्षक बताएं इनमें से सबसे छोटी संख्या ही	• प्रश्न देकर

		लघुतम समापवर्त्य है। यहाँ 2, 4, 6 का लघुतम समापवर्त्य 12 है। बच्चों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करें ल0स0 12 2, 4, 6, से पूर्णतः विभाजित है। दो या तीन संख्याओं 6, 12, 18 के अपवर्तक लिखवायें तथा समान संख्याओं को घेरे जैसे– 6 के अपवर्तक = 1, 2, 3, 6 12के अपवर्तक = 1, 2, 3, 4, 6, 12 18के अपवर्तक= 1, 2, 3, 6, 9, 18 समापवर्तक = 1, 2, 6 बच्चों को बतायें कि इसमें सबसे बड़ी संख्या महत्तम समापवर्तक कहलाती है यह 6, 12, 18 का म0सं0 6 है जो दी गई सभी संख्याओं को विभाजित करेगा।	
विभिन्न प्रकार की भिन्ने एवं उनके जोड़ घटाने की जानकारी देना	fHkUu • समान, असमान, सम विषम और मिश्र भिन्नें। • मिश्र और विषम भिन्नों में तुलना और परिवर्तन।	• कागज के टुकड़े या दफ्ती की सहायता से विभिन्न प्रकार की भिन्नें प्रदर्शित करते हुए इनकी अवधारणा स्पष्ट करें। जैसे एक नाप के तीन कागज ले एक कागज को दो बराबर भाग में, दूसरे को चार बराबर भाग में तथा तीसरे को छः बराबर भागों में मुड़वाएं। पहले कागज का एक भाग, दूसरे कागज का दो भाग तथा तीसरे कागज के तीन भाग लें और बच्चों से इन भागों को भिन्न के रूप में लिखवाएं। जैसे 1/2, 2/4, 3/6 अब बच्चों से इन कागज के भाग को एक के ऊपर एक रखवाएं और उनसे पूछें कि इनमें से कौन सा भाग सबसे बड़ा है उत्तर प्राप्त होगा सभी समान है इस प्रकार शिक्षक बताएं 1/2, 2/4, 3/6 समान भिन्न है बच्चों को यह भी बताएं कि भिन्नों के अंश और हर में एक ही संख्या से गुणा या भाग करने पर समान भिन्न प्राप्त होती है। इस प्रकार शिक्षक अन्य भिन्न की भी जानकारी देना। • चित्रों की सहायता से मिश्र–भिन्न को विषम भिन्न में तथा विषम भिन्न को मिश्र भिन्न में बदलना स्पष्ट करें। तत्पश्चात् एक सर्वमान्य नियम निकलवायें।	• दी गयी भिन्नों में से समान, असमान, सम विषम और मिश्र भिन्नों को छटवायें। • $3^4/_5$ को विषम भिन्न में तथा 7/5 को मिश्रित भिन्न बदलिए। • इसी प्रकार के अन्य प्रश्न देकर।

	• भिन्नों का जोड़ व घटाना • भिन्नों को न्यूनतम पदों में लिखवाना।	जैसे– 7/3 विषय भिन्न लें 7/3 = 7 तिहाई = 6 तिहाई + एक तिहाई =6X1/3+1 X1/3 = 2+1/3= 2 1/3 इसे 2 सही एक बटा तीन बढ़ते है मिश्रित भिन्नों के जोड़ के समय उन्हें विषम भिन्नों में परिवर्तित कराने के बाद ही जोड़ने तथा घटाने की क्रिया करायी जाय। भिन्नों के हर का ल0स0 लेकर तथा उन्हें समतुल्य कराकर जोड़वाएँ। अंश और हर के म0स0 से उनमें भाग देकर न्यूनतम पद लिखवाएँ।	• $4^{5}/_{6}$ में $^{7}/_{8}$ जोड़िये। इसी प्रकार अन्य प्रश्नों के माध्यम से। $4^{5}/_{6} - ^{3}/_{4}$ को सरल कीजिए इसी प्रकार अन्य प्रश्न देकर।
दशमलव का ज्ञान कराना तथा व्यावहारिक जीवन में उसकी उपयोगिता को बताना।	n'keyo l[;k • दशमलव की संकल्पना तथा लिखना, पढ़ना। • दशमलव संख्या में प्रत्येक अंक का स्थानीय मान। • लम्बाई, तौल और धारिता आदि को दशमलव संकेत द्वारा व्यक्त करना।	• एक वस्तु के दस बराबर भाग करवाएं, जिससे दसवें भाग बराबर 1/10 बराबर 0.1 इसी प्रकार 100 बराबर भाग कराकर 100वें भाग बराबर 1/100 बराबर 0.01 का बोध हो। इसी प्रकार मी0 सेमी, मिमी, आदि में सम्बन्ध बताते हुए क्रिया–कलाप करवायें। दशमलव चिह्न (.) को भी स्पष्ट करें। दशमलव को संख्या विस्तार के रूप में भी बतायें। (...सैकड़ा, दहाई, इकाई, दसवाँ, सौवाँ, हजारवाँ...)जैसे– 215.258 = 200+10 +5+2/10+5/100+8/1000 • दशमलव संख्याओं जैसे .245 को देकर प्रत्येक अंक का स्थान पूछें और उनका स्थानीय मान ज्ञात करायें। • व्यावहारिक उदाहरण देते हुए विभिन्न इकाईयों के दशमलव में व्यक्त करवायें जैसे 25 सेमी = 25/100 मी0 या 0.25 मी0	• कुछ दशमलव संख्या देकर बच्चों पढ़वाये तथा सैकड़ा, दहाई, इकाई, दसवाँ, सौवाँ, हजारवाँ .... अंक पूछें। • प्रश्न देकर। • प्रश्न देकर जैसे–(.567 में 5, 6,7 का स्थान और स्थानीयमान बताओं) • प्रश्न देकर (जैसे 4 मी 50सेमी को दशमलव संकेत के साथ लिखें।
विभिन्न आकृतियों की परिमिति की जानकारी देना।	T;kfefr • चतुर्भुज, वर्ग, आयत और त्रिभुज की परिमिति ज्ञात करना तथा आयत और वर्ग के परिमिति हेतु सूत्र ज्ञात करना।	• परिवेश में उपलब्ध सम्बन्धित आकृतियों की भुजाओं को नपवायें और सभी भुजाओं के नापों का योग कराकर परिमिति ज्ञात करायें। इस निष्कर्ष को भी निकलवायें की आयत की परिमिति बराबर 2X (ल0+चौ0) और वर्ग की परिमिति बराबर 4X वर्ग की	• कमरे, मैदान, त्रिभुजाकार खेत इत्यादि को नपवाकर परिमिति ज्ञात करवायें।

		भुजा	
	• परिमिति पर वार्तिक प्रश्न।	• खेत, बाग, फर्श, मेज, पुस्तक आदि की लम्बाई और चौड़ाई देकर परिमिति ज्ञात कराये।	• प्रश्न द्वारा।
घड़ी देखने की समझ विकसित करना एवं घटे मिनट पर आधारित व्यावहारिक ज्ञान देना।	le; ekiu • घंटा एवं मिनट का जोड़–घटाना • पूर्वाह्न, (a.m.) अपराहन् (p.m.) और मध्याह्न का जानकारी।	• व्यावहारिक प्रश्न देकर जोड़–घटाने की जानकारी देना। • बच्चों को बतायें कि 12 बजे दिन को मध्याह्न (दोपहर), 12 बजे मध्य रात्रि से 12 बजे दिन के बीच के समय को पूर्वाह्न और 12 बजे दिन से 12 बजे रात्रि के बीच के समय को अपराह्न कहते हैं। • शिक्षक यह भी स्पष्ट करें कि पूर्वाह्न को a.m. तथा अपराह्न को p.m. से प्रदर्शित करते है।	• प्रश्न द्वारा • श्यामपट्ट पर विभिन्न समयों को लिखकर, पूर्वाह्न, अपराह्न एवं मध्याह्न को प्रदर्शित करने वाले समयों को छँटवा कर लिखवायें।
कैलेण्डर देखने का कौशल विकसित करना।	• कैलेण्डर का प्रयोग तारीख के संगत दिन तथा दिन के संगत तारीख पढ़ना। • दिन, सप्ताह, सप्ताह–महीना और महीना–वर्ष मे सम्बन्ध तथा छुट्टियाँ और त्यौहार की जानकारी।	विभिन्न महीनों के कैलेण्डरों को दिखाते हुए तारीख के संगत दिन तथा दिन के संगत तारीख का ज्ञान करवायें। • किसी वर्ष का कैलेण्डर दिखाते हुए महीनों में दिनों की संख्या, सप्ताहों की संख्या तथा उस महीने में छुट्टियों की तिथि से अवगत करायें तथा तिथि की स्थिति से अवगत करायें। पुनः त्यौहारों को भी कैलेण्डर में दर्शायी गयी तिथि के साथ पढ़ने को कहें। एक वर्ष में महीनों की संख्या एवं उनके नाम से अवगत करायें। इसके साथ लीप–ईयर की अवधारणा तथा फरवरी के 29 दिन होने के सम्बन्ध में बतायें।	• कैलेण्डर दिखा कर पूछे। • कैलेण्डर दिखा कर पूछे
बच्चों में आँकड़े की समझ विकसित करना।	• आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण तथा व्याख्या।	• बच्चों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित बच्चों की आयु की सारणी, उनके विभिन्न विषयों के प्राप्तांकों की सारिणी, उनके लम्बाईयों की सारणी इत्यादि बनवायें तथा बनायी गयी सारणी की व्याख्या करायें।	• बच्चों के किसी विषय के प्राप्तांको की सारणी बनवाकर मूल्यांकन करें।

d{kk 5

mnn';	lEck/k	fØ;k&dyki	eY;kdu
करोड़ तक की संख्या की जानकारी देना।	• करोड़ तक की संख्या को पढ़ना, लिखना तथा स्थानीय मान ज्ञात करना। • संख्याओं की तुलना करना। • सात अंकीय और आठ अंकीय सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या का बोध।	• कक्षा–4 में लाख तक की संख्याओं के पढ़ने,लिखने तथा स्थानीय मान को व्यक्त करने हेतु बतायी गयी क्रियाविधि को आगे बढ़ाते हुए इसे स्पष्ट किया जाय। • कक्षा 4 में बतायी गयी क्रियाविधि को विस्तृत करते हुये इसे स्पष्ट किया जाय। • पूर्व कक्षाओं की भांति सात अंकीय और आठ अंकीय सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या का बोध कराएं।	• प्रश्नों के माध्यम से। • प्रश्नों के माध्यम से। • प्रश्न देकर।
जोड़–घटाना, गुणा–भाग की जानकारी एवं व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता की जानकारी देना।	• सात अंकीय संख्याओं तक का जोड़ (स्तम्भ विधि से) • संख्याओं का घटाना। • किसी संख्या में तीन अंकीय संख्या से गुणा करना, गुणनफल 9999999 से अधिक न हो। • आठ अंकीय संख्या में तीन अंकीय संख्या से भाग। • चारों मूल संक्रियाओं पर सरल वार्तिक प्रश्न जो व्यावहारिक एवम् दैनिक जीवन से सम्बन्धित हो।	• पूर्व कक्षों की भांति सात अंकीय संख्याओं तक के जोड़ने की क्रिया विधि बतायी जाएं। • कक्षा 4 में बतायी गयी घटाने की क्रिया विधि की भांति सात अंकीय दो संख्याओं को बताया जाए। • गुणक में आये हुए अंकों के स्थानीय मानों से गुणा कराकर उनका योग कराएं तत्पश्चात् स्तम्भ विधि से गुणा की क्रिया कक्षा 4 में दी गयी विधि से करवायें। • कक्षा–4 में दो अंकीय संख्या से भाग देने को बतायी गयी क्रिया विधि के आधार पर तीन अंकीय संख्या से भी भाग देने की क्रिया विधि स्पष्ट करें। • बच्चों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित जोड़, घटाना, गुणा तथा भाग पर आधारित कथन के रूप में प्रश्न दिये जायँ और उन्हें हल करायें जैसे–रमेश ने 3 मीटर कपड़ा 54.75 रुपये में खरीदा उसे 2 मीटर कपड़ा उसी दर से खरीदने में कुल कितने	• प्रश्न देकर। • प्रश्न के माध्यम से। • प्रश्न देकर। • प्रश्न देकर। • प्रश्न के माध्यम से।

		रुपये देने पडेंगे।	
संख्याओ का 2, 3, 4, 5, 6, 8, 9, 12 तथा 15 से विभाज्यता की जानकारी देना।	• किसी संख्या में 2, 3, 4, 5, 6, 8, 9, 12 तथा 15 से विभाज्यता की जाँच।	• यदि किसी संख्या में इकाई के स्थान पर 0, 2, 4, 6, 8 हो तो दी गयी संख्या 2 से विभाज्य होगी। • यदि किसी संख्या के अंकों का योग 3 से विभाज्य हो तो पूरी संख्या 3 से विभाज्य होगी। • यदि किसी संख्या में इकाई और दहाई के अंकों से बनी संख्या 4 से पूरी–पूरी विभाज्य हो तो वह पूरी संख्या 4 से विभाज्य होगी। • यदि किसी संख्या के इकाई के स्थान पर 0 अथवा 5 हो तो पूरी संख्या 5 से विभाज्य होगी। • यदि कोई संख्या 2 और 3 से विभाज्य है तो वह 6 से विभाज्य होगी। • यदि किसी संख्या में इकाई, दहाई और सैकड़ा के अंकों से बनी संख्या 8 से विभाज्य हो तो पूरी संख्या 8 से विभाज्य होगी। • यदि किसी संख्या के अंकों का योग 9 से विभाज्य हो तो पूरी संख्या 9 से विभाजित होगी। • यदि कोई संख्या 3 और 4 से विभाजित हो तो वह 12 से पूरी–पूरी विभाजित होगी। • यदि कोई संख्या 3 और 5 से विभाजित होती है तो वह 15 से पूरी पूरी विभाजित होगी।	• प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा।
गुणनखण्ड विधि द्वारा महत्तम समापवर्तक तथा लघुतम समापवर्त्य की जानकारी देना।	• दो या तीन संख्याओं का गुणनखण्ड विधि से म0स0 ज्ञात करना (संख्याएँ दो अंक से अधिक की न हों)।	• दो संख्याओं का म0स0 ज्ञात करने के लिए प्रत्येक संख्या का अभाज्य गुणनखण्ड करवाएँ। इसके बाद दोनों के उभयनिष्ठ गुणनखण्डों को छाँट कर म0स0 ज्ञात कराएँ। इसी प्रकार तीन संख्याओं का म0स0 भी अभाज्य गुणनखण्डों की सहायता से निकलवाएँ। • दो संख्याओं का ल0स0 ज्ञात करने	• 4 और 7 का म0स0 तथा 15 और 45 का म0स0 ज्ञात करायें। • 8, 32 और 48 का म0स0 ज्ञात करायें।

	• दो या तीन संख्याओं का ल0स0, गुणनखण्ड विधि से ज्ञात कराना (संख्याएँ दो अंक से अधिक की न हों)। • म0स0 और ल0स0 पर आधारित सामान्य वार्तिक प्रश्न।	के लिए पहले प्रत्येक संख्या के अभाज्य गुणनखण्ड करवाएँ। इसके बाद सबसे अधिक बार आये हुए गुणनखण्ड को उतार लिया जाय और अन्य संख्या में आये हुए वही गुणनखण्ड छोड़ दिये जाँय। इसी प्रकार अन्य गुणनखण्डों को इसी आधार पर उतारा जाय। उतारे हुए गुणनखण्डों का गुणनफल ही ल0स0 होगा। यथा– 12= 2x2x3 16=2x2x2x2 ल0स0 =2x2x2x2x3=48 यहाँ 16 में से 2 सबसे अधिक 4 बार आया है और 12 में 2 दो बार आया है उसे छोड़ दिया गया है। इसी प्रकार 12 में 3 एक बार आया है उसे उतारा गया है क्योंकि 16 में 3 गुणनखण्ड के रूप में नहीं है। इसी प्रकार तीन संख्याओं का ल0स0 अभाज्य गुणनखण्डों की सहायता से निकलवाएँ। • लघुतम समापवर्त्य और महत्तम समापवर्तक पर आधारित दैनिक जीवन से सम्बन्धित सरल प्रश्न देकर हल कराएँ जैसे–एक बाल्टी में 12 लीटर तथा दूसरी बाल्टी में 8 लीटर पानी है। उस बर्तन की अधिक से अधिक धारिता क्या होगी जिससे दोनों बाल्टियों के पानी को पूरा –पूरा निकालकर खाली किया जा सके। • एक मग 2 लीटर धारिता का तथा दूसरा मग 5 लीटर धारिता का है। उस बाल्टी की कम से कम धारिता क्या होगी जो इन दोनों मगों में से प्रत्येक से पूरी–पूरी बार भरी जा सके।	• 8, 12, 15 का ल0स0 ज्ञात कराएँ। • बच्चों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न पूछें जायँ तथा उनसे स्वयं प्रश्न बनाने को भी कहा जाय। • प्रश्न पूछ कर।
भिन्नों की गुणा–भाग की जानकारी कराते हुए उसकी समझ	• किसी भिन्न का पूर्ण संख्या से गुणा करना।	• पहले गुणा का अर्थ स्पष्ट करें इसके बाद किसी भिन्न में पूर्ण संख्या से गुणा को स्पष्ट करें।	• प्रश्न विधि से।

विकसित कराना तथा व्यावहारिक जीवन से जोड़ना।	• किसी भिन्न का भिन्न से गुणा करना। • दो से अधिक भिन्नों का आपस में गुणा करना। • किसी भिन्न का व्युत्क्रम (विलोम)। • किसी भिन्न का पूर्ण संख्या से भाग देना। • किसी भिन्न का भिन्न से भाग देना।	• (क) किसी मिश्रित भिन्न से गुणा करते समय पहले मिश्रित भिन्न को विषम भिन्न में बदलें। • (ख) भिन्नों का आपस में गुणा पहले चित्र की सहायता से स्पष्ट करें तत्पश्चात् एक सर्वमान्य नियम निकलवायें। • पहले दो भिन्नों का आपस में गुणा करवायें। इसके पश्चात् प्राप्त गुणनफल का तीसरी भिन्न से गुणा करवायें। यह क्रिया तब तक करवायें जब तक की अन्तिम भिन्न से गुणा न हो जाय। इसके बाद एक सर्वमान्य नियम निकलवायें। • शिक्षक स्पष्ट करें कि यदि दो भिन्नों का गुणनफल 1 हो तो वे एक दूसरे की व्युत्क्रम कहलाती हैं। जैसे– 3/2 X 2/3= 6/6 =1 अतः 3/2, 2/3 का और 2/3, 3/2 का व्युत्क्रम हैं। • किसी भिन्न को पूर्ण संख्या से भाग देने का अर्थ है, भिन्न को पूर्ण संख्या के बराबर हिस्सों में बाँटना। जैसे 2/3÷2 का अर्थ है 2/3 के दो बराबर हिस्से करना। इसके पश्चात् चित्र के माध्यम से भाग की क्रिया की जाय और बाद में एक सर्वमान्य नियम निकलवाया जाय। • कागज के टुकड़ों को चार भागों में बटवाएं उनमें से तीन भाग लेकर 3/4 को स्पष्ट करें। यहाँ गिनवाकर दिखाएं की 3/4 में 1/4 तीन बार शामिल है। यहा यह भी स्पष्ट करें कि भिन्न से भिन्न में भाग देने पर भाज्क भिन्न के व्युत्क्रम का गुणा भाज्य में करते है। $3/4 \div 1/4 = \dfrac{3/4}{}$	• प्रश्न विधि से। • प्रश्न विधि से। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा।

	• किसी पूर्ण संख्या को भिन्न से भाग देना। • भिन्नों के गुणा भाग पर वार्तिक प्रश्न।	1 / 4 = 3 / 4x 4 / 1 = 3 • पूर्ण संख्या को भिन्न के रूप में लिखें इसके पश्चात् पूर्व सम्बोध के अनुसार हल क्रिया स्पष्ट करें। • बच्चों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न कथन के रूप में दिये जाँय और उन्हें हल करने के लिये प्रोत्साहित किया जाय। जैसे–2/3 लीटर पेट्रोल से एक गाड़ी $4^1/_2$ किमी जाती है। 1 लीटर पेट्रोल से वह कितने किमी जायेगी।	• प्रश्न देकर। • प्रश्न देकर।
दशमलव संख्याओं का व्यवहारिक जीवन में उपयोगिता की बताना।	• दशमलव संख्याओं की तुलना करना और उन्हें आरोही और अवरोही क्रम में रखना। • दशमलव संख्याओं का जोड़। • दशमलव संख्याओं का घटाना। • दशमलव संख्या को भिन्न में बदलना और भिन्न को दशमलव संख्या में बदलना।	• दशमलव संख्याओं में पूर्णांक दिये रहने पर पूर्णांकों के अनुसार छोटे–बड़े का ज्ञान कराये। • पूर्णांक न दिये रहने की स्थिति में दशमलव बिन्दु के दाहिने ओर के बड़े–छोटे और बराबर अंकों के अनुसार छोटा या बड़ा या बराबर होना स्पष्ट किया जाय। तत्पश्चात् पूर्ण संख्याओं की तरह उन्हें आरोही व अवरोही क्रम में रखवाया जाय। • पूर्णांक संख्याओं की तरह दशमलव संख्याओं को भी जोड़वायें अर्थात् इकाई के नीचे इकाई, दहाई के नीचे... तथा दसवाँ के नीचे दसवाँ सौवाँ के नीचे...रखवाकर जोड़वायें। • उपर्युक्त विधि की तरह दशमलव संख्याओं का घटाना भी सिखायें। • 2.5 = 2.5/10 = $^5/_2$ = $2^1/_2$ (दशमलव बिन्दु की संकल्पना के अनुसार) • भिन्न को दशमलव संख्या में बदलते समय हमेशा भिन्न के हर को 10, 100, 1000,....में बदलें तत्पश्चात् दशमलव की संकल्पना के अनुसार उसे दशमलव संख्या में बदलें। जैसें– • $^4/_5$= 4x2/5x2= $^8/_{10}$=0.8	• प्रश्न देकर। • प्रश्न देकर। • प्रश्न देकर। • प्रश्न देकर। • प्रश्न देकर।

	• किसी दशमलव संख्या को 10, 100 तथा 1000 से गुणा करना। • किसी दशमलव संख्या को 10, 100 तथा 1000 से भाग देना। • किसी दशमलव संख्या में दूसरी दशमलव संख्या से गुणा करना। • किसी दशमलव संख्या को दूसरी दशमलव संख्या से भाग देना। • दशमलव संख्या की चारों मूल संक्रियाओं पर वार्तिक प्रश्न।	• $^3/_4$= 3x25/4x25 = $^{75}/_{100}$=0.75 • उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करते हुए एक सर्वमान्य नियम निकवलायें। दशमलव संख्या को 10, 100,1000 से गुणा करने पर दशमलव बिन्दु अपने स्थान से क्रमशः एक दो तथा तीन स्थान दायीं ओर हटकर गुणनफल बन जाता है। जैसे– 2.5678 X 10 = 25.678 2.567 X 100 =256.78 2.5678 X1000=2567.8 • उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट करें तत्पश्चात् एक सर्वमान्य नियम निकलवायें। • छोटी–छोटी दो दशमलव संख्यायें लें। उन्हें भिन्नों में बदलें। भिन्नों की आपस में गुणा करवायें तत्पश्चात् गुणनफल को दशमलव में बदलवायें। इसी तरह कई उदाहरणों द्वारा गुणा की क्रिया को स्पष्ट किया जाय तत्पश्चात् एक सर्वमान्य नियम निकलवायें। • भाजक दशमलव को दशमलव रहित बनवाकर तथा उसी के अनुसार भाज्य दशमलव संख्या में परिवर्तन कराकर दशमलव संख्या में पूर्णांक संख्या से भाग देने की क्रिया विधि से हल करायें। • बच्चों को उनके दैनिक जीवन से सम्बन्धित दशमलव संख्या से युक्त कथन के रूप में प्रश्न दिये जायँ तथा उन्हें हल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।	• 5.0045 X 100 जैसे प्रश्नों को हल करायें। • प्रश्न देकर। • प्रश्न देकर। • प्रश्न की सहायता से। • प्रश्न द्वारा।
प्रतिशत की जानकारी देना	• प्रतिशत की संकल्पना तथा प्रतिशत चिह्न।	• प्रतिशत के शाब्दिक अर्थ को पहले स्पष्ट किया जाय। तत्पश्चात् बताया जाय कि प्रतिशत वह भिन्न है जिसका हर सदैव 100 रहता है। जैसे 2/100, 1/100, 4/100, 15/100,	• प्रश्न द्वारा।

		आदि। 2/100 को 2% तथा 1/100,को 1%, 4/100 को 4% और 15/100 को 15% लिखते है। अर्थात् 2/100=2%, 1/100 =1%,...चिह्न ''%'' प्रतिशत का चिह्न है। इसे स्पष्ट किया जाय।	• प्रश्न द्वारा।
	• किसी भिन्न को प्रतिशत में बदलना तथा प्रतिशत को भिन्न में बदलना।	• दी हुई भिन्न के हर को 100 में परिवर्तित करायें तत्पश्चात् प्रतिशत चिह्न से व्यक्त करायें। प्रतिशत चिह्न द्वारा व्यक्त संख्या को उदाहरण द्वारा भिन्न में व्यक्त किया जाय।	• प्रश्न द्वारा।
	• दशमलव संख्या को प्रतिशत में बदलना तथा प्रतिशत को दशमलव संख्या में बदलना।	• दशमलव संख्या को भिन्न में बदलें तत्पश्चात् भिन्न के हर को 100 में परिवर्तित करके उसे प्रतिशत में व्यक्त करवायें। प्रतिशत को भिन्न में परिवर्तित करायें।	• प्रश्न देकर।
	• किसी राशि का दिया हुआ प्रतिशन ज्ञात करना।	• किसी राशि का प्रतिशत में दिया हुआ कोई हिस्सा ज्ञात करने के लिए पहले दिए हुये प्रतिशत को भिन्न में बदलते है फिर दिए हुए संख्या से भिन्न में गुणा कर देते है। जैसे– 30 का 20%=30 X20/100=6	• 3 रुपये 4 रुपये का कितना प्रतिशत है।
	• एक संख्या, दूसरी संख्या का कितने प्रतिशत है, ज्ञात करना।	• पहले एक संख्या दूसरी संख्या की कितनी है ज्ञात करायें। तत्पश्चात् प्राप्त भिन्न को प्रतिशत में बदलवायें।	• प्रश्न के द्वारा।
	• प्रतिशत पर दैनिक जीवन सम्बन्धी वार्तिक प्रश्न।	• बच्चों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित ऐसे प्रश्न अवश्य हल करायें जो प्रतिशत से सम्बन्धित हों। जैसे– 2550 रुपये का कम्बल 25% की छूट पर बेचा गया। कम्बल कितने रुपये में बेचा गया।	
लाभ–हानि की समझ विकसित करना।	• लाभ–हानि की संकल्पना तथा क्रय मूल्य और विक्रय मूल्य का अर्थ।	• कक्षा के बच्चों से प्रतिक नोट बनवालें। ककड़, गोली, बीज आदि को वस्तुओं के रूप में प्रयोग करें। कुछ बच्चों को दुकानदार और कुछ बच्चों को खरीदार बनाकर वस्तुओं	• प्रश्न के द्वारा।

	• लाभ–हानि पर सरल वार्तिक प्रश्न।	की खरीद और विक्री कराएं। इस क्रिया द्वारा उन्हें लाभ–हानि तथा क्रय मूल्य विक्रय मूल्य का ज्ञान कराएं। • बच्चों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित लाभ–हानि के प्रकरणों को स्पष्ट किया जाय। जैसे एक सिलाई मशीन का विक्रय मूल्य रु0 3200 और क्रय मूल्य रु0 3000 बताओं लाभ हुआ या हानि।	• प्रश्न के द्वारा।
ऐकिक नियम की जानकारी देना।	• दैनिक जीवन से सम्बन्धित तथा ऐकिक नियम पर आधारित वार्तिक प्रश्नों का हल।	• ऐकिक नियम को स्पष्ट करते हुए बच्चों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित तथा ऐकिक नियम पर आधारित प्रश्न अवश्य हल करवायें। जैसे–प्राप्त पाँच कॉपी 120 रुपये में खरीदी। 6 कॉपी खरीदने में उसे कुल कितने रुपये देने पड़ेंगे?	• प्रश्न के द्वारा।
साधारण ब्याज की जानकारी देना एवं व्यवहारिक जीवन में उसकी उपयोगिता को बताना।	• साधारण ब्याज का अर्थ। • दिये हुए ब्याज दर से किसी धनराशि का दो या तीन वर्ष का ब्याज ज्ञात करना। • मूलधन, ब्याजदर तथा समय दिये रहने पर मिश्रधन ज्ञात	• बच्चों द्वारा नाटक कराकर ब्याज का अर्थ स्पष्ट करें, एक बच्चे को बैंक मैनेजर तथा दूसरे बच्चे को ऋण लेने वाला आदमी बनाकर यह क्रिया करायें। • शिक्षक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करें। जैसे रु0 200 का 5% प्रतिवर्ष की दर से 2 वर्ष का ब्याज कितना होगा। • सर्वप्रथम मिश्रधन का अर्थ स्पष्ट करें इसके बाद इस सम्बोध–को स्पष्ट करें।	• प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा।
ज्यामिति किरण तथा कोण की जानकारी देना।	• किरण एवं कोण की संकल्पना तथा कोण के अंग (कोण का पढ़ना और चिह्न) ।	• सूर्य, टार्च आदि की किरणों की सहायता से स्पष्ट करें कि किरण एक प्रारम्भिक बिन्दु से चलकर असीमित दूरी तक जाती है। इस छोर को तीर से व्यक्त करते हैं। (→) दो किरणों की सहायता से (जो संपाती न हों) कोण की अवधारणा स्पष्ट करें तथा चित्र की सहायता से शीर्ष तथा भुजाओं को बतायें। • कोण के लिए संकेत ($\angle$) बतायें	• प्रश्न द्वारा। • कक्षा–कक्ष में बनने वाले विभिन्न कोणों को चिन्हित करवायें।

	• चाँदे के बाहरी एवं भीतरी पैमाने से कोण नापना। • कोण के प्रकार (न्यूनकोण, समकोण अधिक कोण, ऋजु कोण तथा वृहत कोण) और इसके गुण। • चाँदे की मदद से दी हुई नाप का कोण खींचना।	तथा कोण का नाम एक अक्षर तथा तीन अक्षरो से बतायें। • चाँदे की सहायता से बच्चों को इस सम्बोध का ज्ञान कराया जाय (चाँदे के आधार के मध्य बिन्दु को कोण के शीर्ष पर रखवाकर, कोण को जो भुजा चाँदे की आधार रेखा के नीचे है, उसी छोर से चाँदे को पढ़ा जाय। • कोण से सम्बन्धित चार्ट या मॉडल प्रस्तुत करके न्यूनकोण, समकोण अधिक कोण, ऋजुकोण (सरल कोण) तथा वृहतकोण की जानकारी दी जाय। (दो सूईयाँ परकार की सहायता से बच्चों द्वारा विभिन्न प्रकार के कोणों का प्रदर्शन करवाये) • शिक्षक गणित किट की सहायता से श्यामपट्ट पर कोण बनाना बताएं फिर बच्चों से अपनी अपनी कापियों पर चाँदे की सहायता से विभिन्न नापों के कोण बनवायें।	• कोण से सम्बन्धित विभिन्न आकृतियाँ श्यामपट पर बनाकर बच्चों को किट वाले चाँदे से कोण को नपवायें। • प्रश्न देकर • दो सुइया परकार के माध्यम से भी प्रदर्शन करने को कहें। • प्रश्न देकर।
त्रिभुज की जानकारी देना।	• त्रिभुज की विशेषतायें। • भुजाओं तथा कोणों के अनुसार त्रिभुज के प्रकार। • त्रिभुज के तीनों अन्तः कोणों का योग 180^0 होता है का सत्यापन।	• विभिन्न प्रकार की त्रिभुजीय आकृतियाँ बनवाकर उनकी भुजाओं तथा कोणों को नपवायें। तत्पश्चात् दो भुजाओं के योग की तुलना तीसरी भुजा से, दो भुजाओं का अन्तर की तुलना तीसरी भुजा से, तथा तीनों कोणों का योग ज्ञात करवायें। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट करें कि किसी त्रिभुज की तीन भुजायें, तीन शीर्ष तथा तीन कोण होते हैं। • चित्रों की सहायता से स्पष्ट करें। • बच्चों से कई तरह के त्रिभुज बनवायें तथा उनके कोणों को नपवायें। तीनों कोणों का योग निकलवायें।	• विभिन्न नापें देकर त्रिभुज के बनने या न बनने की स्थिति का पता लगवायें। • प्रश्न के माध्यम से • त्रिभुज के दो कोणों को देकर तीसरे कोण की माप ज्ञात करायें। •
वृत्त की पूर्ण	• ज्यामितीय आकृतियों	• गणित किट में रखी ज्यामितीय	• परिवेश में

जानकारी देना।	में वृत्त की पहचान और परिभाषा। • वृत्त के अंगों–(केन्द्र, त्रिज्या, व्यास चाप तथा परिधि की जानकारी। • दी हुई त्रिज्या का वृत्त पटरी और परकार की सहायता से खींचना। • व्यास एवं त्रिज्या में सम्बन्ध।	आकृतियों को पहचनवाते हुए वृत्त की पहचान करायें, परिवेशीय वस्तुओं की सहायता से भी वृत्त को पहचनवायें इसके पश्चात् वृत्त की परिभाषा इस प्रकार दें–किसी निश्चित बिन्दु से समान दूरी पर स्थित बिन्दुओं से बनी आकृति को वृत्त कहते हैं। • वृत्त की सहायता से उसके अंगों की जानकारी दें। • शिक्षक स्वयं गणित किट की सहायता से श्यामपट पर उदाहरण प्रस्तुत करते हुए को स्पष्ट करें। • बच्चों को भिन्न–भिन्न त्रिज्या वाले वृत्त बनाने को कहें। व्यास और त्रिज्या को नपवाकर तुलना करवायें।	उपलब्ध विभिन्न आकृतियों में से वृत्ताकार आकृतियाँ छँटवाएँ। • • वृत्त की सहायता से उसके अंगों के बारे में पूछें। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा जैसे एक वृत्त का व्यास 14 सेमी है उसकी त्रिज्या बताओ
क्षेत्रफल की जानकारी एवं व्यावहारिक में उसकी उपयोगिता की समझ विकसित करना।	• क्षेत्रफल की संकल्पना तथा इसकी इकाई। • आयत का क्षेत्रफल निकालना। • वर्ग का क्षेत्रफल। • क्षेत्रफल सम्बन्धी वार्तिक प्रश्न।	• परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं के तलों की सहायता से क्षेत्रफल स्पष्ट किया जाय। क्षेत्रफल की इकाई वर्ग एकक होती है इसे भी स्पष्ट किया जाय (क्षेत्रफल नापने की इकाई स्पष्ट करते हुए) • पूर्णांक में लम्बाई तथा चौड़ाई वाले आयत को लेकर क्षेत्रफल नापने की इकाई के माध्यम से, आयत की माप कराकर क्षेत्रफल ज्ञात करायें। • आयत का क्षेत्रफल ज्ञात करने की क्रिया के अनुसार वर्ग के क्षेत्रफल को स्पष्ट करें। • वार्तित प्रश्नों को हल कराने के पहले उन्हें आयत तथा वर्गों के क्षेत्रफल निकालने का प्राप्त अभ्यास करा देना चाहिए। बच्चे आयत में लम्बाई एवं चौड़ाई के मात्रक समान कर लें तथा प्रत्येक माप को इकाई के साथ लिखें। • आयत तथा वर्ग के क्षेत्रफल से सम्बन्धित प्रश्न, सूत्रों की सहायता से अवश्य हल करायें जाँय।	• प्रश्न द्वारा जाँच करें। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा
आयतन/ धारिता	• आयतन/धारिता की	• किताब, कमरा, पेंसिल, गिलास आदि	• प्रश्न के द्वारा।

की जानकारी।	संकल्पना तथा इसकी इकाई। • घन तथा घनाभ का आयतन, सूत्र की सहायता से ज्ञात करना।	की सहायता से आयतन तथा धारिता को स्पष्ट किया जाय। इसके बाद स्पष्ट किया जाय कि आयतन/धारिता की इकाई, घन एकक होती है। (आयतन नापने की इकाई को प्रस्तुत करते हुए) • घन तथा घनाभ का आयतन ज्ञात करने का सूत्र बताकर, घन तथा घनाभाकार की वस्तुओं का आयतन निकलवायें।	• प्रश्न के द्वारा।
रेलवे और बस समय सारिणी का पढ़ना और प्रयोग करने की जानकारी देना।	• रेलवे समय सारिणी से किसी–स्टेशन पर किसी ट्रेन के पहुँचने और छुटने का समय पढ़ना। • रेलवे समय सारिणी से एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक की दूरी और समय ज्ञात करना। • बस स्टेशन पर सूचना पट से किसी बस के छूटने का समय ज्ञात करना तथा दूरी और किराया पढ़ना आदि।	• रेलवे समय सारणी को बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करके इस सम्बोध का ज्ञान कराया जाय। • रेलवे समय सारणी के माध्यम से इसे स्पष्ट किया जाय। • स्वयं किसी बस स्टेशन से बसों के छूटने और पहुँचने आदि से सम्बन्धित सारिणी बनाकर या बच्चों को किसी बस स्टेशन पर ले जाकर इस सम्बोध का बोध कराया जाय।	• प्रश्न के द्वारा। • प्रश्न द्वारा। • प्रश्न द्वारा।
आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं निरूपण की जानकारी देना।	• विभिन्न प्रकार के आँकड़ों जैसे कक्षा के बच्चों के प्राप्तांक उनके भार, लम्बाई तथा पूरे दिन को विभिन्न क्रिया कलाप में बाँटना, इन आंकड़ों को सारिणी रूप में, दण्ड आरेख और चित्र आरेख (पिक्टो ग्राफ) में प्रस्तुत करना। • आँकडों की बनी सारणी से निष्कर्ष निकालना।	• बच्चों के प्राप्तांकों का सारिणी बनवायें तथा ग्राफ खिंचवायें तथा उसकी व्याख्या करवायें। • आँकड़ों से बनी सारणी की व्याख्या करवाएँ	• कक्षा 5 के कई वर्षों के छात्रों की संख्या का ग्राफ बनवायें तथा उसकी व्याख्या करवायें। • प्रश्न द्वारा।

i;koj.kh; v/;;u

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कमेटी ने वर्ष 1975 में विद्यालयों में 10 वर्ष के पाठ्यचर्या हेतु एक अभिलेख प्रस्तुत किया। जिसमें प्राथमिक स्तर पर पर्यावरणीय अध्ययन के रूप में एक विषय के पठन–पाठन की बात रखी गई। वर्ष 1986 में लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन0सी0एफ0) 1988 में भी प्राथमिक स्तर पर पर्यावरणीय अध्ययन विषय के पठन–पाठन पर जोर देने की बात रखी गई। उसके पश्चात् एन0सी0एफ0–2000 में स्पष्ट उल्लेख था कि प्राथमिक स्तर पर कक्षा 3–5 में सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान विषय को पृथक विषयों के रूप में न रखकर समेकित रूप में 'पर्यावरणीय अध्ययन' नामक एक एकल विषय के रूप में रखने की बात कर जोर दिया गया। वर्तमान में एन0सी0एफ0–2005 भी इन्हीं बिन्दुओं पर बल देता है। इन सभी का मूल उद्देश्य है बच्चों के बस्ते के बोझ को कम करना तथा बच्चों में रटने की प्रवृत्ति को समाप्त करके अपने आस–पास के पर्यावरण की समझ विकसित करना।

सर्वविदित है बच्चों को अपने आस–पास के परिवेश से विशेष लगाव होता है। वे परिवेशीय जीव–जन्तुओं एवं वस्तुओं को जिज्ञासु प्रवृत्ति से देखते हैं। उसके बारे में सब कुछ जानने के लिए सदैव उत्सुक रहते है। इस अवस्था में बच्चे अपने परिवार से जुड़े रहते है दादा–दादी, माता–पिता, भाई–बहन से विशेष स्नेंह एवं दुलार रखते हैं। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी को बढ़ते हुए देखना, फूलों को खिलते हुए देखकर खुश होना, तितलियों के पीछे भागना, विभिन्न प्रकार के सुगन्धों को महसूस करना, पेड़ों पर चढ़ना, झूला झूलना उनके प्रतिदिन के क्रियाकलाप होते है। अपने आस–पास के परिवेश में देखने पर बच्चों के मन में अपने आप जिज्ञासा उठने लगती है– चिड़ियाँ कैसे उड़ती है, हम क्यों नहीं उड़ पाते हैं? पेड़–पौधे कैसे बड़े होते है। पेड़ों में फल कैसे लगते हैं? गुब्बारा ऊपर ही क्यों उठता है? पेड़ों के पत्ते क्यों हिलते हैं आदि अनेकों प्रश्न अनायास ही उनके मन में उठने लगते हैं यदि इस उम्र में बच्चों की जिज्ञासा का समाधान नहीं किया जाता है तो इस विषय से उनका रूझान खत्म हो जाता है। आवश्यकता है बच्चों के मन में उठने वाले प्रश्नों का हल किया जाना। ध्यान देने की बात है कि जितने प्रश्न एवं जिज्ञासाएँ बाल मन में उठती है बड़ों के मन में उतनी नहीं उठती हैं। यदि बचपन से ही बच्चों के मन में उठने वाले स्वाभाविक एवं मूल प्रश्नों के जबाव मिलने लगतें है तो आगे चलकर उनमें खोज–बीन करने की प्रवृत्ति विकसित होती है। यही प्रवृत्ति उनमें ज्ञान का स्वयं निर्माण करने की क्षमता विकसित करती है।

बच्चों की इन्हीं स्वाभाविक मूल प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए एन0सी0एफ0–2005 में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन विषय के माध्यम से उन्हें अपने परिवेश को भली–भाँति जानने, समझने का पूरा–पूरा अवसर दिया गया है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों को विज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र को विषयवार न रखकर विज्ञान व सामाजिक अध्ययन विषय को समेकित रूप में ''पर्यावरणीय अध्ययन'' विषय के रूप में रखा गया है।

पर्यावरणीय अध्ययन में विषयवस्तु का संकलन करते समय ध्यान रखा गया है कि बच्चों के आस–पास दिखने व महसूस करने वाली पठन–सामग्री रखी जाय जो उनके मन में उठने वाले मूलभूत प्रश्नों का समाधान करने में सहायक हो, जैसे– घर परिवार, पास–पड़ोस, बाग–बागीचा, पशु–पक्षी, फूल–पत्ती, तालाब आदि। पर्यावरणीय अध्ययन विषय के पाठ्यक्रम में इन्हीं बिन्दुओं को ध्यान में रखकर विषयवस्तु विकसित की गई है।

i;koj.kh; v/;;u fo"k; dh vko';drk

प्राथमिक स्तर पर विभिन्न विषयों यथा विज्ञान, भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र विषयों का शिक्षण किए जाने पर बच्चे सभी विषयों को समेकित रूप से जोड़कर नहीं समझ पाते हैं तथा इन विषयों में विषयवस्तु समाहित की जाती है उनकी वास्तविक दुनिया से परे होती है।

आस–पास के परिवेश से सम्बन्धित सामान्य जानकारी की विषयवस्तु को पर्यावरणीय अध्ययन विषय में सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान के समेकित रूप में प्रस्तुत किए जाने से बच्चों में समस्त बिन्दुओं को एक–दूसरे के साथ जोड़ कर उसकी समझ विकसित होगी।

i;koj.kh; v/;;u dk mnns';

- बच्चों को उनके पर्यावरण से परिचित कराना।
- बच्चों में पर्यावरण संरक्षण के महत्व की समझ विकसित करना।
- प्राकृतिक पर्यावरण के विषय में बच्चों की उत्सुकता एवं रचनात्मकता को पोषित करना।
- बच्चों में स्वयं को एवं अपने आस–पास की परिवेशीय वस्तुओं एवं जीव–जन्तुओं को समझने की योग्यता विकसित करना।
- बच्चों में परिवार के सदस्यों, बड़े–बुजुर्गों, अपने पास–पड़ोस के लोगों तथा साथियों के साथ शिष्टाचार एवं अच्छा व्यवहार करने की आदत का विकास करना।
- बच्चों में आस–पास पाए जाने वाले पशु–पक्षियों के प्रति दया–भाव, उनके खान–पान एवं उनकी देख–भाल करने की भावना का विकास करना।
- बच्चों को पेड़–पौधों की देखभाल करने हेतु प्रेरित करना।
- बच्चों में मानव, पशु–पक्षियों एवं पेड़–पौधों के बीच के अन्तर्सम्बन्ध की समझ विकसित करना एवं उनके महत्व से अवगत कराना।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति उनकी क्या–क्या जिम्मेदारियाँ है इससे परिचित कराना।
- मानव जीवन, पशु–पक्षी एवं पेड़–पौधों हेतु भोजन में क्या–क्या आवश्यक है इससे अवगत कराना।
- पशु–पक्षीयों के घर, आवास, रहन–सहन एवं खान–पान की समझ विकसित करना।
- यातायात एवं संचार के साधनों के प्रकार एवं उनके महत्व से परिचित कराना।
- पर्यावरण प्रदूषण रोकने के उपायों से परिचित कराना।
- पर्यावरण–संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी की भावना का विकास करना।
- व्यक्तिगत एवं परिवेशीय स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करना।
- जीवनोपयोगी वस्तुओं के निर्माण की प्रक्रिया से अवगत कराना।
- कृषि से सम्बन्धित सामान्य जानकारियाँ देना।

iBu&lkexh

पाठ्यक्रम पूर्णतः बालकेन्द्रित है जिससे सामाजिक विषय, विज्ञान एवं पर्यावरण की सामान्य जानकारियों की समझ बच्चों को भलीभाँति कराई जा सके। कक्षा 3–5 की विषयवस्तु मुख्यः निम्नवत् बिन्दुओं पर आधारित है–

1. परिवार एवं आस–पड़ोस –
    - (क) आपसी सम्बन्ध
    - (ख) हमारे –पशु–पक्षी
    - (ग) पेड़–पौधे
    - (घ) हमारे खेल एवं क्रियाकलाप
2. हमारा भोजन
3. आवास

4. जल
5. यातायात के साधन
6. जीवनोपयोगी वस्तुओं का निर्माण एवं महत्व

पाठ्यक्रम विकास में उपर्युक्त समस्त बिन्दुओं की विषय–वस्तु

कक्षा 3–5 में कक्षावार स्तर, क्रमबद्धता एवं निरन्तरता को ध्यान में रखकर विकसित की गई है। पठनसामग्री के विकास में विषयवस्तु के चयन एवं उनसे सम्बधित क्रियाकलाप इस प्रकार के रखे गये हैं जिनके माध्यम से बच्चे स्वयं को एवं अपने आस–पास की दुनिया को सूक्ष्मता एवं गहराई से समझ सकें।

उदाहरण के लिए 'हमारा भोजन' शीर्षक की विषयवस्तु को कक्षा 3, 4 एवं 5 में क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है। कक्षा 3 में भोजन के रूप हम क्या खाते हैं तथा पशु–पक्षी भोजन के रूप में क्या–क्या ग्रहण करते हैं। कक्षा 4 में हमें भोजन कहाँ से एवं किसके द्वारा प्राप्त होता है। भोजन में विभिन्न प्रकार के अनाजों जैसे– गेहूँ, धान, दाल, ज्वार, बाजरा आदि कहाँ, किसके द्वारा उगाया जाता है। इनसे सम्बन्धित पेड़–पौधे कौन कौन से होते हैं। बच्चों को उनकी पहचान कराना। इसके अतिरिक्त अनाज से भोजन किस प्रकार हम तक पहुँचता है? इन बातों को भी समावेशित किया गया है। इसी प्रकार कक्षा 5 में हमारा भोजन में विषय सामग्री रखी जा रही है। इन्हें उगाते समय किसान किस–किस प्रकार की परेशानियों का सामना करते है। हमारे देश में कौन–कौन हैं जिन्हें प्रतिदिन का भोजन भी नहीं मिल पाता है।

fØ;kdyki

पर्यावरणीय अध्ययन विषय पूर्णतः व्यावहारिक है। इसमें विषयवस्तु आस–पास के परिवेश से सम्बन्धित होती है। बच्चों में पठन–सामग्री का प्रस्तुतीकरण एवं शिक्षण अधिगम शिक्षण के माध्यम से किया गया।

बच्चों को अपने परिवेश का वृहत अनुभव होता है। बाग–बगीचे में खेलना, वहाँ विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षियों के क्रियाकलापों का अवलोकन करना, चिड़ियों के बच्चों को दाना खिलाना, चूहे के बिल में चूहों का आना–जाना, चीटियों का पंक्ति बनाकर कतार में चलना आदि। इन समस्त बिन्दुओं के विषय में बच्चे घर से ही अनुभव प्राप्त करके आते हैं। पर्यावरणीय अध्ययन विषय का अधिगम करते समय शिक्षकों को ध्यान रखना चाहिए कि वे किसी भी शीर्षक का शिक्षण करने से पूर्व बच्चों के अपने अनुभव को अवश्य शामिल करें तथा उनके प्रतिदिन के क्रियाकलापों को ही शिक्षण अधिगम का हिस्सा बनाएं। बच्चों से किसी भी विषय पर वार्तालाप, चर्चा–परिचर्चा करना अथवा बातचीत करना बहुत आवश्यक है। उदाहरण के लिए 'परिवार एवं आस–पड़ोस' विषय के शिक्षण के दौरान आप बच्चों से बातचीत कर सकते हैं– आपके घर में कौन–कौन रहते हैं? आपके कितने भाई बहन है ? आप किसके–किसके साथ खेलते हैं ? इसके साथ ही बच्चों से उनके आस–पड़ोस में रहने वाले लोगों तथा उनके साथ उनके परिवार के व्यवहार व सम्बन्ध पर बातचीत करें तथा बच्चों को परिवार में सदस्यों, बड़े–बुजुर्गों, नाते–रिश्तेदार, दोस्तों, सहपाठियों एवं पास–पड़ोस में रहने वाले लोगों के साथ शिष्टाचार से रहने, अच्छा व्यवहार करने एवं अभिभादन करने की समझ एवं आदतों का विकास करें।

बच्चों में पर्यावरणीय विषयों का सम्बन्धित विषय के अनुरूप परिवेश में ले जाकर भ्रमण कराया जाना आवश्यक हैं। भ्रमण के दौरान बच्चे विषयवस्तु से सम्बन्धित वस्तुओं का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन एवं सूक्षमता से निरीक्षण करना सीखते है। अवलोकन एवं निरीक्षण करने से बच्चों में विषयवस्तु की अच्छी समझ विकसित होती है भ्रमण के द्वारा पेड़–पौधों की उनकी विशेषता के आधार पर पहचान करना सीखते हैं। बच्चे प्रत्यक्ष देखी गई वस्तुओं का समूहीकरण, वर्गीकरण, सूची बनाना स्वयं ही सीख जाते हैं। इस प्रकार कहां जा सकता है कि भ्रमण, अवलोकन निरीक्षण, चर्चा

परिचर्चा, वार्तालाप, प्रोजेक्ट कार्य खेल तथा विभिन्न प्रकार की ही गतिविधियाँ पर्यावरणीय अध्ययन विषय के शिक्षण के तौर–तरीके हैं।

eY;kadu

''पर्यावरणीय अध्ययन'' विषय पूर्णतः व्यावहारिक हैं। इसमें बच्चे स्वयं अवलोकन करके, अनुभवों के आधार पर, स्वयं करके सीखते हैं। मूल्यांकन मूलतः बच्चों की विभिन्न गतिविधियों, अनुभवों एवं कार्यकलापों से सीखने की स्थिति का किया जाना है।

मूल्यांकन बच्चे की क्षमता, स्तर और परिवेश को ध्यान में रखते हुए उसे एक निश्चित स्तर पर पहुँचाने का साधन है। शैक्षिक प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा बच्चे के ज्ञान, समझ, क्षमता और प्रदर्शन को आंककर सर्वांगीण विकास के सम्बन्ध में रचनात्मक प्रतिपुष्टि (Feed back) प्राप्त करना है। ''पर्यावर्णीय अध्ययन'' विषय का मूल्यांकन का तौर–तरीका बिन्दुवार निम्नवत् हो सकता है–

- बच्चों के व्यक्तिगत कार्यों का अवलोकन के आधार पर।
- बच्चों द्वारा समूह में कार्य करते समय सीखने और व्यक्तित्व के अन्य पक्षों का मूल्यांकन करके।
- बच्चे द्वारा स्वयं के सीखने तथा ज्ञान, कौशल, व्यवहार आदि में प्रगति का मूल्यांकन करके।
- बच्चों द्वारा विभिन्न कार्यों यथा– भ्रमण, गतिविधियों एवं क्रियाकलापों में प्रतिभागिता के आधार पर।
- प्रोजेक्ट कार्यों में बच्चों की संलग्नता एवं समझ को देखकर।
- बच्चों द्वारा वार्तालाप, मौखिक अभिव्यक्ति एवं समूह चर्चा का अवलोकन करके।
- बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों से उनकी कल्पनाशीलता एवं समझ का आकलन करके।
- बच्चों द्वारा समझे गए एवं सीखे ज्ञान को व्यवहार में अपनाने का आकलन करके।

i;kZoj.kh; v/;;u

çkFkfed Lrjh; ikB~;Øe leh{kk

एक रिपोर्ट विद्यालयों में बेसिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा उत्तर प्रदेश शासन की अध्यक्षता में दिनांक 23.02.2013 को राज्य परियोजना कार्यालय में बैठक में कक्षा 1–5 तक के पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण करने का निर्णय लिया गया।

उपर्युक्त बैठक के अनुपालन में दिनांक 10.04.2013 से 18.04.2013, दिनांक 22.04.2013 से 27.04.2013 दिनांक 29.04.2013 से 03.05.2013 तक राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद में बैठक आयोजित की गई। कार्यशाला में एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली के प्रोफेसर, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद के प्रोफेसर्स, मनोविज्ञानशाला, इलाहाबाद के विशेषज्ञ, राज्य शिक्षा संस्थान, उ0प्र0, इलाहाबाद के विशेषज्ञ, आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, इलाहाबाद एवं परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं ने समय–समय पर प्रतिभाग किया गया।

ikB~;Øe leh{kk dh fjiksVZ fuEuor~ gS&

- पाठ्यक्रम समीक्षा में एन0सी0एफ0–2005, आर0टी0ई0–2009 एवं एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा विकसित पाठ्यक्रम को आधार माना गया है।
- समीक्षा में एन0सी0एफ0–2005 में सुझाए गए मार्गदर्शक सिद्धान्तों शिक्षा को जीवन से जोड़ने, पढ़ाई को रटने की प्रक्रिया से मुक्त बनाने एवं बस्ते के बोझ को कम करने पर बल दिया गया है।
- हमारे समूह द्वारा प्राथमिक स्तरीय सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान विषय की समीक्षा की गई है– जिसमें पूर्व में प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में निम्नवत् व्यावस्था थी–

  सामाजिक अध्ययन– कक्षा 1, 2, 3, 4, 5
  पर्यावरणीय अध्ययन– कक्षा 3, 4 एवं 5
  विज्ञान– कक्षा 3, 4 एवं 5

उपर्युक्त विषय के पाठ्यक्रम समीक्षा में वर्तमान में सर्व सहमति से निर्णय लिया गया कि प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन, पर्यावरणीय अध्ययन एवं विज्ञान विषय का पाठ्यक्रम पृथक–पृथक न विकसित करके समेकित रूप में ''पर्यावरणीय अध्ययन'' विषय के नाम से विकसित किया जाए। इस सन्दर्भ के निर्णय लेकर निम्नवत् पाठ्यक्रम विकसित किया गया है–

i;kZoj.kh; v/;;u

कक्षा 3, 4 एवं 5 उपर्युक्त कक्षा 3, 4 एवं 5 के पर्यावरणीय अध्ययन विषयों के पाठ्यक्रम में पूर्व में विकसित प्राथमिक स्तरीय सामाजिक अध्ययन, विज्ञान एवं पर्यावरण अध्ययन विषयों के पाठ्यक्रम के महत्वपूर्ण पठन–सामग्री को भी रखा गया है। इसमें से उन विषयवस्तु को हटाया गया है जो रटने पर बल देती हैं तथा अनावश्यक रूप से बच्चों के बस्ते का बोझ बढ़ाती हैं।

d{kk&3

mnns';	lEcks/k	fØ;kdyki	eY;kadu
• पारिवारिक सदस्यों, मित्रों तथा पड़ोसियों के प्रति अच्छा व्यवहार करने की समझ विकसित करना।	gekjk ifjokj • परिवार एवं उसके सदस्यों में आपसी सम्बन्ध तथा मुखिया के कार्य।	• परिवार के सभी सदस्यों के आपसी सहयोग व व्यवहार के बारे में बच्चों के अनुभवों के आधार पर बातचीत करें, जैसे– o आपके साथ घर पर कौन–कौन रहते हैं ? o आप कितने भाई–बहन हैं? o आप किसके साथ खेलते हैं? o क्या आपके दादा–दादी आपके साथ रहते हैं ? o आपके घर में सबसे बड़ा कौन है? वे क्या करते हैं ?	• बच्चों के मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • बच्चों से परिवार से सम्बन्धित चित्र बनवाकर तथा उस पर चर्चा–परिचर्चा द्वारा। • बच्चों के अनुभव को सुनकर।
	• परिवार के सभी सदस्यों का आपस में मिल–जुलकर रहना, बातचीत करना, एक–दूसरे की देखभाल करना, साथ में भोजन करना, घूमना–फिरना, त्योहार मनाना, बचत करने का गुण।	• परिवार में मनाए जाने वाले विभिन्न त्योहारों व भ्रमणों पर बच्चों को अपने अनुभवों को व्यक्त करने का अवसर दें। • किसी त्योहार पर कविता सुनना, कुछ पंक्तियाँ लिखवाना, त्योहार से सम्बन्धित चित्र बनवाना।	• कविता को सुनकर, त्योहार का संक्षिप्त वर्णन तथा उनके द्वारा बनाये गये चित्र का मूल्यांकन।
	• परिवार में बालक–बालिका महिला–पुरुष के साथ उचित व्यवहार।		
• शिष्टाचार सम्बन्धी आदतों का विकास करना।	• बड़ें–बुजुर्गों के प्रति सम्मान व सेवा भाव तथा विशिष्ट आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति सद्व्यवहार एवं उनकी सहायता।	• बच्चों से बड़े–बुजुर्गों के प्रति सम्मान व सेवा–भाव तथा विशिष्ट आवश्यकता वाले व्यक्तियों के बारे में उनके अनुभवों के आधार पर बातचीत करें जैसे– o किन–किन कार्यों में आप अपने घर के बड़े–बुजुर्गों की मदद करते है? o क्या आप ऐसे व्यक्ति को जानते है जिसे कम सुनाई पड़ता है? o क्या आपका कोई ऐसा दोस्त है जिसे कम दिखाई या सुनाई पड़ता है ? o आप उनकी मदद कैसे करते हैं ?	• बड़े–बुजुर्गों एवं विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों से सम्बन्धित बातचीत करके उनकी अभिव्यक्ति के आधार पर।
	• पास–पड़ोस के लोगों तथा	• बच्चों से उनके पास–पड़ोस में रहने वाले	• बच्चे के अपने सहपाठी

	मित्रों के साथ हमारा अच्छा व्यवहार।	लोगों तथा उनके साथ उनके परिवार के व्यवहार व सम्बन्ध पर बातचीत करें तथा अच्छे पड़ोसी बनने की समझ बनाने में सहायता करें जैसे– घर आने पर उनका अभिवादन करना, उनसे अच्छे से बात–चीत करना आदि शिष्टाचार से सम्बन्धित बातों को अभिव्यक्त करने का असवर दें।	एवं शिक्षकों के साथ करने वाले व्यवहार का अवलोकन करना । • बच्चों के उठने–बैठने, अन्य बच्चों के साथ बातचीत करने, खेल के मैदान एवं मिड–डे–मील के समय बच्चों के व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन।
• स्थानीय पेड़– पौधों की पहचान व उनकी उपयोगिता से परिचित कराना।	gekjk ifjos'k • स्थानीय पेड़–पौधों की पहचान एवं हमारे जीवन में उनकी उपयोगिता।	• आस–पास के परिवेश में भ्रमण कराकर विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधों की पहचान कराएं 'तथा उनकी पत्तियों को एकत्र कराएं। पत्तियों के रंग, आकार, समानता एवं विभिन्नता के आधार पर वर्गीकरण कराएं। • विभिन्न पेड़–पौधों की उपयोगिता के बारे में बच्चों के अनुभवों को साझा कराएं।	• भ्रमण के दौरान पेड़–पौधों को पहचानने के आधार पर। • पेड़–पौधों की उपयोगिता से सम्बन्धित चर्चा के उपरान्त लिखित अभिव्यक्ति के द्वारा।
		• प्रोजेक्ट कार्य के रूप में विद्यालय या आस–पास पेड़–पौधें लगवाएं व उनकी देख–भाल करने को कहें।	• प्रोजेक्ट कार्य का मूल्यांकन करके।
	• पेड़–पौधों की देखभाल।	• पेड़–पौधों की देखभाल, बच्चे या उनके परिवार के लोग कैसे करते हैं? का अनुभव बच्चों से व्यक्त कराना। • पेड़–पौधों से हमें क्या–क्या मिलता है? की जानकारी बच्चों से साझा कराना। • बच्चों से उनको अच्छे लगने वाले पेड़–पौधों या उनके फूलों का चित्र बनवाना।	• पेड़–पौधों के देखभाल से सम्बन्धित बच्चों के अनुभव के आधार पर। • बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों से उनकी कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक प्रवृत्ति का मूल्यांकन।
	• स्थानीय परिवेश की विभिन्न प्रकार की पत्तियों का परिचय।	• विभिन्न प्रकार की पत्तियों के बारे में बच्चों से जानकारी प्राप्त करना उन्हें एकत्र कराना उनसे पूछना कि वे किन–किन अवसरों पर पत्तियों से घर	• बच्चों के मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर।

• बच्चों में पशु–पक्षियों की सुरक्षा व उनकी देखभाल करने की आदत विकसित करना।	• स्थानीय पशु–पक्षियों की पहचान एवं देख–भाल। • हमारे पालतू पशु–पक्षी भी हमारे परिवार के अंग।	सजाते है? • बच्चों से उनके परिवेश में पाए जाने वाले विभिन्न पशु–पक्षियों की पहचान, उनके खान–पान एवं उनके वास–स्थान (आवास) के सम्बन्ध में बात का अवसर दे एवं सूची बनवाएं।	• बच्चों द्वारा पशु– पक्षियी को सही पहचान कर वर्गीकरण करने की क्षमता द्वारा।
	• छोटे–बड़े, रेंगने वाले, चलने वाले, कूदने वाले, उड़ने वाले जीव–जन्तुओं का वर्गीकरण।	• बच्चे से परिवेशीय पशु–पक्षियों का वर्गीकरण कराना, जैसे– छोटे–बड़े, रेंगने वाले, कूदने वाले चलने वाले, उड़ने वाले आदि। • पशु–पक्षियों की देखभाल एवं उसकी सुरक्षा पर बच्चों से बातचीत करते हुए उनकी देख–भाल के तरीके बताएं तथा उनसे प्रश्न पूछें जैसे– तुम पालतू पशु–पक्षियों की देखभाल करते हों ? • यदि हो तो कैसे– • बच्चो से स्थानीय एवं परिचित पशु या पक्षी का चित्र बनवाएं। • बच्चों को विभिन्न पशु–पक्षियों की बोली का अभिनय कराएं।	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • चित्र एवं अभिनय को देखकर मूल्यांकन । • बच्चों की अभिव्यक्ति के आधार पर।
• मनुष्य, पेड़–पौधों एवं पशु–पक्षियों की परस्पर निर्भरता की समझ विकसित करना।	• मनुष्य, पेड़–पौधों एवं पशु–पक्षियों की परस्पर निर्भरता।	• चार्ट पर रेखाचित्र बनाकर मनुष्य, पशु–पक्षी, पेड़–पौधो की परस्पर निर्भरता पर बच्चों का अनुभव लेते हुए चर्चा करे।	
• मनुष्य के लिए भोजन की आवश्यकता एवं महत्व की समझ विकसित करना।		• बच्चों से भोजन सम्बन्धित अनुभवों को साझा कराएँ जैसे– o घर में क्या–क्या बनता है? o आपको खाने में क्या–क्या अच्छा लगता है ? o क्या–क्या पकाकर खाते हैं और क्या–क्या कच्चा खाते हैं ? o भूख लगने पर कैसा अनुभव होता है ? o भोजन कर लेने के बाद कैसा अनुभव	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति को देखकर।

		होता है ?	
• भोजन को चबाने एवं स्वाद का पता लगाने में दाँत एवं जीभ के कार्य से अवगत कराना।		• तीन कटोरी में पानी लेकर उनमें अलग–अलग चीनी, नमक एवं नीबू डालकर घोलें। बच्चों को बारी–बारी से चखकर स्वाद बताने को कहें। चर्चा करें– o चीनी, नमक एवं नीबू के घोल का स्वाद का पता तुम्हें कैसा लगा ? इस प्रकार बच्चों के अनुभव के आधार पर स्पष्ट करें कि जीभ स्वाद का पता लगाने में सहायक है।	• क्रियाकलाप के उपरान्त बच्चों के मौखिक अभिव्यक्ति के आधार। • बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर।
• स्थानीय परिवेशीय पशु–पक्षियों के भोजन के बारे में अवगत कराना। • भोजन करने में पशुओं के दाँत एवं पक्षियों के चोंच तथा पंजों के महत्व से अवगत कराना।		• बच्चों से उनके अनुभवों के आधार पर बातचीत करें– o आप भोजन को किससे चबाते हैं। o क्या तुम्हारे दाँत कभी टूट कर गिरे हैं o क्या उसके बाद उस जगह पर दाँत निकले ? o टूटने वाले दाँतो को क्या कहते ? o दाँतो की देखभाल कैसे करते हो ? • परिवेशीय/पालतू पशु–पक्षियों के भोजन के बारे में बच्चों के अनुभव व्यक्त कराएँ और सूची बनवाएँ।	• बच्चों की अभिव्यक्ति के आधार पर। • बच्चों द्वारा बनाई गई सूची के आधार पर। • बच्चों द्वारा पशु–पक्षियों के भोजन करने के तौर–तरीकों के विभेद करने के क्षमता देखकर। • बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर ।
		• बच्चों को आस–पास ले जाकर पशु–पक्षियों के भोजन करने के तरीकों का अवलोकन कराते हुए उनके अनुभवों के आधार पर बातचीत करें– o क्या आपने आस–पास गाय या भैंस को खाना खाते हुए देखा है? o पक्षियों को चोंच से दाना चुगते हुए देखा है? o पक्षी अपने पंजों से किस प्रकार भोजन को पकड़ते है? • आस–पास के परिवेश में पाए जाने वाले पक्षियों के चोंच एवं पंजों का चित्र बनवाएं।	• बच्चों द्वारा बनाये गये चित्रों के आधार पर उनकी समझ एवं जानकारी का मूल्यांकन करें।

	gekjk vkokl		
• मनुष्य एवं पशु–पक्षियों के लिए आवास की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित कराना।	• मनुष्य एवं पशु–पक्षियों के लिए घर/आवास की आवश्यकता एवं उपयोगिता।	• बच्चों को बनावट के आधार पर विभिन्न प्रकार के घरों के बारे में बातचीत करें। इसमें यह प्रश्न सहायक हो सकते हैं– o तुम्हारा घर कैसा है, कच्चा या पक्का ? o तुम्हारा घर किस–किस चीज से मिलकर बना है? o घर से हमें क्या लाभ हैं ? o तुम्हारे आस–पास कैसे–कैसे घर बने हैं ?	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • बच्चों के अनुभवों को सुनकर।
	• हमारे विभिन्न प्रकार के घर।	• आप बच्चों को विभिन्न प्रकार के घरों का चित्र दिखाकर बच्चों का अनुभव लेते हुए उनसे चर्चा करें। • आप बच्चों से अपने और अपनी पंसद में घर का चित्र बनवाएँ।	• चित्र द्वारा बच्चों की कल्पना शीलता एवं रूचि का मूल्यांकन • मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा।
• पशु–पक्षियों के लिए आवास की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित कराना।	• पशु–पक्षियों के घर/आवास।	• परिवेशीय पशु–पक्षियों के घरों के बारे में बच्चों के अनुभव साझा कराएँ। • बच्चों से पशु–पक्षियों के वास–स्थान की (रहने के स्थान) सूची बनवाएँ जैसे– गाय, चींटी, चूहा, खरगोश, मधुमक्खी, साँप आदि।	• बनाई गई सूची के आधार पर उनकी जानकारी एवं समझ का मूल्यांकन।
	gekjk LokLF;		
• अच्छे स्वास्थ्य हेतु व्यक्तिगत स्वच्छता सम्बन्धी आदतों का विकास करना।	• अच्छे स्वास्थ्य के लिए दाँत, जीभ, आँख, कान, बाल, नाखून, आदि की स्वच्छता की आवश्यकता।	• बच्चों से दैनिक क्रियाकलापों पर बातचीत करें तथा उनके अनुभवों को साझा करते हुए साफ–सफाई पर समझ विकसित करें। • दाँत, आँख, कान, बाल, नाखून, आदि की स्वच्छता के बारे में उनके द्वारा किए जा रहे दैनिक क्रियाकलापों पर बात–चीत करें। • दो काँच के गिलासों में पानी लेने को कहें। एक में कुछ बच्चों के हाथ डुबवाएँ। पानी के गन्दा हो जाने पर हाथों में गन्दगी होने का निष्कर्ष बच्चों से निकलवाएँ। अतः उन्हें भोजन से पूर्व	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा। • प्रतिदिन बच्चों की व्यक्तिगत स्वच्छता का अवलोकन करके। • गतिविधि के उपरान्त मिड–डे मील से पूर्व बच्चों द्वारा हाथ साफ करने का अवलोकन करके। • प्रतिदिन परिवेशीय स्वच्छता जैसे– कक्षा, विद्यालय प्रांगण की साफ–सफाई में बच्चों

• अच्छे स्वास्थ्य के लिए घर और आस–पास की स्वच्छता एवं महत्व से परिचित कराना। • दैनिक क्रियाकलापों में व्यक्तिगत सुरक्षा सम्बन्धी आदतों का विकास करना। • विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाओं के प्रति सावधानी एवं बचाव के तौर–तरीकों से अवगत कराना।	• अच्छे स्वास्थ्य हेतु घर और पास–पड़ोस की स्वच्छता की आवश्यकता। • घर, विद्यालय, खेल का मैदान, सड़क, आदि पर सुरक्षा सम्बन्धी ध्यान देने योग्य बातें, जैसे– आग, चाकू, बिजली के उपकरणों से दूर रहना, सड़क पर चलते या पार करते समय सावधान रहना, सड़क पर खेलने से होने वाली दुर्घटना से सावधान रहना, पेन्सिल तथा अन्य नुकीली वस्तुओं के मुँह या कान में डालने से हानि, शारीरिक क्षति पहुँचाने वाले खेलों के प्रति सतर्कता रखना।	हाथ धोने की समझ विकसित कराएं। • बच्चों से उनके परिवेश की स्वच्छता पर बातचीत करें और उसे स्वच्छ रखने हेतु उनके विचार व्यक्त कराने का अवसर प्रदान करें। • खुले स्थानों में शौच के कुप्रभावों पर चर्चा करें। • स्वच्छ व गन्दे परिवेश के चित्रों पर बच्चों से चर्चा कराएँ और स्वच्छ परिवेश के प्रति जागरूक कराएँ। • आग, चाकू, ब्लेड, बिजली के उपकरणों, सड़क पर खेलने या असावधानी से चलने आदि पर बच्चों के अनुभवों को साझा कराएँ तथा चर्चा के माध्यम से दुर्घटनाओं के प्रति सचेत करें।	के योगदान का अवलोकन करके। • चर्चा–परिचर्चा सुनकर • चित्रों पर बच्चों की अभिव्यक्त द्वारा। • बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव सुनकर एवं इसके प्रति समझ तथा व्यवहार के आधार पर।
• जल की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित कराना।	t y • हमारे जीवन में जल की आवश्यकता एवं महत्व। • मनुष्य, पशु–पक्षियों एवं पेड़–पौधों के लिए जल की आवश्यकता। • जल की कमी/जल संकट	• हमारे जीवन में पानी की कहाँ–कहाँ आवश्यकता पर बच्चों के अनुभवों को साझा कराना और जल के उपयोगिता को उनसे जानना। • बच्चों से जल के स्रोतों की जानकारी करना जैसे– कुएँ, हैण्डपम्प, तालाब आदि। • बच्चों से पेड़–पौधों पशु–पक्षियों के लिए जल की आवश्यकता पर चर्चा करें। • मौसम के आधार पर जल–स्तर के संदर्भ में बच्चों के अनुभवों को व्यक्त कराना व जल की कमी हो जाने का निष्कर्ष निकलवाना।	• बच्चों के अनुभवों के आधार पर दिन प्रतिदिन के दैनिक क्रियाकलाप के दौरान बच्चों द्वारा जल प्रयोग करने के तरीके के अवलोकन द्वारा • बच्चों की समझ के आधार पर। • बच्चों के मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के आधार पर।

• उपयोगी जल के अपव्यय/बर्बादी को रोकने की समझ विकसित करना।	• जल के अपव्यय/बर्बादी को रोकना।	• बच्चों से दैनिक क्रियाकलापों में जल के अपव्यय/बर्बादी सम्बन्धी विचारों को अभिव्यक्त कराना जैसे– उनसे पूछना पानी कहाँ–कहाँ बर्बाद होता है? पानी को बर्बाद होने से कैसे रोका जाए, इस पर उनके अनुभवों को साझा। • पानी बचाव सम्बन्धी बच्चों से चित्र बनवाएँ।	• बच्चों द्वारा जल अपव्यय को रोकने हेतु उनके प्रयासों को देखकर बनाएं। • चित्र के आधार पर बच्चों की समझ का मूल्यांकन कराएं।
	;krk;kr d lk/ku		
• यातायात हेतु प्रयुक्त होने वाले विभिन्न साधनों से परिचित कराना।	• यातायात के विभिन्न साधनों जैसे– इक्का/ताँगा, बैलगाड़ी, नाव, रिक्शा, साइकिल, ऑटो, रेल, बस, हवाई जहाज, पानी का जहाज आदि की पहचान।	• बच्चों से किसी यात्रा, भ्रमण या रिश्तेदार के घर जाने के अनुभव को साझा करना और इसमें प्रयोग में आए या देखे गए विभिन्न यातायात के साधनों की पहचान कराना तथा सूची बनवाना। • बच्चों से विभिन्न यातायात के साधनों के चित्र, मॉडल/खिलौने एकत्र कराना एवं उन्हें वर्गीकृत कराना।	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति एवं उनके द्वारा बनाई गयी सूची के आधार पर। • यातायात के साधनों को चित्रों का वर्गीकरण करते समय सही स्थान पर लगवाकर मूल्यांकन करना।
• यातायात के सामान्य नियमों एवं संकेतों से परिचित कराना।	• यातायात के समान्य नियमों की जानकारी एवं संकेतों की पहचान।	• यातायात के नियमों पर बच्चों से चर्चा करते हुए नियमों का पालन करने पर बल दें। • यातायात संकेतों का चित्र दिखाकर बच्चों को संकेतों की पहचान तथा उद्देश्य बताएं।	• यातायात के नियमों पर बच्चों की समझ को जानकर। • यातायात संकेतों की पहचान द्वारा।
	lpkj d lk/ku		
• संचार के विभिन्न साधनों से परिचित कराना।	• संचार के विभिन्न साधनों जैसे–रेडियो, टीवी, मोबाइल, टेलीफोन आदि की पहचान करना।	• सूचनाओं के आदान–प्रदान में प्रयोग किए जाने वाले विभिन्न साधनों के बारे में बच्चों के अनुभवों को साझा करना।	• अनुभवों के आधार पर।
• समय के साथ परिवर्तित संचार के विभिन्न साधनों से अवगत कराना।	• समय के साथ परिवर्तित संचार के विभिन्न साधनों की सामान्य जानकारी, जैसे संदेशवाहक, कबूतर, चिट्ठी, टेलीफोन, ई–मेल, मोबाइल आदि।	• पुराने समय से आज तक उपयोग में लाए गए विभिन्न संचार साधनों की बच्चों से सूची बनवाना, जैसे– संदेशवाहक, कबूतर, चिट्ठी, आदि। • पुराने समय से अब तक के संचार के विभिन्न साधनों के चित्रों के दिखाकर बच्चों से चर्चा करना।	• बनाई गई सूची का अवलोकन करके। • चित्रों पर बच्चों के उत्तरों एवं उनकी समझ के आधार पर।

		• प्रोजेक्ट कार्य के अन्तर्गत बच्चों से विभिन्न प्रकार की चिट्ठियों को एकत्र कराना तथा उनका प्रयोग बताना जैसे– पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय, ग्रीटिंग कार्ड, निमंत्रण कार्ड, आदि। • बच्चों को निकट के पोस्ट–ऑफिस का भ्रमण कराना तथा अवलोकन हेतु ले जाकर वहाँ के कर्मचारियों से बातचीत करने का अवसर देना और भ्रमण से लौटकर बच्चों के अनुभवों को साझा करना। • बच्चों से ग्रीटिंग कार्ड्स, लिफाफा, मोबाइल, टेलीफोन आदि बनवाना।	• संकलित सामग्री का अवलोकन करके। • कक्षा में भ्रमण के उपरान्त बच्चों के अनुभव को सुनकर। • बच्चों की रचनात्मक प्रवृत्ति को परखकर।
जीवनोपयोगी वस्तुओं के निर्माण की प्रक्रिया एवं महत्व से परिचित कराना।	thoukiq;kxh oLrqvksa dk fuekZ.k • मिट्टी के बर्तनों जैसे– कुल्हण, सुराही, घड़ा, आदि के बनाने की प्रक्रिया।	• बच्चों को आस–पास दिखाई देने वाली मिट्टी के बर्तनों की सूची बनवाएँ। • मिट्टी के बर्तन कैसे बनते हैं, उनसे उनके अनुभव पूछें। • आस–पास के परिवेश में कुम्हार के पास ले जा कर मिट्टी के बर्तन निर्माण करने की प्रक्रिया पर चर्चा कराएं।	• सूची का अवलोकन करके। • बच्चों की पूर्व जानकारी एवं अनुभवों को सुनकर। • भ्रमण के उपरान्त बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर।

d{kk&4

mn~ns';	lEcU/k	fØ;kdyki	eY;kdu
• समाज की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में परिवार के महत्व को स्पष्ट करना। • प्राचीन एवं वर्तमान समय की पारिवारिक संरचना के स्वरूप को स्पष्ट करना। • घर–परिवार के सदस्यों द्वारा किए	ifjokj • प्राचीन एवं वर्तमान समय के परिवार (संयुक्त एवं एकाकी परिवार)।	• शिक्षक बच्चों से अपने माता–पिता से बातचीत करके आने को कहें। वे अपने माता–पिता से निम्नवत् प्रकार की बातचीत कर सकते हैं– o उनका बचपन कैसा था ? o उनके घर में उनके साथ कौन–कौन रहते थे? o उनके पड़ोस के परिवार में कौन–कौन रहते थे ? o वे अपनी खुशी, अपनी परेशानियाँ या अपना दुःख किसे बताते थे ? बच्चों से बातचीत करके आने पर शिक्षक	• मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर।

जाने वाले कार्यों में स्त्री–पुरूष की समान भागीदारी तथा प्रत्येक सदस्य के महत्व के प्रति समझ विकसित करना। • पारिवारिक मूल्य में परिवर्तन से सामाजिक मूल्य में परिवर्तन होता है, स्पष्ट करना।	• समय के साथ पारिवारिक मूल्य में परिवर्तन आने से सामाजिक संरचना में परिवर्तन होना जैसे– बच्चों का अपने माता–पिता से सम्बन्ध, बालक–बालिका में समानता, निर्णय लेने में सभी की समान भागीदारी, परिवार के सभी सदस्यों का आपसी ताल–मेल, त्योहारों को मनाने, परिवार एवं रिश्तेदारों के मिलने–जुलने में परिवर्तन आदि।	प्राचीन एवं आधुनिक परिवार के स्वरूप स्पष्ट करें। • बच्चों से इस सम्बन्ध में वार्तालाप करके पारिवारिक मूल्य की आवश्यकता एवं महत्व से अवगत कराएं तथा वर्तमान समय में पारिवारिक मूल्य परिवर्तन से सामाजिक मूल्य में भी परिवर्तन होता है जैसे– परिवार के जो सदस्य तुम्हारे साथ नहीं रहते हैं उनसे तुम कब–कब मिलते हो तथा उनके साथ कौन–कौन सा त्योहार मनाते हो ? • बच्चों को परिवार के सदस्यों का चित्र उनकी कल्पनाओं के आधार पर बनाने को कहें।	• बातचीत के दौरान बच्चों द्वारा दिए गए जवाब के आधार पर। • बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों के आधार पर।
	LFkkuh; i'k l tM 0;fDr ,o 0;olk;		
• बच्चों को स्थानीय पेशे से जुड़े व्यक्तियों एवं उनके व्यवसायों से अवगत कराना। • उनके व्यवसाय से सम्बन्धित उपकरणों से परिचित कराना। • हमारे जीवन में इनके महत्व की समझ विकसित करना।	• स्थानीय पेशों से जुड़े व्यक्तियों, जैसे– किसान, डॉक्टर, बढ़ई, लोहार, दर्जी, मोची, कुम्हार, राजगीर, सफाईकर्मी के कार्यों एवं हमारे जीवन में उनका महत्व। • उनके व्यवसाय से सम्बन्धित उपकरण।	• बच्चों को स्थानीय व्यवसाय से जुड़े लोगों से सम्बन्धित चित्र दिखाकर व्यवसाय सम्बन्धी पहचान कराना एवं बच्चों के अनुभवों को सुनना। • बच्चों को भ्रमण पर ले जाकर स्थानीय पेशे से जुड़े लोगों के कार्य की प्रक्रिया पर चर्चा कराना। • भ्रमण के दौरान विभिन्न व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों द्वारा प्रयोग किए जा रहे उपकरणों पर बातचीत करना। • स्थानीय व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों के महत्व के विषय में बच्चों के अनुभवों को सुनना।	• चित्र द्वारा पहचान कर सकने की क्षमता के आधार पर। • भ्रमण के दौरान बच्चों के अनुभवों के आधार पर। • बच्चों के अनुभवों से प्राप्त प्रश्नोत्तर द्वारा।
	LFkkuh; eyk		
• बच्चों को अपने आस–पास के मेलों से परिचित कराना एवं सामाजिक जीवन	• स्थानीय मेले का विवरण जैसे–मेले में खाने–पीने की व्यवस्था, झूलें, विभिन्न प्रकार की दुकानें (बर्तनों,	बच्चों से उनके अनुभव पर आधारित निम्नवत् बातचीत कर सकते हैं – o तुम्हारे गाँव में मेला कहाँ–कहाँ लगता है?	• बच्चों के पूर्व ज्ञान से जुड़े मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर।

में इनके महत्व का बोध कराना।	खिलौने, चूड़ी, कपड़े आदि)। • स्थानीय मेले के महत्व।	o क्या आप कभी किसी मेले में गए है ? o मेले में किसके साथ गए ? o मेले में क्या–क्या खाया–पीया और क्या–क्या देखा ? o मेले में क्या–क्या खरीदा ? o क्या मेले में तुम्हें मजा आया ? • स्थानीय मेले का चित्र बनवाना। • बच्चों से अभिनय कराकर मेले के क्रियाकलाप से परिचित कराना एवं उसके महत्व की समझ विकसित करना।	• बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों से उनकी कल्पनाशीलता को समझ कर। • बच्चों द्वारा अभिनय में प्रतिभागिता के आधार पर।
• भोज्य पदार्थों के स्रोतो से अवगत कराना। • खेतों में फसलों के उगाने की प्रक्रिया की जानकारी देना। • फसलों से अनाज पृथक करने की प्रक्रिया से अवगत कराना।	gekjk Hkkstu • भोज्य पदार्थों के विभिन्न स्रोत–मंडी, दुकान एवं बाजार। • भोज्य पदार्थों को किसानों द्वारा उगाया जाना–धान, गेहूँ, दाल, फल सब्जियाँ आदि। • फसलों के बढ़ने एवं पकने की प्रक्रिया। • फसलों से अनाज पृथक करना।	• भोजन प्राप्त करने के स्त्रोतों के विषय में बच्चों के अनुभवों के आधार पर बातचीत करें। भोजन के स्त्रोत जानने हेतु निम्नवत् बातचीत करें– o भोज्य पदार्थ हम कहाँ से प्राप्त करते हैं ? o इन्हें कौन उगाता है ? o क्या तुमने पेड़–पौधों में फलों एवं सब्जियों को लगते हुए देखा है ? कहाँ–कहाँ देखा है? o धान, गेहूँ, दाल आदि के पौधों को देखा है ? o क्या तुम इन पौधों को पहचानते हो ? o क्या भोज्य पदार्थों के साथ प्रयोग किए जाने वाले मसालों को जानते हो ? o किन–किन मसालों को सूँघकर या चखकर बता सकते हो ? • अपने घर पर पता करने को कहें कि फसलें कैसे उगायी जाती है? • बच्चों को खेतों में भ्रमण कराकर विभिन्न प्रकार के फसलों को पहचानने का अवसर दें। • विभिन्न प्रकार की फसलों से अनाज पृथक करने की प्रक्रिया की जानकारी हेतु किसान से बातचीत कराएँ।	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • भ्रमण द्वारा अवलोकित फसलों को पहचान सकने की क्षमता द्वारा। • बच्चों द्वारा बनाई गई सूची एवं उन्हें पहचानने की क्षमता द्वारा। • चर्चा में द्वारा बच्चों की समझ के आधार पर।

	• अनाज, सब्जियाँ एवं फलों को खेतों से बाजार में लाने की प्रक्रिया।	• फल, अनाज, सब्जियों, दालें उत्पन्न करने वाले पौधों के नामों की सूची बनवाएं तथा पौधों की पहचान कराएँ। • भ्रमण द्वारा बच्चों को अनाज, फलों, सब्जियों की मण्डी, दुकान एवं बजार को दिखाएं एवं चर्चा करें।	
	ifjo'kh; tho&tUrq		
• झुण्ड में रहने वाले और अकेले में रहने वाले जानवरों की पहचान करना।	• झुण्ड में रहने वाले जानवर–भेड़ बकरी।	बच्चों के अनुभव के आधार पर चर्चा कराना, जैसे– o कौन–कौन से जानवर झुण्ड में रहते हैं ? o ऐसे कौन–कौन से जानवर जो हमारे पास आने से डरते हैं? o मधुमक्खी शहद किससे बनाती है ?	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा।
• विभिन्न प्रकार के कीटों जैसे मधुमक्खी और तितली द्वारा फूलों से भोजन एकत्रित करने की प्रक्रिया से अवगत कराना।	• मधुमक्खियों के छत्तों एवं शहद बनाने की प्रक्रिया।	• बच्चों से झुण्ड में रहने वाले तथा अकेले जानवर की सूची बनवाए।	• बच्चों की बनाई गई सूची के आधार पर मूल्यांकन
• विभिन्न प्रकार के जन्तुओं की उपयोगिता की समझ विकसित करना।	• जन्तुओं के उपयोग एवं खेती के काम आने वाले जन्तु। • चमड़ा, ऊन, दूध देने वाले जन्तु घरेलू एवं परिवहन में उपयोगी जन्तु।	• चित्र दिखाकर चार्ट के माध्यम से एवं बच्चों के अनुभवों से जीव–जन्तुओं के उपयोग पर चर्चा करें। • प्रोजेक्ट वर्क के अन्तर्गत बच्चे घर जाकर पता करें कि जीव–जन्तु हमारे लिए किस तरह उपयोगी हैं।	• चित्र एवं चार्ट पर आधारित मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा। • बच्चों द्वारा किए गए प्रोजेक्ट कार्य पर आधारित।
	vkokl		
• पुराने एवं वर्तमान समय के घर–ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के घरों की विभिन्नता की समझ विकसित करना।	• पुराने एवं वर्तमान समय के घर–ग्रामीण और शहरी वातावरण के अनुसार घरों के प्रकार एवं उनके निर्माण में प्रयुक्त सामग्री।	शिक्षक बच्चों से बातचीत करें– • अपने घर में बड़े–बुजुर्ग से चर्चा करें कि क्या आप भी ऐसे ही घर में रहते थे जिसमें हम रहते हैं? • क्या वे घर बनाने में वैसी ही सामग्री का प्रयोग करते थे जैसा वर्तमान समय के मकानों में प्रयोग की जाती है ?	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर।

		• बच्चों को अपने आस–पास के किसी पुराने मकान का भ्रमण कराएँ तथा वर्तमान समय के मकानों की बनावट में हुए परिवर्तन पर उनके अनुभव के आधार पर चर्चा करें।	• भ्रमण द्वारा सीखी गई विषय–वस्तु से सम्बन्धित जानकारी के आधार पर। • बच्चों के अनुभवों को जानकर।
• ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के कूड़े–कचरे के निस्तारण के तौर तरीकों से परिचित कराना।	• शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में घरों का कूड़ा–कचरा एवं उसका निस्तारण।	• बच्चों से उनके अनुभव के आधार पर बातचीत करें कि अपने घर के कूड़ा–कचरें का क्या करते हैं? o कूड़ा–कचरा कहाँ फेकते हैं? या उनका निस्तारण कहाँ करते हैं? o व्यर्थ पदार्थों का क्या उपयोग करते है?	• बच्चों के अनुभवों द्वारा दिए गए जबाब पर।
• व्यर्थ पदार्थो का पुनः उपयोग करने की समझ विकसित करना।	• व्यर्थ पदार्थो का पुनः उपयोग।	• घर के आस–पास जीव–जन्तुओं के रहने के स्थान का अवलोकन एवं उनके अनुभव के आधार पर बातचीत करें जैसे– o मेढक जल में रहता है या जमीन पर रहता है? या दोनो जगह। o भूमि के अन्दर या बिल में जाते हुए किसी जन्तु को देखा है?	• आस–पास के परिवेश में भ्रमण द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर।
• विभिन्न जीव–जन्तुओं के वास स्थान में विभिन्नता से अवगत कराना।	• विभिन्न जीव–जन्तुओं के वास– स्थान में विभिन्नता (अनुकूलन के आधार पर) • जल में रहने वाले। • स्थल पर रहने वाले। • भूमि के अन्दर रहने वाले। • जमीन की दरार में रहने वाले। • पक्षियों के घोसलों के प्रकार एवं उनके निर्माण में प्रयुक्त सामग्री।	• विभिन्न प्रकार के घोसलों से सम्बन्धित चित्र, चार्ट आदि के माध्यम से पक्षियों के घोंसले की पहचान कराएँ। • चिड़ियों द्वारा घोंसला बनाने की प्रक्रिया पर बातचीत करें– o चिड़ियों का घोंसला कहाँ–कहाँ देखा है ? o वे अपना घोंसला बनाने में क्या–क्या बीन कर ले आती हैं? बच्चों के अनुभवों के आधार पर उनकी समझ विकसित करें।	• चित्र एवं चार्ट पर आधारित बच्चों द्वारा दिए गए जवाब के आधार पर • बच्चों के पूर्व ज्ञान को जानकर।
	iM&ik/k		
• पौधों के विभिन्न भागों की समझ विकसित करना।	• पौधे का परिचय एवं उसके विभिन्न भाग–जैसे जड़, तना, पत्ती, फल एवं फूल।	• पौधों के विभिन्न भागों का चित्र बनवाकर उसके सामान्य कार्यों की चर्चा करें तथा बच्चों के अनुभवों के आधार पर चर्चा कराएँ।	• बच्चों द्वारा बच्चों के अनुभव एवं समझ के आधार पर मूल्यांकन करें।
• बच्चों को जड़, तना,	• पौधों के विभिन्न भागों के	• पानी में तथा भूमि पर पाए जाने वाले	• भ्रमण के दौरान पौधों

पत्ती, फल एवं फूल के सामान्य कार्य से अवगत कराना। • बच्चों में सब्ज़ियों के रूप में प्रयोग किए जाने वाले जड़ों एवं तनों के विषय में जानकारी देना।	सामान्य कार्य–भोजन बनाना, जल एवं खनिज लवणों का जमीन से अवशोषण (सोखना), वाष्पोसर्जन। • पानी में तथा भूमि पर पाए जाने वाले पौधे। • भोजन संचित करने वाली जड़े–मूली, गाजर, शलजम • श्वसन जड़ें– बरगद, मनी प्लान्ट। • भोजन संचित करने वाले तने– आलू, अदरक, हल्दी।	पौधों के पास के खेत, बगीचों में जाकर अवलोकन कराएं। • बच्चों द्वारा प्रतिदिन खायी जाने वाली सब्जियों पर चर्चा करें तथा उनमें समझ विकसित करें कि कुछ सब्जियों की जड़े तथा तने भी हम खाते हैं।	के वास–स्थान में भिन्नता की समझ के आधार पर
• विभिन्न मौसम में खिलने वाले फूलों की पहचान करना। • फूलों के प्रयोग एवं महत्व से अवगत कराना।	Qy विभिन्न मौसम में खिलने वाले फूलों के पौधे, फूलों के रंग, आकार, महक उसके विभिन्न भाग तथा कार्य। • विभिन्न त्योहारों पर उपयोग किए जाने वाले फूल, कपड़ों, जानवरों, बर्तनों एवं दीवारों पर फूलों की डिजाइन बनाना एवं रंगना। • स्थानीय परिवेश में फूल बेचने वाले के विषय में। • फूलों का प्रयोग सजावट में, चढ़ाने में, माला बनाने में, इत्र बनाने में, गुलाब जल आदि बनाने में।	• बच्चों के पूर्व अनुभवों को देखकर बातचीत करें– o तुमने किन–किन फूलों को देखा है ? o फूलों का उपयोग कहाँ–कहाँ होता हैं ?	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर • बच्चों के पूर्व अनुभवों को जानकर।
• पेड़–पौधों की देख–भाल करने की	iM&ik/kk dh n[kHkky • पास–पड़ोस में पाए जाने वाले पेड़–पौधे।	बच्चों से चर्चा करें– • तुम्हारे आस–पास कौन–कौन से	• बच्चों की जानकारी के आधार पर मूल्यांकन

समझ विकसित करना। • घरेलू एवं जंगली पौधों को पहचान कराना।	• देखभाल की आवश्यकता वाले पेड़–पौधे तथा बिना देखभाल के बढ़ने वाले पेड़–पौधें।	पेड़–पौधे है जिनकी देखभाल की आवश्यकता होती है ? • कौन–कौन से पेड़–पौधे ऐसे होते हैं जिनकी देखभाल की आवश्यकता नहीं पड़ती है ? • जंगली रूप से विकसित पेड़–पौधों के फलों को कौन–कौन खाता है ? • पास–पड़ोस में पाए जाने वाले घरेलू एवं जंगली पेड़–पौधों की सूची बनवाएँ।	करें। • सूची में दिए गए बिन्दुओं पर बच्चों की जानकारी का मूल्यांकन करें।
• जल के स्रोतों से अवगत कराना। • जल को शुद्ध करने के तौर–तरीको से अवगत कराना। • जल–प्रदूषण के कारणों से अवगत कराना। • पानी का शुद्धिकरण।	t y • अपने आस–पास के क्षेत्रों में जल के प्राकृतिक स्रोत–भूमिगत, जल, नदी, झरना, झील आदि। • पेय जल के स्रोत –कुआँ, हैण्डपम्प, ट्यूबवेल आदि। • पानी के अन्य स्रोत–जलाशय, नहर, बाँध, तालाब, टैंक, नदी। • पानी को स्वच्छ एवं सुरक्षित तरीके से रखना। • जल प्रदूषण– कारण प्रभाव एवं बचाव।	• चित्रों के माध्यम से जल के विभिन्न स्रोतो के विषय में बच्चों की समझ विकसित करें। • अपने आस–पास के जल के स्रोतों एवं जल के प्रयोग पर बच्चों से उनके अनुभव के आधार पर वार्तालाप करना जैसे– o क्या तालाब, जलाशय एवं नदी के पानी का प्रयोग वहाँ के आदमी, औरत, बच्चे और जानवर सभी के द्वारा किया जाता है? o क्या उसमें लोग नहाते या कपड़ा तथा बर्तन धुलते हैं ? o क्या फैक्ट्री या कारखाने का प्रदूषित जल, कूड़ा–कचरा तथा रासायनिक पदार्थ इनमें डाले जाते हैं ? o क्या यह पानी पीने योग्य है ? o क्या यह पानी पीने से हम बीमार पड़ जाते हैं? o क्या यह प्रदूषित जल पानी में रहने वाले जन्तुओं को नुकसान पहुँचाते हैं ? • अपने घर या स्वास्थ्यकर्मी से जल के स्त्रोत के प्रदूषण और दुष्प्रभाव पर चर्चा करें।	• जल के विभिन्न स्रोतों के चित्रों पहचानने के आधार पर। • बच्चों के अनुभव एवं समझ के आधार पर मूल्यांकन। • स्वच्छ पानी स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, इस की समझ विकसित होने के आधार पर। • पानी को स्वच्छ रखने में बच्चों के बताए तरीकों पर मूल्यांकन। • जल–प्रदूषण के कारणों पर उनकी बनाई गई

• जल–प्रदूषण से बचाव के तरीकों के प्रति जागरूक करना।		• पानी के शुद्धीकरण करने के तरीके पर बच्चों से उनमें घर के अनुभव लेते हुए कक्षा में प्रदर्शन कराएँ। (घड़ा विधि द्वारा) • जल–प्रदूषण किन–किन कारणों से होता है, बच्चों से सूची बनवाएँ। • बच्चों को अपने आस–पास के जलाशय, नदी, कुँआ आदि का भ्रमण कराकर उनका उपयोग तथा उसमें होने वाले प्रदूषण पर चर्चा करें तथा प्रदूषण से बचाव के उपाय बताएं।	सूची के आधार पर। • भ्रमण के दौरान जल के स्रोतों तथा उसमें पाई जाने वाली गंदगी तथा उसके दुष्प्रभाव को समझने के आधार पर।
• वाष्पन और संघनन की प्रक्रिया से अवगत कराना।	• वाष्पन एवं संघनन की प्रक्रिया	• बच्चों से उनके दैनिक अनुभव के आधार पर कक्षा में बातचीत करें– o गर्मी में गड्ढे में भरा पानी क्यो सूख जाता हैं? o किस मौसम में कपड़े जल्दी सूख जाते हैं ? o किस मौसम में कपड़े देर से सूखते है ? o क्या तुमने कभी ठण्डे पानी से भरी गिलास के बाहर पानी की बूँदों को देखा है ? उपर्युक्त वार्तालाप द्वारा वाष्पन एवं संघनन की प्रक्रिया समझाएं। • वाष्पन की प्रक्रिया को निम्नलिखित प्रयोग द्वारा बताएँ– o दो कटोरी में समान ऊँचाई में पानी लेकर एक धूप में वे दूसरे को छाया में रखना। o दो सूती कपड़े को लेकर एक को धूप में तथा दूसरे को छाए में फैलाना। प्रयोग उपरान्त बच्चों को स्पष्ट करें। • संघनन को भी प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें?	• बच्चों की अभिव्यक्ति के एवं उनकी समझ के आधार पर। • प्रयोग प्रदर्शन, द्वारा बच्चों की अभिव्यक्ति के आधार पर।

	;krk;kr		
• यात्रा करते समय टिकट खरीदने की आवश्यकता की जानकारी देना। • नोट (रुपया) और सिक्कों पर बने चित्रों/चिह्नों के महत्व के बारे में जानकारी देना।	• यात्रा के दौरान (रेल, बस) टिकट खरीदने की आवश्यकता और टिकटों की जाँच होना। • नोट (रुपया) और सिक्कों पर बने चित्रों की पहचान। • राष्ट्रीय प्रतीकों की जानकारी देना।	• बच्चों से उनके अनुभव के आधार पर वार्तालाप करें– • क्या आपने रेल, बस पर यात्रा करते समय टिकट खरीदा हैं ? • रेल, बस पर यात्रा करते समय कौन टिकट की जाँच या चेक करता है ? • आपने कौन–कौन से नोट और सिक्कों को देखा है ? • दस रुपये के नोट पर कौन–कौन से जानवर का चित्र बना है ? • कौन सा चिह्न प्रत्येक सिक्कों में पाया जाता है? • वे कौन से व्यक्ति है जिनकी फोटो प्रत्येक नोट पर दिखाई पड़ती है ? • आपके दादा–दादी पहले कौन से नोट और सिक्कों का प्रयोग करते थे ? • बच्चों के उत्तरों के आधार पर उन्हे यात्रा के दौरान टिकटों का महत्व, रुपये/पैसे पर बने चित्रों/चिह्नों के महत्व से अवगत कराना। • विभिन्न प्रकार के सिक्कों और नोटों (रुपये) को दिखाकर उसकी बनावट, महत्व तथा उपयोग पर चर्चा करना। • रेल एवं बस टिकट को दिखाकर यात्रा में उसके महत्व से अवगत करना।	• बच्चों की जानकारी के आधार पर • राष्ट्रीय प्रतीकों की पहचान के आधार पर। • यात्रा के दौरान टिकटों के खरीदने का महत्व के समझ के आधार पर।
• प्रदेश के विभिन्न अंचलों के रहन–सहन, खान–पान, भाषा, रीति–रिवाजों आदि विभिन्नता की समझ विकसित करना।	• प्रदेश के विभिन्न अंचलों के रहन–सहन, खान–पान, भाषा, रीति–रिवाजों आदि से अवगत कराना।	• बच्चों के उनके यात्रा अनुभव पर बात–चीत करें– o आपमें से कोई भी अपने गाँव या शहर से दूर गये हैं ? o कहाँ गये हैं और क्या करने गये हैं ? • बच्चों से यात्रा वृत्तान्त पर अपने अनुभव लिखने को कहें। • बच्चों के अनुभवों को सुनकर प्रदेश के विभिन्न अंचलों की प्राकृतिक बनावट। भाषा, रहन–सहन, खान–पान आदि पर चर्चा कर विभिन्नता की समझ विकसित	• बच्चों की अभिव्यक्ति सुनकर मूल्यांकन करना। • बच्चों के यात्रा वृत्तांत पर उनके अनुभव के आधार पर

		करें। • विभिन्न जगहों के चित्रों को दिखाकर वहाँ की विशेषताओं पर बच्चों से चर्चा करें।	• चित्रों के पहचान के आधार पर।
	LFkkuh; Lo'kklu		
• पंचायती राज व्यवस्था के उद्देश्य की जानकारी देना।	• पंचायती राज व्यवस्था के उद्देश्य। • ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत एवं जिला पंचायत का गठन एवं कार्य।	• बच्चों से गाँव की सुविधाओं पर उनको पूर्व जानकारी को लेते हुए पंचायती राज व्यवस्था की अवधारणा स्पष्ट करें– o गाँव में सड़क कौन बनवाता है ? o गाँव में बिजली–पानी की व्यवस्था किसके द्वारा की जाती है। o गाँव की साफ–सफाई का जिम्मेदार कौन है? • भ्रमण द्वारा ग्राम पंचायत के कार्यों का अवलोकन कराना एवं चर्चा कराना। • ग्राम पंचायत के गठन तथा कार्यों की जानकारी देते हुए क्षेत्र पंचायत तथा जिला पंचायत के गठन तथा कार्यों पर बच्चों के अनुभव के आधार पर चर्चा करें।	• बच्चों की पूर्व जानकारी के आधार पर। • भ्रमण के दौरान बच्चों से चर्चा करते हुए।
• नगरीय व्यवस्था हेतु नगर पंचायत, नगर पालिका परिषद, नगर निगम के गठन एवं कार्य की जानकारी देना।	• नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद, नगर निगम का गठन एवं कार्य।	• गाँव की व्यवस्था की जानकारी देते हुए नगरीय व्यवस्था की चर्चा करना।	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर।
• तहसील एवं जिले के प्रशासनिक अधिकारियों के कार्यों से अवगत कराना।	• तहसील एवं जिले के प्रशासनिक अधिकारियों का परिचय।	• तहसील एवं जिले के प्रशासनिक अधिकारियों कार्यों पर बच्चों की पूर्व जानकारी एवं चित्रों के माध्यम से चर्चा करें।	• बच्चों की अभिव्यक्ति के आधार पर।
• मतदान की प्रक्रिया एवं महत्व की समझ विकसित करना।	• मतदान का महत्व।	• कक्षा में मॉनीटर के चुनाव की प्रक्रिया का अभिनय के माध्यम से मतदान के महत्व को समझना।	• कक्षा में मॉनीटर के चुनाव का अभिनय के आधार पर।

d{kk&5

mnn';	lEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu

	ifjokj dk çokl		
• सामाजिक–आर्थिक दबाव के कारण पारिवारिक स्वरूप एवं जीवन की गुणवत्ता में परिवर्तन की समझ विकसित करना।	• अत्यधिक सामाजिक–आर्थिक दबाव के प्रभाव से पारिवारिक स्वरूप एवं जीवन की गुणवत्ता में परिवर्तन। • विभिन्न पीढ़ियों की विभिन्नताएँ जैसे– कुछ सदस्यों का बाहर चले जाना कुछ सदस्यों का साथ–साथ रहने के कारण एक दूसरे को बाँधे रखने की कला और अन्यत्र बसने के कारण रिश्तेदारी, नैतिक मूल्य, पारिवारिक दायित्व, एक–दूसरे से अपेक्षा रखना आदि का परिवार में प्रभावित होना।	• बच्चों से घर–परिवार एवं रिश्तेदारों के विषय में बातचीत करके आने को कहें। फिर दूसरे दिन कक्षा में बच्चों से उनके परिवार एवं रिश्तेदारों के विषय में बातचीत करें– o कौन–कौन से रिश्तेदार हैं जिन्हें तुमने कभी नहीं देखा है? o वे रिश्तेदार कहाँ–कहाँ रहते हैं ? o वे रिश्तेदार घर छोड़कर बाहर रहने क्यों चले गए ? • ग्रामीण परिवेश एवं शहरी परिवेश में रहने वाले परिवारों से सम्बन्धित चित्रों के माध्यम से उनके रहन–सहन, पहनावे, खान–पान, पढ़ाई–लिखाई के विषय में बातचीत करें।	• बच्चों के अनुभवों को सुनने हेतु उनकी मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा। • परिवार एवं रिश्तेदारों के विषय में बच्चों की समझ का अवलोकन करके। • चित्रों के माध्यम से शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के रहन–सहन, पढ़ाई–लिखाई पर बच्चों की समझ देखना।
• दूसरी जगह बसने अथवा स्थानान्तरण से पारिवारिक मूल्यों में गिरावट आने की समझ बच्चों में विकसित करना। • परिवार के सदस्यों की विशिष्टताओं से अन्य सदस्यों का लाभान्वित होना आदि से परिचित कराना।	• दूसरी जगह बसने अथवा स्थानान्तरण के कारण पारिवारिक मूल्यों में गिरावट। • परिवार के सदस्यों की विशिष्टताओं का परिवार के अन्य सदस्यों हेतु प्रेरणा स्रोत्र, उदाहरण – पढ़ाई–लिखाई में विशिष्ट होना, कला, नृत्य, संगीत में निपुण होना आदि।	• बच्चों को कहानी के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से पारिवारिक मूल्यों को स्पष्ट करें। • पारिवारिक संरचना में परिवर्तन होने पर नैतिक मूल्यों में परिवर्तन सम्बन्धी लेख लिखवाएं। • परिवार के सदस्यों का उदाहरण देकर स्पष्ट करें कि किस प्रकार परिवार के सदस्य अन्य सदस्यों के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं। • बच्चों से भी वार्तालाप करें कि आपके परिवार में आपके लिए कौन–कौन प्रेरणा स्रोत्र हैं ?	• कहानी सुनाने के बाद बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • बच्चों द्वारा लिखे गए लेख का मूल्यांकन करके। • बच्चों की समझ के आधार पर। • बच्चों के अनुभवों पर आधारित बताए गए उत्तरों के आधार पर।
• सांस्कृतिक विविधता के आधार पर विभिन्न परिवारों के रहन–सहन एवं खान–पान में	• सांस्कृतिक विविधता के आधार पर विभिन्न परिवारों के रहन–सहन एवं खान–पान में विभिन्नता।	• सांस्कृतिक विविधता के आधार पर विभिन्न परिवारों के रहन–सहन एवं खान–पान से सम्बन्धित गीत, कहानी, चित्र तथा पोस्टर आदि के माध्यम से चर्चा–परिचर्चा करें।	• विविध परिवारों के रहन–सहन एवं खान–पान में विविधता की समझ के आधार पर।

विभिन्नता की समझ विकसित करना। • विशिष्ट आवश्यकता वाले लोगों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।	• विशिष्ट आवश्यकता वाले लोगों (चलने, देखने, बोलने आदि की समस्या से ग्रसित) के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण ।	• विशिष्ट आवश्यकता वाले लोगों से सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग तथा कहानी सुनाकर उनकी समस्याओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण करें ।	• कक्षा एवं आस–पास के विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों के साथ कक्षा के बच्चों के व्यवहार का अवलोकन करके।
• शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु खेल का महत्व बताना। • विभिन्न प्रकार के खेल (इन्डोर एवं आउटडोर गेम्स) की जानकारी देना। • खेल में खेल एवं टीम भावना की समझ विकसित करना।	[ky ,o [ky Hkkouk • शारीरिक एवं मानसिक विकास हेतु खेल का महत्व। • विभिन्न प्रकार के खेल (इनडोर एवं आउटडोर गेम्स) • खेल में बालक–बालिका की समान भागीदारी। • खेल में खेल एवं टीम भावना का महत्व।	• बच्चों से खेल के महत्व पर चर्चा करें– o खेल क्यों आवश्यक है ? o खेल से हमारे शरीर एवं मस्तिष्क को क्या लाभ होता है? • बच्चों द्वारा खेलने वाले खेलों पर चर्चा करें। • टी0वी0 एवं आस–पास देखे गए विभिन्न खेलों पर चर्चा करें। • चित्र दिखाकर उनसे विभिन्न प्रकार के खेलों की जानकारी दें और उन्हें खिलवाएं। • कहानी के माध्यम से खेल में खेल एवं टीम भावना पर चर्चा करें।	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • बच्चों की खेलों में समझ का अवलोकन करके। • विद्यालय में आयोजित विभिन्न खेलों में बच्चों को समान अवसर की प्रतिभागिता के आधार पर। • बच्चों की समझ के आधार पर।
• स्थानीय स्तर के खेलों से अवगत कराना। • राष्ट्रीय स्तर के खेल एवं उनसे सम्बन्धित विभिन्न खिलाड़ियों के विषय में जानकारी देना।	• स्थानीय स्तर के विभिन्न खेलों का परिचय। • राष्ट्रीय स्तर के खेल एवं उससे सम्बन्धित विभिन्न खिलाड़ियों का सामान्य परिचय।	• स्थानीय स्तर के खेलों पर बच्चों के अनुभवों को सुनते हुए वार्तालाप करना। • राष्ट्रीय खेलों पर चर्चा करें। • अपने प्रदेश में विभिन्न खेलों में सर्वोच्च स्तर के खिलाड़ियों का उदाहरण देकर।	• बच्चों के अनुभव को सुनते हुए। • बच्चों के अनुभवों पर आधारित दिए गए जबाव के आधार पर।

• खेलों में निपुण होने के लिए अधिक से अधिक अभ्यास के महत्व से अवगत कराना। • स्थानीय खेलों के बदलते स्वरूप से परिचित कराना।	• खेलों में अभ्यास का महत्व । • स्थानीय खेलों का बदलता स्वरूप।	• विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के खेलों का नियमित अभ्यास कराएं। • कहानी के माध्यम से खेलों में अभ्यास के महत्व को स्पष्ट करें। • वर्तमान समय में स्थानीय खेलों के बदलते स्वरूप की चर्चा करे एवं चित्र दिखाकर खेलों के बदलते स्वरूप को स्पष्ट करें।	• विद्यालयों में आयोजित विभिन्न प्रकार के खेलों के अभ्यास में सम्मिलित होकर खेल में निपुणता के आधार पर। • बच्चों की समझ के आधार पर मूल्यांकन।
• जीव–जन्तुओं के (खान–पान, सूँघने, बोलने, सुनने, देखने एवं सोने के ढंग के विषय में जानकारी देना।	gekj tho& tUr • जीव–जन्तुओं के खान–पान, सूँघने, बोलने, सुनने, देखने एवं सोने का ढंग (चींटी, मधुमक्खी, कुत्ता, चिड़िया, साँप आदि)।	• बच्चों को आस–पास के परिवेश में भ्रमण कराकर विभिन्न जीव–जन्तुओं के रहने के ढंग पर उनके अनुभवों के आधार पर बातचीत करें। • परिवेशीय जीव–जन्तुओं की संवेदनशीलता सम्बन्धी क्रियाकलापों पर चर्चा करे जैसे– o आप जानवरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं? o क्या गर्मी के मौसम में उनके लिए पानी रखते हैं ?	• अवलोकन के दौरान बच्चों की गतिविधिओं को देखकर। • बच्चों का पशु–पक्षियों के साथ व्यवहार का अवलोकन करके।
• हमारे जीवन में जीव–जन्तुओं के उत्पाद की उपयोगिता से परिचित कराना। • जीव–जन्तुओं की सुरक्षा के महत्व से अवगत कराना।	• हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले जन्तु उत्पाद जैसे खाने, पहनने आदि में। • परिवेशीय जीव–जन्तुओं की सुरक्षा, विलुप्त होती प्रजाति एवं जंगली जानवरों की सुरक्षा।	• बच्चों के दैनिक जीवन के आधार पर बातचीत करें कि वे किन–किन जानवरों के उत्पादों का प्रयोग करते हैं? • विलुप्त होती प्रजातियों पर चर्चा करना। • प्रोजेक्ट कार्य के माध्यम से विलुप्त होती प्रजाति की सूची बनवाएँ। • जीव–जन्तुओं, विलुप्त होती प्रजाति की सुरक्षा हेतु किए जाने वाले प्रयासों पर बच्चो से चर्चा करना। • कहानी एवं प्रेरक प्रसंग के माध्यम से जीव–जन्तुओं की सुरक्षा के महत्व को बताएं।	• बच्चों की बातचीत के आधार पर। • बच्चों की सक्रियता एवं समझ के आधार पर। • सूची के आधार पर। • बच्चों की अभिव्यक्ति द्वारा। • कहानी एवं प्रेरक प्रसंग बच्चों के व्यवहार के परिवर्तन आधार पर

• जानवरों के साथ संवदेनशील होना।	• शिकारियों द्वारा शिकार पर रोक (जंगली एवं घरेलू जानवर।) • जानवरों से अपनी जीविका चलाना और उनके प्रति संवेदनशील होना।	• बच्चों से बातचीत करते हुए उनकी यह समझ विकसित करना कि किस प्रकार शिकार से जीव–जन्तु कम हो रहे हैं ? • कहानी एवं चित्र के माध्यम से बच्चों को जीव–जन्तुओं के प्रति संवेदनशील बनाना। • जीव–जन्तुओं के साथ बदसलूकी न करे इस पर बच्चों से चर्चा करना एवं उनकी देखभाल कैसे करें, सम्बन्धित चित्र दिखाएं।	• बच्चों से बातचीत करते हुए उनकी समझ के आधार पर। • कहानी से प्राप्त संदेश के प्रति समझ के आधार पर। • चित्र/चार्ट द्वारा बच्चों की सक्रिया एवं अभिव्यक्ति के आधार पर।
• जंगल में रहने वाले लोगों के जीवन व उनके रहन–सहन से परिचित कराना। • जंगल के उत्पादों पर समुदाय की निर्भरता की समझ विकसित करना। • जंगलों के समाप्त होने पर हमारे जीवन में पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी देना। • जंगलों के बचाव पर सरकार एवं लोगों द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन की जानकारी देना।	• जंगल में रहने वाले व्यक्ति एवं प्रारम्भिक मानव जीवन। • जंगलों के उत्पादों पर समुदाय की निर्भरता जैसे बाँस, चीड़, शीशम आदि। • जंगलों का खत्म होना और हमारे जीवन पर उसका प्रभाव। • जंगलों के बचाव पर लोगों द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन।	• बच्चों से जंगल के विषय में उनके पूर्व ज्ञान पर आधारित बातचीत करें जैसे– o क्या आपने कभी जंगल को देखा या उसके विषय में सुना है ? o जंगल में कौन लोग रहते हैं ? o वे कैसे रहते है ? एवं क्या खाते–पीते हैं? o जंगलों के कट जाने से उनके जीवन में क्या प्रभाव आया है ? o वहाँ के पेड़–पौधों से वे किस प्रकार भोजन प्राप्त करते हैं ? • चित्र, चार्ट के माध्यम से जंगल के विषय में समझ विकसित करें। • कहानी एवं चित्र दिखाकर आदिमानव जीवन के विषय में जानकारी दें और उसके विषय में चर्चा करें। • बच्चों से कहें कि घर जाकर अपने माता–पिता एवं बड़ों से पूछकर पता करें कि कौन–कौन से ऐसे पेड़ थे जो आज नहीं है और वे क्यों काट दिए गए ? पेड़ों के कट जाने से हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है? • जंगल बचाव आन्दोलन पर सरकार एवं लोगों द्वारा चलाए जा रहे प्रयासों पर चर्चा करें।	• बच्चों के पूर्व ज्ञान को जानकर। • मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • चित्र, चार्ट के माध्यम से बच्चों की समझ को जानकर। • कहानी एवं चित्र सम्बन्धी बच्चों से प्रश्न पूछकर। • बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति पर। • बच्चों की अभिव्यक्ति के माध्यम से

• भोज्य पदार्थों को संरक्षित करने आवश्यकता एवं महत्व से परिचित कराना। • भोज्य पदार्थों, आचार, सूखे फल, मेवा को खराब होने से बचाने के तौर–तरीके से अवगत कराना।	Hkkst u • भोज्य पदार्थों को संरक्षित करने आवश्यकता एवं महत्व। • भोजन, अचार, सूखे फल और मेवा को सुरक्षित करने की प्रक्रिया।	बच्चों से बातचीत करें– o क्या तुमने कभी भोजन को खराब होते हुए देखा है? o भोजन को सुरक्षित रखने की जरूरत क्यों पड़ती है? o किस मौसम में भोजन जल्दी खराब हो जाता है? o किन–किन तरीकों से भोजन को खराब होने से बचा सकते हैं? o क्या भोजन करते समय प्लेट में भोजन छोड़ते हैं? • अपने परिवार से पता करें कि किस प्रकार वे भोजन को सुरक्षित रखते हैं? • बच्चों के प्रयोग के माध्यम से दिखाएं कि किन कारणों से भोजन खराब हो जाते हैं जैसे– बासी खानों को कुछ दिन रखकर उसका अवलोकन करें।	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति कराना। • बच्चों के दिये गये उत्तरों के आधार पर। • बच्चों के प्रयोग की समझ के आधार पर।
• किसानों द्वारा अनाज पैदा करना। • विभिन्न प्रकार की फसलों की जानकारी देना जैसे– रबी, खरीफ, जायद की फसलें। • खेतों में सिंचाई और खाद की आवश्यकता से अवगत कराना। • प्राचीन और वर्तमान समय में फसल उपजाने की प्रक्रिया में बदलाव की जानकारी देना।	• किसानों द्वारा अनाज पैदा करना। • विभिन्न प्रकार की फसलें। खेती में सिंचाई और खाद की आवश्यकता। • प्राचीन और वर्तमान समय में फसलों के उपजाने की प्रक्रिया में परिवर्तन।	• बच्चों के अनुभवों के आधार पर उनसे बातचीत करें– o क्या आपने किसान को बीज बोते देखा है? o खेती करने में और किन–किन चीजों की आवश्यकता पड़ती है ? • खेतों में ले जाकर भ्रमण कराना और उस मौसम के फसलों के बारे में चर्चा करना तथा खेती में सिंचाई एवं खाद की अवश्यकता के बारे में बताना। • चित्र के माध्यम से प्राचीन और वर्तमान समय के खेती की प्रक्रिया में अन्तर को स्पष्ट करना।	• मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • उपकरणों की सूची बनाकर। • भ्रमण के दौरान बातचीत करके बच्चों की समझ के आधार पर एवं उनसे प्राप्त भ्रमण आख्या के आधार पर। • चित्रों की समझ के आधार पर।
• पेड़–पौधे अपना भोजन स्वयं बनाते हैं, इससे अवगत कराना।	• पेड़–पौधों का भोजन। • पेड–पौधे के लिए आवश्यक पानी, मिट्टी	• बच्चों के अनुभव के आधार पर बातचीत करें जैसे– o क्या पेड़–पौधे अपना भोजन स्वंय	• प्रश्नोत्तर द्वारा।

	(खाद) और हवा।	बनाते हैं ? o पेड–पौधों को भोजन बनाने के लिए क्या–क्या आवश्यक हैं ? o क्या आप जानते हैं कि कुछ पेड़–पौधे कीड़े खाते है?	
	• कीड़े खाने वाले पौधे (कीटभक्षी पौधे), जैसे– पिचर पौधे (Pitcher plant), वीनस फ्लाई ट्रैप (Venus Fly trap),	• बच्चों को चित्र के माध्यम से कीड़े खाने वाले पौधों जैसे– कीटभक्षी पौधे को दिखाएँ और चर्चा करें कि ये पौधे कीड़ क्यों खाते हैं ?	• कीटभक्षी पौधो के चित्र दिखाकर उनकी जानकारी के आधार पर।
• खाद्य श्रृंखला की समझ विकसित करना।	• खाद्य–श्रृंखला की सामान्य जानकारी। vkok l	• चित्र एवं गतिविधि द्वारा खाद्य–श्रृंखला की प्रक्रिया को स्पष्ट करें।	• बच्चों के क्रियाकलाप एवं उनकी समझ के आधार पर।
• क्षेत्रीय एवं जलवायु की विभिन्नता के आधार पर आवास में विभिन्नता की जानकारी देना।	• क्षेत्रीय एवं जलवायु की विभिन्नता के आधार पर आवास में विभिन्नता (मैदानी, बर्फ, रेगिस्तान, समुद्री किनारा आदि।	• चित्र द्वारा विभिन्न स्थलों, जैसे–पहाड़, रेगिस्तान, मैदानी, समुद्री आदि के आवासों की विभिन्नता को स्पष्ट करना। • बच्चों से विभिन्न प्रकार के आवासों के चित्र (भौगोलिक आधार पर) बनवाएँ। • विभिन्न स्थलों के घरों के चित्र एकत्र कराएं। • बच्चों से विभिन्न प्रकार के घरों पर उनको जानकारी को लेते हुए चर्चा करें– क्या तुमने चित्रों में, टी0वी0 पर या घूमने में पहाड़ों या रेगिस्तान में बने घरों को देखा है ? • इनके घरों में क्या अन्तर हैं ?	• चित्र दिखाकर बच्चों के उत्तर के आधार पर। • बच्चों द्वारा बनाए चित्रों का अवलोकन करके। • संकलित चित्रों को देखकर। • मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • पहाड़ के घर और अपने घर के अन्तर के विषय में लिखो।
• एक दूसरे के साथ रहने से आपसी सामन्जस्य की भावना विकसित करना। • गाँव, कस्बा, कॉलोनी, पास–पड़ोस के	• एक–दूसरे के साथ रहने की एवं एक–दूसरे की जरूरतें पूरी करने की आवश्यकता हेतु गाँव, कस्बा, कॉलोनी एवं पास–पड़ोस का महत्व।	• विभिन्न प्रकार के दृष्टान्तों द्वारा गाँव एवं कॉलोनी में एक साथ रहने के महत्व की समझ विकसित करें। बच्चों से बातचीत करें– • हम लोग गाँव, कस्बे एवं कॉलोनी में साथ में क्यों रहते है? इससे क्या लाभ होता है ?	

महत्व की समझ विकसित करना। • आपदाएँ एवं उसके प्रबन्ध की समझ विकसित करना।	• आपदा एवं उसके प्रकार, जैसे– सूखा, भूकम्प, आग, आँधी, बिजली गिरना आदि। • आपदा के दौरान शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं भौतिक क्षति। • सामुदायिक सहयोग, जैसे– हॉस्पिटल, पुलिस स्टेशन, एम्बुलेन्स, अस्थायी आवास, फायर स्टेशन, प्राथमिक चिकित्सा आदि।	• बच्चों को अपके गाँव के विषय में लिखने को कहें। बच्चों से चर्चा करें– o क्या कभी आपने गाँव में सूखा या बाढ़ आया है? o उस समय गाँव के लोग कैसा अनुभव कर रहे थे? o आपदाओं के समय क्या–क्या हानि हुई उन्होंने अपने बचाव के लिए क्या–क्या इन्तजाम एवं क्रियाकलाप किए ? o ऐसे समय में कौन–कौन लोग मदद करने आए? o हॉस्पिटल, एम्बुलेंस एवं पुलिस स्टेशन की क्या उपयोगिता हैं ? • चित्रों, समाचार पत्रों के माध्यम से आपदाओं के विषय में चर्चा करें।	• बच्चों के अनुभवों को सुनकर एवं समझकर मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • आपदाओं के सम्बन्ध में उनकी समझ के आधार पर।
• प्याऊ एवं विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर पानी की व्यवस्था से अवगत कराना। • सिंचाई के विभिन्न साधनों से परिचित कराना। • विभिन्न प्रकार के फसलों में पानी की मात्रा की जानकारी देना। • भूमिगत जल के पुनर्भरण से अवगत कराना।	t y • जगह–जगह लोगों द्वारा प्याऊ की व्यवस्था। • विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर पानी की व्यवस्था जैसे– अस्पताल, रेलवे स्टेशन, पेट्रोलपम्प आदि। • सिंचाई के विभिन्न साधन (ट्यूबवेल, नहर आदि)। • विभिन्न प्रकार के फसलों के लिए पानी की मात्रा। • भूमिगत जल का पुनर्भरण	• विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर पानी की व्यवस्था के विषय में बाचचीत करें जैसे– • रेलवे स्टेशन हॉस्पिटल एवं पेट्रोलपम्प पर पानी की क्या व्यवस्था होती है? • सड़क पर प्याऊ की व्यवस्था क्यों की जाती है? • बच्चों से चर्चा करें कि किसान सिंचाई के लिए पानी की कौन–कौन सी व्यवस्था करते हैं? • भ्रमण द्वारा किसानों से विभिन्न फसलों में प्रयुक्त पानी की मात्रा के विषय में बातचीत करें। • चित्रों के माध्यम से भूमिगत जल के पुनर्भरण के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करें। जैसे वर्षा जल, तालाब।	• प्रश्नोत्तर विधि द्वारा। • चर्चा के दौरान बच्चों की समझ एवं उत्तर के आधार पर। • भ्रमण के दौरान बच्चों की समझ एवं उत्तर के आधार पर। • चित्राधारित प्रश्नोंत्तर के आधार पर।

• पानी की घुलनशीलता से परिचित कराना। • प्रदूषित जल से होने वाली बिमारियों एवं बचाव की जानकारी देना।	• पानी में घुलनशील एवं अघुलनशील पदार्थों का अवलोकन एवं वर्गीकरण। • पानी एवं तेल का मिश्रित न होना। • तरल वस्तुओं की माप । • स्थिर और बहता जल। • जल प्रदूषण के कारण और उससे सम्बन्धित बिमारियाँ (जैसे मलेरिया, हैजा, पेचिश, टॉयफाइड आदि) एवं बचाव के उपाय।	• प्रयोग द्वारा पानी में घुलनशीलता एवं अघुलनशीलता को स्पष्ट करे जैसे– • पानी में, चीनी एवं नमक को घोलकर दिखाना कि पानी व नमक घुलनशील हैं। • पानी में बालू या तेल डालना एवं दर्शाना कि बालू व तेल अघुलनशील है। • भ्रमण द्वारा स्थिर एवं बहता जल का अवलोकन कराकर एवं चर्चा करें। भ्रमण द्वारा जल प्रदूषण के कारणों को दर्शाएँ तथा बातचीत करें– o हम ऐसे कौन से कार्य करते हैं जो जल को प्रदूषित करते हैं? • प्रदूषित जल से होने वाली बिमारियों के विषय में ध्यान इंगित कराएं। • अपने गाँव में हैजा, पेचिश, टायफाइड पर बातचीत करें।	• प्रयोग के दौरान घुलनशीलता व अघुलशीलता की बच्चों के समझ के आधार पर। • भ्रमण के दौरान चर्चा परिचर्चा द्वारा। • बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर।
• वाहनों में प्रयुक्त ईधनों की जानकारी देना।	;k=k • वाहनों में प्रयुक्त ईंधन, डीजल, पेट्रोल एवं सी0एन0जी0। • वाहनों के प्रकार के अनुसार ईंधन का प्रयोग जैसे– कार, स्कूटर, ट्रैक्टर, बस एवं ट्रक।	• चर्चा–परिचर्चा द्वारा वाहनों जैसे– कार, स्कूटर, ट्रैक्टर, बस एवं ट्रक आदि में विभिन्न प्रकार के ईंधनों के प्रयोग को बताएँ • प्रोजेक्ट कार्य के अन्तर्गत डीजल एवं पेट्रोल के मूल्य का पता कराएं। • प्रदूषण मुक्त ईंधन के विषय में बातचीत करें। • भ्रमण द्वारा वाहनों द्वारा निकलते धुएँ का अवलोकन कराएँ तथा स्पष्ट करें कि सी0एन0जी0 द्वारा प्रदूषण कम होता है।	• प्रश्नोत्तर द्वारा। • प्रोजेक्ट कार्य का अवलोकन करके। • चर्चा–परिचर्चा के आधार पर। • भ्रमण के उपरान्त सम्बन्धी प्रश्नपूछ कर।
• बीजों से पौधों के बनने की प्रक्रिया की समझ विकसित करना।	i:M&i k/k& • बीज का अंकुरण, बीज के अंकुरण हेतु उचित परिस्थितियाँ जैसे– हवा, धूप, पानी आदि।	• बीज की संरचना एवं बीजों द्वारा नए पौधों के उगने होने का अवलोकन कराएं। • बीजों के अंकुरण हेतु आवश्यक परिस्थितियाँ जैसे– हवा, पानी तथा उचित ताप की जानकारी हेतु प्रयोग कराएं, जैसे– चने, मूँग, सेम के बीजों को रात में पानी में भिगोकर रखें, दूसरे	• बच्चों के अवलोकन एवं समझने की क्षमता के आधार पर। • बच्चों द्वारा किए गए प्रयोग की समझ के आधार पर।

		दिन एक कपड़े में बांध कर लटका दें। हवा, पानी तथा उचित ताप के कारण बीच अंकुरित हो जाता है।	
• अच्छे एवं खराब बीजों की पहचान कराना।	• अच्छे एवं खराब बीजों की पहचान।	• अच्छे और खराब बीजों की पहचान हेतु प्रयोग जैसे एक शीशे के गिलास भरे पानी में बीजों को डाल दें, जो खराब बीज होंगे वे ऊपर आ जाएगा और अच्छा बीज नीचे तली पर बैठ जाएगा।	• प्रयोग की समझने के आधार पर।
• प्रदेश की शासन व्यवस्था की समझ विकसित करना।	çns'k dh 'kklu 0;oLFkk • राज्य पाल एवं मंत्रिपरिषद की नियुक्ति एवं उत्तरदायित्व। • विधानसभा एवं विधानपरिषद का गठन।	• बच्चों से चर्चा करें– क्या चुनाव के समय लोगों को वोट डालते देखा है ? o वोट क्यों डालते हैं ? o वोट डालकर किसका चुनाव किया जाता है? • विधानसभा एवं विधानपरिषद का चित्र दिखाकर उसके कार्यप्रणाली एवं महत्व पर चर्चा करना।	• बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आधार पर। • चित्राधारित प्रश्नोत्तर के आधार पर।

lektki;kxh mRiknd dk;l ¼dk;kuHko½

lkekU; mnn';

Formatted: Bullets and Numbering

- शिशुओं को विभिन्न आकृतियों का ज्ञान कराना।
- श्रम ओर श्रमिक के प्रति सम्मान का विकास।
- बच्चों की स्वाभाविक प्रवृत्तियों को विकसित करना।
- बच्चों को रचनात्मक कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करना।
- कलात्मक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करना।
- बच्चों में सौन्दर्य बोध भाव उत्पन्न करना तथा जागरुकता पैदा करना।
- प्रकृति एवं जीवों के प्रति प्रेम जागृत करना।
- स्मृति शक्ति का विकास करना।
- स्वच्छता का संस्कार देना तथा विविध पर्वों एवं उत्सवों का ज्ञान कराना।
- स्वतंत्र भाव प्रकाशन करने की क्षमता का विकास करना।
- कल्पना शक्ति का विकास करना।
- भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्र के प्रतीक चिह्नों का ज्ञान कराना तथा उनके प्रति आदर भाव विकसित करना।
- जीवन में व्यवस्था प्रयत्न का संस्कार उत्पन्न करना।
- अपने हाथों से कार्य करने की क्षमता का विकास करना तथा किये गये कार्य से गर्व की अनुभूति कराना।
- बच्चों के संतुलित व्यक्तित्व एवं चरित्र का विकास करना।
- बालक को कार्य की दुनिया एवं समाजसेवा की भावना से परिचित कराना।
- कोई भी वस्तु बेकार नहीं है। 'कबाड़ से जुगाड़' बनाने का सिद्धान्त प्रतिपादित करना।

d{kk 1 rFkk 2 fo"k; %& dk;kuHko@lektk;kxh mRiknu dk;Z

çdj.k	mi&çdj.k	fØ;k&dyki	eY;kadu
Ñf"k rFkk i'kikyu& • कृषि तथा पशुपालन से हमारी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति। • परिवेश में पाये जाने वाले कीट–पतंगों एवं पक्षियों की पहचान तथा उनसे हानि एवं लाभ। अधिभार 10%	• d{kk 1& बीजों की पहचान, विभिन्न प्रकार के बीजों को बुवाई के लाभ, पौध लगाना, पपीता, टमाटर, गोभी, मिर्च आदि। परिवेश के कीट–पतंग एवं पशु–पक्षियों की पहचान। • d{kk 2&अनाज, दलहन,तिलहन, प्रचलित फूलों एवं पौधों की पहचान। कृषि औजार–खुर्पी, दरांती, कुदाल, हैण्ड हो की पहचान एंव उपयोग। रोपाई करना–पपीता, टमाटर आदि। परिवेश के कीट–पतंगे एवं पशु–पक्षियों से लाभ तथा हानि की जानकारी।	• विभिन्न प्रकार के बीजों का संग्रह। • बीज बोना, पौधा लगाना। • बीज से पौधा तैयार करना। • परिवेश भ्रमण से जानकारी का संग्रह तथा सूची बनाना। • वर्गीकरण।	• मौखिक प्रश्न • निरीक्षण/अभिव्यक्ति • क्रियाओं का प्रेषण
LoPNrk ¼O;fDrxr ,o fo|ky;½ • स्वच्छता अच्छे स्वास्थ्य एवं शुद्ध पर्यावरण का प्रतीक। अधिभार 10%	• स्वस्थ्य आदतों एवं दैनिक क्रियाओं की जानकारी। • शारीरिक सफाई तथा संवेदनशील अंगों की पहचान। • विद्यालय परिवेश तथा कक्षा–कक्ष की सफाई	• गीत,कहानी, अभिनय। • वार्तालाप • चित्र एवं पोस्टर • अंगों की सफाई का प्रेक्षण तथा अभ्यास (शिक्षक/छात्र द्वारा) • कूड़ेदान का प्रयोग।	• मौखिक प्रश्न • निरीक्षण
Hkkstu • भोजन अच्छे स्वास्थ्य के लिये उपयोगी। अधिभार 10%	• भोजन के सामान्य पदार्थ–अनाज, दाल, साग–सब्जी, फल, दूध आदि • खाने–पीने के बर्तनों की सफाई। • भोजन पकाने में सहायता। • रसोई वाटिका में बड़ों की सहायता।	• वार्तालाप तथा निरीक्षण द्वारा विभिन्न प्रकार के भोजन की पहचान (प्रत्यक्ष एवं चित्रों द्वारा) • भोजन परोसना। • बरतन की सफाई करना। • भोजन पकाने में छात्रों का सहयोग लें।	• मौखिक प्रश्न • निरीक्षण
vkJ;& • जीवन की सुरक्षा के लिये आवास की आवश्यकता है। (मानव, पशु एवं पक्षी) अधिभार 15%	• घर बनाने की आवश्यकता एवं प्रकार। • घर बनाने के विभिन्न पदार्थ। • घर की सफाई तथा वस्तुओं का उचित रख–रखाव। • कागज के साधारण खिलौने बनाना–फिरकी, जहाज, नाव।	• वार्तालाप • माडल बनाना • खिलौने बनाना।	• मौखिक प्रश्न • निर्मित वस्तुओं का मूल्यांकन।

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

oL=& मौसम के अनुकूल शारीरिक सुरक्षा हेतु वस्त्रों की आवश्यकता। अधिभार 15%	• वस्त्र की आवश्यकता। • छोटे वस्त्र जैसे–रुमाल, मोजा, बनियान, अण्डरवियर आदि नित्य धोना। • वस्त्रों का उचित रख–रखाव।	• कविता, कहानी, अभिनय, उदाहरण एवं वार्तालाप। • वस्त्रों की सफाई तथा उचित ढंग से रखना।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाकलापों का निरीक्षण
IkLÑfrd dk;Øe ,o eukjatu& • मनोरंजनात्मक क्रियाकलाप एवं खुशहाली के लिये उनका महत्व। अधिभार 20	• बाल–गीत, भाव गीत तथा नृत्य में भाग लेना। • पर्वों/उत्सवों की जानकारी तथा उनकी तैयारी। • प्रचलित फूलों की पहचान तथा फूलों की माला तथा झण्डियाँ बनाना।	• गीत तथा नृत्य। • पर्वों/उत्सवों का आयोजन तथा स्थान चयन। • फूलों से माला, झण्डियाँ, जंजीर आदि बनाना।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण
Ikekftd dk;Z ,o Lekt lok& • बच्चों का समाज के साथ सम्बन्ध तथा सामंजस्य की आवश्यकता। अधिभार 20%	• शिष्टाचार। • स्वालम्बन (स्वयं कार्य करने की आदत) • रास्ते में पड़े काँच के टुकड़ों, काँटों को हटाना। • पारस्परिक बंधुत्व के भाव को बढ़ाना।	• कविता, कहानी, अभिनय, कठपुतली। • कक्ष तथा विद्यालय प्रांगण की सफाई का अभियान। • भ्रमण (परिवेश) • अनुपयोगी वस्तुओं से कूड़ेदान बनाना तथा प्रयोग करना।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण

d{kk 3 fo"k;& dk;kuHko@lektki;kxh mRikn dk;

çdj.k	mi&çdj.k	fØ;k&dyki	eY;kdu
Ñf"k rFkk i'kikyu& • स्थानीय परिवेश के फूलों, फलों, वृक्षों, पशु, पक्षियों एवं कीट–पतंगों की उपयोगिता। अधिभार 10%	• क्षेत्र में प्रचलित फूलों एवं वृक्षों की पहचान। • विभिन्न प्रकार के उर्वरकों (खाद) की पहचान। • नर्सरी लगाना तथा कटिंग तैयार करना। • दुधारू पशु–जाति एवं गुण। • उपयोगी पशु एवं कीट पतंगों की पहचान। (पृष्ठ–2)	• भ्रमण एंव परिवेश के वृक्षों के फूलों एवं पत्तियों का संग्रह। • चित्र बनाना। • पौध लगाना तथा गमला तैयार करना। • मित्र पशु पक्षी एवं कीट पतंगों का वर्गीकरण/सूची बनाना।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण
LokLF; rFkk LoPNrk& • स्वास्थ्यप्रद क्रिया	• व्यक्तिगत शारीरिक स्वच्छता। • घर की आन्तरिक सफाई।	• अवलोकन (शिक्षक द्वारा) • शारीरिक स्वच्छता का निरीक्षण (बच्चों द्वारा)	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

तथा पर्यावरण की स्वच्छता का स्वस्थ जीवन में महत्व। अधिभार 10%	• फर्नीचर की सफाई टाट–पट्टी तथा कूड़ेदान का सही प्रयोग। (पृष्ठ–2)	• परिवेशीय स्वच्छता अभियान।	• आचार व्यवहार निरीक्षण।
Hkkstu& • जीवन की गुणवत्ता हेतु भोजन का महत्व। अधिभार 15%	• मौसम के अनुसार सब्जियाँ उगाना। • भोजन पकाने में सहयोग करना। • अपने जूठे बर्तन स्वयं साफ करना। • पौष्टिक आहार का प्रयोग। (पृष्ठ–1)	• भोजन पकाना तथा बर्तन साफ करना। • पौधों की देखभाल करना तथा सब्जी उगाना। • पौष्टिक पदार्थों की सूची बनाना।	• मौखिक प्रश्न • व्यवहार निरीक्षण
vkJ;& • आजीविका हेतु कार्य का महत्व। अधिभार 15%	• पास–पड़ोस के विभिन्न व्यवसाय। • अनुपयोगी वस्तु से उपयोगी वस्तु का निर्माण। • कोलाज, ठप्पा तथा रंगाई द्वारा सजावट। • मिट्टी के खिलौने (फल एवं मिठाईयों का माडल) (पृष्ठ–1)	• स्थानीय विभिन्न व्यवसायों का अवलोकन/निरीक्षण। • क्रियाओं का अवलोकन तथा चित्र बनाना।	• मौखिक प्रश्न • निर्मित वस्तुओं का मूल्यांकन।
oL=& • वस्त्रों की सुरक्षा एवं रख–रखाव का महत्व। अधिभार 20%	• सूत कातना, कपड़ों की मरम्मत, बटन टाँकना और अपने कपड़ों की सफाई तथा उचित रख रखाव। (पृष्ठ–1)	• वस्त्र धोना, मरम्मत करना, बटन टाँकना, सूत कातना। (तकली से)	• मौखिक प्रश्न • क्रियाकलापों का निरीक्षण • कृत कार्यों का मूल्यांकन।
IkLÑfrd dk;Øe ,oa euksjatu& • मनोरंजनात्मक क्रियाओं में प्रतिभागिता का खुशहाल जीवन में महत्व। अधिभार 15%	• पर्वों/उत्सवों की सजावट तैयारी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रतिभागिता। (पृष्ठ–2)	• पर्व/उत्सव की तैयारी तथा सजावट। • गीत, नृत्य, अभिनय में प्रतिभाग।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण
Lkkekftd dk;Z ,oa Lkekt lsok& • सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करना समाज के सदस्य का दायित्व। अधिभार 15%	• सड़क पर चलने के नियमों की जानकारी। • परिवेश की सफाई, असहायों की मदद, वृक्षारोपण जीवों की सुरक्षा, प्राथमिक चिकित्सा। (पृष्ठ–2)	• सफाई कार्य, श्रमदान, सामुदायिक कार्य तथा वृक्षारोपण। • अपाहिज/असहायों का प्राथमिक उपचार।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण • कृत कार्यों का मूल्यांकन।

d{kk 4 fo"k; %& dk;kuHko@ lektki;kxh mRikn dk;!

çdj.k	mi&çdj.k	fØ;k&dyki	eY;kdu
Ñf"k rFkk i'kikyu& • कृषि, पशुपालन तथा जीव–जन्तुओं से पौष्टिक आहार की प्राप्ति से जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि। अधिभार 10%	• बीज की मात्रा, बोवाई समय, विधि रासायनिक खाद का प्रयोग तथा गृह–वाटिका लगाना। • दुधारू पशुओं, जीव–जन्तुओं को चारा–दाना तथा पालन। • बडिंग एवं ग्राफ्टिंग (कलम तैयार करना) (पृष्ठ–2)	• बीज बोना तथा खाद पानी देना। • जीव–जन्तुओं तथा पशुओं की उचित देखभाल तथा आहार।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण • कृत कार्य का मूल्यांकन।
LokLF; rFkk LoPNrk& • परिवेश तथा शारीरिक स्वच्छता ही स्वस्थ जीवन का आधार। अधिभार 10%	• व्यक्तिगत सफाई, कपड़ों की सफाई, दैनिक वस्तुओं की सफाई एंव उचित रखरखाव। • कपड़े धोने का पाउडर तथा मंजन बनाना। • घर/विद्यालयी सफाई तथा कूड़े को गड्ढ़े में डालना। (पृष्ठ–2)	• शरीर तथा वस्त्रों की सफाई का निरीक्षण। • वस्तुओं को उचित ढंग से रखना। • मंजन तथा पाउडर बनाना। • कूड़े से कम्पोस्ट खाद तैयार करना। •	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण
Hkkstu& • पौष्टिक आहार, स्वस्थ शरीर जीवन की गुणवत्ता का आधार। अधिभार 15%	• मौसमी फलों, सब्जियों, अनाज के प्रयोग की जानकारी तथा अनाजों के उगाने की (पैदा करने) व्यावहारिक जानकारी। • पौष्टिक आहार, सरल रसोई वाटिका लगाने की जानकारी। • घरेलू पशुओं, जीव–जन्तुओं की देखभाल। (पृष्ठ–2)	• रसोई वाटिका में अनाज, फल,सब्जी उगाना। • पास के खेतों का निरीक्षण। • स्थानीय अनाजों, फलों, सब्जियों की सूची बनाना। • पशुओं, जीव–जन्तुओं की देखभाल।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण •
vkJ;& • विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों की पारस्परिक निर्भरता। अधिभार 15%	• समुदाय तथा स्कूल में विभिन्न प्रकार के चल रहे कार्यों का अवलोकन। • विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों की परस्पर निर्भरता को समझना। • विभिन्न वस्तुओं से पंखा, आसनी, खिलौने तथा गुलदस्ते बनाना। (पृष्ठ–3)	• क्रिया कलापों का अवलोकन। • भ्रमण। • पंखा, आसनी आदि बनाना।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण • कृत कार्यों का मूल्यांकन।
oL=& • वस्त्रों के प्रकार, देखभाल एवं उनकी उपयोगिता। अधिभार 20%	• वस्त्रों की सफाई, उचित प्रयोग, रख रखाव, रूमाल रखने की आदत, वस्त्रों की मरम्मत। • गुड़ियों/कठपुतलियों के कपड़ों को काटना तथा सिलना। (पृष्ठ–3)	• कपड़ों की धुलाई तथा उचित ढंग से रख रखाव। • कपड़ा काटना व सिलना।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाकलापों का निरीक्षण • कृत कार्यों का मूल्यांकन।
IkaLÑfrd dk;Øe	• विद्यालय में सांस्कृतिक	• पर्व/उत्सव मनाना।	• मौखिक प्रश्न

,oa euksjatu& • मनोरंजनात्मक क्रिया कलाप, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कार्यक्षमता में वृद्धि तथा खुशहाल जीवन हेतु इनका महत्व। अधिभार 20%	कार्यक्रम की तैयारी, कार्यक्रमों में सहभागिता, अभ्यास, सजावट। • प्रदर्शनी, पर्यटन, पिकनिक, जन्मदिन तथा पर्व/उत्सव। (पृष्ठ–3)	• सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना। • बधाई पत्र बनाना, भेजना।	• क्रियाओं का निरीक्षण • कृत कार्यों का मूल्यांकन।
lkekfjd dk;Z ,oa lektlsok& • समाज में रहने वाले लोगों में परस्पर सौहार्द का महत्व। अधिभार 10%	• स्त्रियें का आदर। • पास–पड़ोस की सफाई, वृक्ष लगाना तथा देखभाल। • असहायों की मदद करना। • भोजन बनाना, परोसना तथा स्थान की स्वच्छता। (पृष्ठ–2)	• स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, सामाजिक कार्यों में बड़ों का सहयोग, चाक एवं मूर्ति निर्माण (स्थानीय सुविधाओं के अनुसार मिट्टी एवं प्लास्टर आफ पेरिस)	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण • कृत कार्यों का मूल्यांकन।

d{kk 5 fo"k; %& dk;kuHko@lektksi;ksxh mRiknu dk;Z

çdj.k	mi&çdj.k	fØ;k&dyki	eY;kadu
Ñf"k rFkk i'kikyu& • कृषि, तथा जीव–जन्तु पालन में घरेलू उद्योग–धन्धों के प्रयोग से जीवन में गुणवत्ता वृद्धि। अधिभार 10%	• मुर्गी पालन, बकरी पालन, कीड़ों से रेशम तैयार करना, मशरूम उगाना, मधुमक्खी पालन, मछली पालन, फल संरक्षण। (पृष्ठ–2)	• उद्योग से सम्बन्धित अभ्यास • चित्र, चार्ट प्रदर्शनी।	• मौखिक प्रश्न • क्रियाओं का निरीक्षण • उत्पादित वस्तु की उत्कृष्टता का मूल्यांकन।
LokLF; ,oa LoPNrk& • पर्यावरण प्रदूषण से स्वस्थ शरीर की सुरक्षा। अधिभार 10%	• स्वच्छ तथा स्वस्थ आदतें। • घर तथा परिवेश की सफाई। • जल, वायु,मृदा, प्रदूषण–कारण एवं निवारण। • मंजन,बूटपॉलिश बनाना तथा प्रयोग। (पृष्ठ–2)	• अभिनय, कहानी, गीत, भ्रमण, मॉडल, सफाई अभियान। •	• मौखिक प्रश्न • लिखित प्रश्न • कृत कार्यों का निरीक्षण। •
Hkkstu& • भोजन के आवश्यक तत्व स्वस्थ शरीर हेतु आवश्यक। अधिभार 15%	• भोजन की आवश्यकता, सस्ता पौष्टिक आहार, भोजन पकाने, परोसने, उचित ढंग से रखने में सहयोग। • उचित ढंग से भोजन करना, भोजन आचरण। • रसोई वाटिका लगाना। (पृष्ठ–3)	• चित्र, चार्ट, कहानी, गीत अभिनय। • स्थानीय उपलब्ध सस्ते खाद्य पदार्थों के पौष्टिक तत्वों की सूची बनाना। •	• मौखिक प्रश्न • लिखित कार्य। • प्रस्तुत कार्यों का निरीक्षण मूल्यांकन। •
vkJ;& • स्वास्थ्य पर स्वच्छ तथा सुन्दर परिवेश का	• परिवेश के विभिन्न व्यवसायों का निरीक्षण। • सूत, सुतली, गत्ता तथा परिवेश से प्राप्त होने वाली	• चित्र, मॉडल, अनुपयोगी वस्तु से उपयोगी एवं सजावट का सामान बनाना, चाक, मूर्ति,	• लिखित एवं मौखिक प्रश्न • वार्तालाप। • निरीक्षण।

प्रभाव। अधिभार 10%	सामग्री से सजावट एवं उपयोगी वस्तु बनाना। (पृष्ठ–2)	अगरबत्ती, मोमबत्ती तथा फूलों की माला बनाना। किताबों पर कवर चढ़ाना, जिल्दसाजी तथा लिफाफा आदि बनाना।	• कृत कार्यों का मूल्यांकन।
oL=& • उचित देखभाल से वस्त्र अधिक टिकाऊ। अधिभार 20%	• विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की देखभाल, धुलाई मरम्मत, कढ़ाई, रंगाई आदि प्रयोग। • साधारण ऊन से बुनाई। (पृष्ठ–3)	• वार्तालाप • वस्त्रों की धुलाई, कढ़ाई, रंगाई, ऊन से बुनाई।	• मौखिक प्रश्न • कृत कार्यों का मूल्यांकन। • निर्मित वस्तुओं का मूल्यांकन।
I kLÑfrd dk;Øe ,o eukjatu& • मनोरंजनात्मक कार्यक्रम का आयोजन, कार्यक्षमता में वृद्धि तथा प्रसन्नता व्यक्त करने का माध्यम। अधिभार 20%	• सामुदायिक कार्य एवं समाजसेवा राष्ट्रीय एकता, नारी उत्थान, शिशुओं की देखभाल आदि। पर्वों/उत्सवों पर उचित सजावट एवं सामानों में समायोजित व्यवहार। (पृष्ठ–3)	• पर्वों का आयोजन, गीत, कहानी, अभिनय आदि का अभ्यास।	• कार्य का निरीक्षण • प्रतियोगिता।
I kenkf;d dk;I ,o I ekt I ok& • दायित्व निर्वाह से समुदाय के विकास में सहायता। अधिभार 15%	• सोख्ता गड्ढे मूत्रालय परिवेश की सफाई, सड़कों के गड्ढे भरना। मलिन बस्तियों का भ्रमण एवं स्वच्छता अभियान। (पृष्ठ–2)	• स्वच्छता अभियान,भ्रमण, सोख्ता गड्ढा बनाना।	• कार्य का निरीक्षण • कृत कार्यों का मूल्यांकन।

lektki;kxh mRiknd dk;l

ekfld foHkktu

ekg	d{kk 1 o 2	d{kk 3	d{kk 4	d{kk 5
जुलाई	• कृषि तथा पशुपालन	• कृषि	• कृषि	• कृषि
अगस्त	• कीट पतंगे तथा पक्षियों की पहचान	• पशुपालन	• पशुपालन	• पशुपालन
सितम्बर	• स्वच्छता • सत्र परीक्षा	• स्वास्थ्य • सत्र परीक्षा	• स्वास्थ्य • सत्र परीक्षा	• स्वास्थ्य • सत्र परीक्षा
अक्टूबर	• भोजन	• स्वच्छता	• स्वच्छता • घर विद्यालय की सफाई	• स्वच्छता
नवम्बर	• आश्रय • सत्र परीक्षा	• जीवन की गुणवत्ता एवं भोजन • सत्र परीक्षा	• पौष्टिक आहार • सत्र परीक्षा	• भोजन के आवश्यक तत्व • सत्र परीक्षा
दिसम्बर	• वस्त्र–मौसम के अनुकूल • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• पास–पड़ोस के विभिन्न व्यवसाय • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• व्यवसाय एवं पारस्परिक निर्भरता • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• सूत, सुतली गत्ता से सजावट • अर्द्धवार्षिक परीक्षा
जनवरी	• शारीरिक सुरक्षा हेतु वस्त्र	• वस्त्रों की सुरक्षा	• वस्त्रों की सफाई व देखभाल	• वस्त्र–कढ़ाई, रंगाई आदि
फरवरी	• सांस्कृतिक कार्यक्रम • सत्र परीक्षा	• सूत कातना, कपड़ों की मरम्मत • सत्र परीक्षा	• गुड़ियों एवं कठपुतलियों के कपड़े काटना व सिलना • सत्र परीक्षा	• सांस्कृतिक कार्यक्रम • सत्र परीक्षा
मार्च	• सांस्कृतिक कार्यक्रम का महत्व	• सांस्कृतिक कार्यक्रम	• सांस्कृतिक कार्यक्रम	• सजावट एवं सामानों में ताल–मेल
अप्रैल	• सामाजिक कार्य	• सड़क पर चलने के नियमों की जानकारी	• सामुदायिक कार्य	• सामुदायिक कार्य
मई	• समाज सेवा • वार्षिक परीक्षा	• वार्षिक परीक्षा	• वार्षिक परीक्षा	• वार्षिक परीक्षा
जून	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश

dyk

dyk D;k g \

प्रत्येक कार्य में सौन्दर्य उत्पन्न करना ही कला है। कला के माध्यम से ही प्रत्येक की कल्पना शक्ति एवं प्रकृति प्रेम से परिचय होता है। यदि हम अपने चारों ओर दृष्टि डालते हैं तो हमें हर जगह कला की अनुभूति होती है। फूलों के रंग में, पत्तियों की बनावट में, तितलियों में, आसमान में चारों ओर फैले बादलों, चाँद, सूरज, तारे आदि प्राकृतिक कला से परिपूर्ण हैं। प्राकृतिक ही नहीं वरन् मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष पर कला का प्रभाव है। घर को व्यवस्थित करने में भोजन पकाने व परोसने में, दूसरों के प्रति उचित व्यवहार आदि सभी में कला समाहित है। सुन्दर एवं व्यवस्थित ढंग से किसी चीज की आकर्षक प्रस्तुति ही कला है।

dyk dk f'k{k.k D;k \

प्रत्येक बच्चे के अंदर रचनात्मक प्रतिभा छिपी होती है इस प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम कला है बच्चे भाषा, प्रकृति के रूपों की खोज, स्वंय की व अन्य की समझ आदि को कला के माध्यम से आसानी से विकसित कर सकते हैं। कला की प्रकृति ही ऐसी होती है कि सभी बच्चे उसमें भागीदारी कर सकते हैं। प्रकृति के प्रति श्रद्धा एवं उसके सौन्दर्य की अनुभूति करके स्वयं में कल्पना शक्ति को विकसित कर सकते हैं। प्रकृति में कोई भी वस्तु बेकार नहीं है परिवेश एवं पर्यावरण के प्रति लगाव उत्पन्न करनें में राष्ट्रीय एकता पर्यावरण संरक्षण शिक्षा एवं सामाजिक जागृति उत्पन्न करने में कला सहायक होती है। यह एक ऐसा माध्यम है जो बच्चों को मनोरंजन के साथ–साथ जीविकोपार्जन का साधन भी प्राप्त कराती है, इस प्रकार बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु कला का शिक्षण अत्यावश्यक है।

dyk dk f'k{k.k dl \

अन्य विषयों की भाँति बच्चों में कला सम्बंधी जागरूकता व रुचि उत्पन्न करने के लिये सारे सम्भावित संसाधन एवं अपनी ऊर्जा लगा देनी चाहिये। बच्चे घर एवं बाहर की प्राकृतिक वस्तुओं का अवलोकन करा कर उनमें कला के प्रति रुचि उत्पन्न करें। परिवेश से सजावट संबंधी वस्तुओं का संकलन कर सुन्दर वस्तुओं का निर्माण एवं सौन्दर्यानुभूति कराएँ। धागे के गुच्छे कागज कपड़ों की पोटली द्वारा रंगों की विधि से परिचित करायें। उत्सवों पर्वों, समारोहों पर विद्यालय एवं कक्षा को सुन्दर एवं व्यवस्थित ढ़ंग रखने के लिए रंगीन कागज को विभिन्न आकारों में काटकर उनका प्रयोग साज–सज्जा में करवायें।

इस प्रकार शिक्षा जीवन में कला के महत्व को समझते हुए बच्चों के अन्दर उनकी रचनात्मक प्रतिभा को पहचानें और उनकी प्रतिभा को विकसित करने के लिए पर्याप्त अवसर एवं सहयोग प्रदान करें।

d{kk 1 rFkk 2

l Eck/k	mi l Eck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
सौन्दर्यानुभूति की क्षमता, सुन्दर वस्तुओं से सजावट। अधिभार 15%	• स्थानीय परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं जैसे–पत्थर, फूल, पत्ती, चिड़ियों के पंख, सीपियों आदि का संकलन। (पृष्ठ–1)	• संकलित वस्तुओं द्वारा सुन्दर, सुसज्जित वस्तुओं का निर्माण कराना। • वस्तुओं को व्यवस्थित ढग से रखना तथा स्वयं (छात्र) को सुन्दर ढंग से व्यवस्थित रहना। • घर–बाहर विभिन्न प्रकार की सुन्दर वस्तुओं का संकलन कराना।	• छात्रों की रुचि, व्यवहार तथा रहन–सहन के निरीक्षण द्वारा मूल्यांकन।
रंग ज्ञान अधिभार 20%	• रंगीन कपड़ों की कतरन, कागज द्वारा मुख्य रंगों की पहचान। (पृष्ठ–1)	• धागे के गुच्छे, कागज, कपड़ों की पोटली द्वारा रंगीन धब्बे डालकर आलेखन बनवाना।	• स्थानीय परिवेश (प्रकृति) में उपलब्ध फूल–पत्तियों के रंगों की पहचान कराकर विविध रंगों के ज्ञान का प्रश्नोत्तर द्वारा मूल्यांकन।
रेखाओं तथा विविध आकारों का ज्ञान। अधिभार 20%	• सरल रेखा, वक्र रेखा तथा बलदार रेखाओं का ज्ञान कराना। (पृष्ठ–1)	• रंगीन कागज को विभिन्न आकारों में काटकर इस प्रकार चिपकाना जिससे कि वह कोई निश्चित आकार ले ले। जैसे–बैगन, सेब, पतंग, तिरंगा, झण्डा, घर, जोकर, गुड्डा आदि	• विभिन्न प्रकार के फल–फूल, खेत तथा घरेलू आकारों की पहचान कराना।
स्वतंत्र भाव प्रकाशन अधिभार 20%	• सैण्ड ट्रे का प्रयोग • गीली मिट्टी से विभिन्न आकार बनाना जैसे–गोली, त्रिभुजाकार, वर्गाकार तथा इनको रंगना। (पृष्ठ–1)	• कक्षा एवं उसके बाहर की प्राकृतिक वस्तुओं का निरीक्षण कराना। • श्यामपट्ट अथवा स्लेट पर स्मृति चित्रण तथा कहानी चित्रण कराना।	• छात्र द्वारा कार्य में रुचि एवं उत्साह का निरीक्षण। • निरीक्षण द्वारा मूल्यांकन।
बेकार वस्तुओं को कलात्मक रूप देना तथा सजावट की वस्तुओं का निर्माण।	• पुराने समाचार पत्र, पुरानी पत्रिकाओं एवं कैलेण्डरों के चित्र काटकर	• छात्रों द्वारा एकत्रित वस्तुओं को कलात्मक ढंग से सजाना। • छात्रों से गुड्डा, बिल्ली, खरगोश आदि का निर्माण	• निर्मित वस्तुओं का स्वयं छात्रों द्वारा मूल्यांकन कराना एवं निरीक्षण करना।

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

अधिभार 25%	कोलॉज का कार्य कराना। • रूई, बिन्दी, चूड़ी के टुकड़े सनई, घास आदि को कलात्मक रूप देना। • सूखे रंगीन फूलों की पंखुड़ियों, पत्तियों , बीजों अनाज के दानों एवं पेन्सिल की छीलन को कागज पर चिपका कर विभिन्न आलेखन एवं आकृति बनाना। (पृष्ठ–2)	कराना। • छात्रों से विभिन्न आकृतियों का निर्माण कराना।	• निरीक्षण द्वारा मूल्यांकन।

d{kk 3

lEck/k	mi lEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
परिवेश में प्राप्त सामग्री द्वारा सजावट तथा सौन्दर्य की अनुभूति। अधिभार 15%	• स्थानीय परिवेश में प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन कराना। • परिवेशीय सामग्री का संकलन कराना। • उपयोगी वस्तुओं को व्यवस्थित एवं सजाकर रखना। • विविध पर्वो, उत्सवों, समारोहों पर सजावट कराना। (पृष्ठ–1)	• संकलित वस्तुओं का प्रदर्शन सुव्यवस्थित ढंग से कराना। • परिवेश से सजावट सम्बन्धी वस्तुओं का संकलन कर सुन्दर वस्तुओं का निर्माण एवं सौन्दर्यानुभूति कराना।	• निर्मित वस्तुओं का निरीक्षण एवं मूल्यांकन
रंग–ज्ञान अधिभार 25%	• मुख्य (प्रथम) रंगों एवं मिश्रण (द्वितीय) रंगों का ज्ञान कराना। (पृष्ठ–1)	• विभिन्न वस्तुओं जैसे– ब्रश, धागा, दातौन आदि की सहायता से रंग भरवाना। • विभिन्न प्रकार के ठप्पों द्वारा छपाई कराना जैसे आलू, भिण्डी, पत्ती, प्याज आदि की सहायता से आकृतियाँ बनवाना।	• निर्मित वस्तुओं का निरीक्षण एवं मूल्यांकन। • छात्रों द्वारा किये गये कार्यों की जाँच।
रेखाओं तथा	• विभिन्न प्रकार की	• विभिन्न आकारों के रंगीन कागज	• छात्रों द्वारा किये

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

आकारों का ज्ञान कराना। अधिभार 10%	रेखाओं तथा आकृतियों की रचना कराना। (पृष्ठ–1)	काटकर चित्र निर्माण एवं अल्पना, आलेखन बनवाना। • फूल पत्तियों तथा ज्यामितीय आलेखन बनवाकर उसमें रंग भरवाना। • थर्माकोल अथवा गत्ते की सहायता से 'जयहिन्द' 'स्वागतम्' आदि का अक्षरांकन कराना। • बधाई–पत्र तैयार कराना। जैसे – नववर्ष, होली, दीपावली • प्रदर्शनी का आयोजन।	गये कार्यों का निरीक्षण करना। • छात्रों द्वारा निर्मित सामग्री की प्रतियोगिता कराना।
स्वतंत्रभाव अभिव्यक्ति एवं पट्टी कार्य अधिभार 20%	• सैण्ड ट्रे, तख्ती (पट्टी) स्लेट तथा कागज पर विभिन्न आकृतियों का निर्माण कराना एवं उसमें रंग भरवाना। (पृष्ठ–1)	• सैण्ड ट्रे, सजाने हेतु सामग्री संकलित कराना।	• छात्रों द्वारा कृत कार्यों का अवलोकन एवं मूल्यांकन।
बेकार वस्तुओं को कलात्मक रूप देकर सज्जा सामग्री का निर्माण कार्य। अधिभार 30%	• रूई, बिन्दी, चूड़ी के टुकड़े, सरकण्डे, सनई के डण्ठल आदि से विभिन्न आकृतियों का निर्माण कराना जैसे–खरगोश, बिल्ली आदि (पृष्ठ–2)	• छात्रों द्वारा एकत्रित वस्तुओं को कलात्मक ढंग से सजवाना।	• निरीक्षण द्वारा मूल्यांकन

d{kk 4

l Eck/k	mi l Eck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
सौन्दर्यानुभूति की क्षमता एवं स्थानीय सुलभ वस्तुओं द्वारा सजावट अधिभार 15%	• परिवेशीय वस्तुओं की पहचान। • दैनिक उपयोगी वस्तुओं को सुसज्जित करना। • त्यौहार, उत्सव, समारोहों पर घर तथा विद्यालय को सजाना। (पृष्ठ–2)	• विद्यालय तथा कक्षा को विभिन्न अवसरों पर सजवाना। • प्राकृतिक सुन्दर वस्तुओं का निरीक्षण एवं संकलन।	• छात्रों द्वारा अभिव्यक्ति एवं कृत कार्य का निरीक्षण एवं मूल्यांकन। • प्रश्नोत्तर
रंग–ज्ञान अधिभार 20%	• विभिन्न रंगों की पहचान एवं उनका प्रयोग। • रंगों के मिश्रण का ज्ञान। • इन्द्र धनुष द्वारा रंग ज्ञान	• इन्द्र धनुष पर वार्तालाप • स्टेन्सिल, स्प्रे द्वारा धरातलीय डिजाइनों का निर्माण एवं घर,विद्यालय एवं उत्सव स्थल की	• उपरोक्त

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

	(पृष्ठ–2)	सज्जा करना।	
रेखाओं तथा आकारों का ज्ञान। अधिभार 20%	• विभिन्न धब्बों को सुन्दर आकृति में परिवर्तित करना। • विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की पहचान एवं परकार द्वारा विभिन्न कोणों जैसे 90, 60, 45, 30 तथा 15 अंश। (पृष्ठ–2)	• रंगीन कागजों के भिन्न आकार काटकर उन्हें चिपका कर ज्यामिति आलेखन तथा अल्पना बनाना।	• बच्चों के उक्त कार्यों एवं रुचि का निरीक्षण।
स्वतंत्र भाव प्रकाशन तथा कहानी चित्रण। अधिभार 20%	• दैनिक अनुभव, घटनाओं, दृश्य चित्र (सूर्योदय, सूर्यास्त) समुद्र, नदी, पहाड़, मैदान, पेड़, पशु, पक्षी, तितली, फल–फूल आदि का चित्रण। (पृष्ठ–2)	• शिक्षक द्वारा छात्रों को परिवेश भ्रमण तथा निरीक्षण कराना। • घरेलू वस्तुओं का निरीक्षण सुनिश्चित करना। • प्रदर्शनी का आयोजन करना।	• प्रश्नोत्तर • कृत कार्यों का मूल्यांकन • प्रतियोगिता
कोलाज एवं अनुपयोगी वस्तुओं द्वारा सजावट हेतु उपयोगी सामग्री निर्माण। अधिभार 25%	• पुरानी पत्रिकाओं, कैलेण्डरों, अखबारों के चित्र, रंगीन कपड़ों के कतरनों, टूटे–फूटे काँच के बर्तनों, चीनी मिट्टी, झाड़ू की सींक आदि का प्रयोग। (पृष्ठ–2)	• अनुपयोगी वस्तुओं का संकलन एवं कोलाज द्वारा सुन्दर आकृतियों का निर्माण।	• छात्र–कृत कार्य का निरीक्षण एवं मूल्यांकन।

d{kk 5

सौन्दर्यानुभूति की क्षमता एवं स्थानीय सुलभ वस्तुओं द्वारा सजावट अधिभार 20%	• दैनिक जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को सजाना। • विद्यालय एवं घर की सज्जा बच्चे स्वयं कर सकें। (पृष्ठ–1)	• छात्र को स्वच्छ सुन्दर एवं व्यवस्थित ढंग से रहने के लिये प्रेरित करना। • उत्सवों, पर्वों, समारोहों पर कक्षा, विद्यालय एवं उत्सव स्थलों की सज्जा कराना।	• छात्रों को कार्यों में रुचि लेने हेतु प्रोत्साहित करना। • प्रश्नोत्तर।
रंग–ज्ञान अधिभार 20%	• प्राकृतिक तथा कृत्रिम रंगों का परिचय एवं प्रयोग तटस्थ रंगों का परिचय और उनके मेल से हल्के और गाढ़े रंगों को बनाना।(पृष्ठ–1)	• अनेक प्रकार के डिजाइनों (आलेखनों) में रगं भरना।। फूल–पत्तियों एवं सब्जियें आदि के चित्रों में उनके वास्तविक रंग भरना	• प्रदर्शनी • प्रतियोगिता। • प्रश्नोत्तर
रेखाओं तथा आकारों का ज्ञान	• ज्यामितीय आलेखन तथा अल्पना का निर्माण	• ठप्पे द्वारा ज्यामितीय आलेखन एवं अल्पना बनवाना।	• निरीक्षण • जाँच द्वारा

अधिभार 20%	करना। • सुन्दर अक्षरों में लिखने का अभ्यास कराना। (पृष्ठ–2)	• सुन्दर अक्षरों में अक्षरांकन कराना जैसे जय हिन्द,स्वागतम आदि	
स्वतंत्र भाव प्रकाशन, कहानी चित्रण स्मृति चित्रण। अधिभार 20%	• परिवेश में देखे गये व्यक्तियों, वस्तुओं मेला आदि के दृश्यों के नमूने बनवाना। (पृष्ठ–1)	• सैण्ड ट्रे पर कागज तथा दफ्ती की सहायता से प्राकृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक छोटी–छोटी धटनाओं एवं कहानियों का चित्रण करनां।	• निरीक्षण • कृत कार्यों का अवलोकन • प्रदर्शनी
कोलाज एवं अनुपयोगी वस्तुओं द्वारा सजावट हेतु उपयोगी वस्तुओं का निर्माण अधिभार 20%	• टूटे मिट्टी के बर्तन, बाँस के टुकड़े, रंगीन काँच के टुकड़े,, कागज की प्लेट, इलायची के छिलके, लकड़ी के चम्मच, टाफी की पन्नी आदि से विभिन्न आकृतियों का निर्माण कराना।	• छात्रों द्वारा विभिन्न वस्तुओं का संकलन करना। • अनुपयोगी वस्तुओं के द्वारा कल्पना के आधार पर कलात्मक विभिन्न रूप देना	• प्रदर्शनी • प्रतियोगिता

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

ekfl d foHkkt u

ekg	d{kk 1 o 2	d{kk 3	d{kk 4	d{kk 5
जुलाई	• सौन्दर्यानुभूति की क्षमता का विकास	• परिवेश में प्राप्त सामग्री का संकलन	• परिवेश में प्राप्त सामग्री द्वारा सजावट	• सौन्दर्यानुभूति की क्षमता का विकास
अगस्त	• सुन्दर वस्तुओं से सजावट	• सौन्दर्य की अनुभूति	• दैनिक उपयोगी वस्तुओं को सुसज्जित करना	• स्थानीय सुलभ वस्तुओं द्वारा सजावट
सितम्बर	• रंगों का ज्ञान • सत्र परीक्षा	• विविध पर्वों व उत्सवों पर सजावट • सत्र परीक्षा	• रंगों की पहचान एवं उनका प्रयोग • सत्र परीक्षा	• ज्यामितीय अवलोकन • सत्र परीक्षा
अक्टूबर	• विभिन्न रंगों के कतरनों से सजावट	• विभिन्न रंगों का ज्ञान	• इन्द्रधनुष द्वारा रंग ज्ञान	• सुन्दर अक्षरों में लिखने का अभ्यास
नवम्बर	• विविध रेखाएं • सत्र परीक्षा	• कई रंगों के मिश्रण से एक रंग बनाना • सत्र परीक्षा	• विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों की पहचान • सत्र परीक्षा	• परिवेश में देखे गये व्यक्तियों वस्तुओं का चित्र बनवाना • सत्र परीक्षा
दिसम्बर	• विविध आकार व प्रकारों का ज्ञान • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• विभिन्न रेखाओं की रचना • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• परकार द्वारा विभिन्न कोणों को बनवाना • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• मेला आदि का दृश्य • अर्द्धवार्षिक परीक्षा
जनवरी	• गीली मिट्टी से वस्तुएँ बनाना	• विभिन्न आकृतियों की रचना	• समुद्र, नदी, पहाड़, पशु, पक्षी का चित्रण	• बाँस के टुकड़े से आकृति बनवाना
फरवरी	• बेकार वस्तुओं से कलाकृति बनवाना • सत्र परीक्षा	• विभिन्न आकृतियों में रंग भरना • सत्र परीक्षा	• तितली, फल–फूल सूर्योदय का चित्रण • सत्र परीक्षा	• कागज की प्लेट, आइस्क्रीम की चम्मच से आकृति बनवाना • सत्र परीक्षा
मार्च	• पेन्सिल से आलेखन करवाना	• रद्दी सामग्री से आकृतियों का निर्माण	• पत्र–पत्रिकाओं कैलेण्डरों अखबारों के चित्रों का संकलन	• विद्यालय एवं घर की सजावट बच्चों द्वारा
अप्रैल	• सूखे पत्तियों, बीज, पंखुड़ियों से आकृतियाँ बनवाना	• परिवेशीय वस्तुओं की पहचान	• कपड़ो के कतरनों, चीनी मिट्टी, झाड़ू आदि का प्रयोग	• कृत्रिम रंगों का परिचय
मई	• वार्षिक परीक्षा	• वार्षिक परीक्षा	• वार्षिक परीक्षा	• वार्षिक परीक्षा
जून	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश

laxhr ¼xk;u½

laxhr f'k{k.k dk egÙo

संगीत मन को एकाग्र करने का सशक्त माध्यम है। मन की एकाग्रता समस्त शिक्षा का केन्द्र बिन्दु है। राष्ट्रीय एकता एंव भावात्मक एकता में संगीत का विशिष्ट योगदान है। संगीत श्रवण से मानसिक तनाव दूर होता है। अतः मानसिक स्वास्थ्य एवं राष्ट्रीय एकता के संरक्षण हेतु बच्चों को संगीत विषय का शिक्षण देना समीचीन है।

laxhr f'k{k.k ds lkekU; mn~ns';

- गीतों द्वारा छात्रों का मनोरंजन करना।
- छात्रों में राष्ट्रीयता, प्रेम, एकता, सौहार्द तथा विश्व–बन्धुत्व भाव आदि गुणों का विकास करना।
- संगीत के माध्यम से भावात्मक एकता विकसित करना।
- संगीत के मूल तत्त्व–स्वर, ताल, लय आदि के माध्यम से रसानुभूति कराना।
- गीतों के द्वारा आत्म–विश्वास की अभिवृद्धि करना।
- प्रमुख वाद्ययंत्रों एवं उनकी ध्वनियों से परिचित कराना।
- संगीत की परिभाषा तथा आरोह–अवरोह का परिचय कराना।
- स्वरों के माधुर्य द्वारा चित्त एकाग्र करने की क्षमता विकसित करना।
- छोटे–छोटे गीतों के माध्यम से बच्चों में स्वस्थ आदतों तथा नैतिक मूल्यों का विकास करना।

fof'k"V mn~ns';

- स्वर, लय एवं ताल का प्रारम्भिक ज्ञान कराना।
- मधुर गायन की क्षमता विकसित करना।
- परस्पर सहयोग का भाव विकसित करना।
- अभिव्यक्ति एवं सृजन शक्ति विकसित करना।
- देश–भक्ति की भावना विकसित करना।
- छोटे–छोटे गीतों को स्वर, लय एवं ताल के साथ गायन की क्षमता विकसित करना।

laxhr f'k{k.k ds lq>ko

- भाव–प्रधान छोटे–छोटे गीत सिखाए जायँ।
- गीतों में प्रयुक्त धुनें सरल हों।
- विद्यालय में आयोजित विभिन्न उत्सवों पर बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किए जायँ।
- यथावसर स्थानीय गीतों का भी प्रयोग हो।
- फिल्मी गीत न गवाए जायँ।
- ईश–भक्ति या देश–भक्ति से सम्बन्धित स्वस्थ परम्परायुक्त गीत सिखाए जायँ।
- गीत प्रेरणा–दायक एवं मौलिक हों।
- लोक–धुनों पर आधारित गीतों को प्रधानता दी जाय।
- लय–ज्ञान सुदृढ़ करने के लिए गीतों के साथ ताली का प्रयोग कराया जाय।

d{kk& 1 ,o 2

lEcU/k ¼dkS'ky½	mi lEcU/k ¼fo"k; oLrq½	fØ;k&dyki	eY;kdu
श्रवण अधिभार 20%	• गीत–बद्ध लघु–कथाएँ (पृष्ठ–5)	• सरस एवं तुकान्त गीतों के माध्यम से विविध कहानियाँ सुनाना। • गीतों को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न मुद्राओं तथा अभिनय का प्रयोग करते हुए शिक्षक बच्चों से भी उसका अनुकरण कराएँ। • मधुर शिशु–गीतों के माध्यम से श्रवण–क्षमता का विकास कराएँ।	• शिक्षक द्वारा सुनाई गई कहानी की घटनाओं का बच्चों द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति। • कहानी के पात्रों के संवादों की बच्चों से पुनरावृत्ति कराना। • विविध पात्रों के मुखौटे लगाकर छात्रों की अभिनयात्मकता का पता लगाना। • गीत से सम्बन्धित प्रश्न पूछना।
राष्ट्रीयता प्रेम, एकता एवं नैतिकता अधिभार 20%	• प्रार्थना, राष्ट्रगान, समूहगान एवं अभिनय–गीत (पृष्ठ–5)	• अध्यापक द्वारा स्वयं सस्वर गाकर बच्चों को प्रार्थना, राष्ट्रगान आदि सुनाना तथा बच्चों से अनुकरण आदि सुनाना। • बच्चों से उनकी रुचि के अनुसार गीत गवाना।	• अनुश्रवण • प्रश्नोत्तर
लय ज्ञान अधिभार 20%	• गीतों की लय का ज्ञान कराना। (पृष्ठ–2)	• ताली द्वारा लय प्रदर्शित करते हुए शिक्षक द्वारा गीतों का सस्वर गायन तथा बच्चों से भी गीत की लय पर ताली दिलवाना।	• अनुश्रवण
सौन्दर्यानुभूति अधिभार 20%	• शिशु–गीत (पृष्ठ–3)	• शिक्षक द्वारा गायन तथा बच्चों द्वारा अनुकरण।	• रुचिकर गीतों को सुनना।
आत्माभिव्यक्ति अधिभार 20%	• लघु–गीत, अभिनय–गीत एवं कविता। (पृष्ठ–5)	• स्वयं निरीक्षण गाकर बच्चों से ही गवाना स्वर–लय सम्बन्धी त्रुटियों को सुधारना।	• श्रवण

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

d{kk 3] 4 o 5

lEck/k ¼dk'ky½	mi lEck/k ¼fo"k; oLr½	fØ;k&dyki	eY;kdu
स्वर ज्ञान अधिभार 12%	• सातों शुद्ध स्वर (पृष्ठ–2)	• शिक्षक द्वारा सात शुद्ध स्वरों का आरोह–अवरोह सहित गायन। • शिक्षक 'सा' के सापेक्ष्य सम्वादात्मक अभ्यास कराएँ। • अनुकरण विधि का प्रयोग • यथा–स्थान त्रुटियों का सुधार। • शिक्षक तथा छात्रों के स्वर–स्थानों में भिन्नता का ध्यान रखते हुए अध्यापक छात्रों के हितार्थ एक सामान्य (common) स्वर स्थान का प्रयोग करें।	• अनुश्रवण।
आस्था एवं नैतिकता अधिभार 12%	• प्रार्थना/सामूहिक भजन (पृष्ठ–4)	• सामूहिक रूप से प्रार्थनाओं तथा सरल भजनों का अभ्यास कराना। • पहले शिक्षक के साथ फिर स्वतन्त्र रूप से छात्रों द्वारा गायन।	• सम्बद्ध गीतों का अनुश्रवण
देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता, धार्मिक भावना अधिभार 16%	• देश–गान, राष्ट्रगान, झण्डा–गान आदि (पृष्ठ–4)	• शिक्षक द्वारा अपने साथ–साथ अभ्यास कराना फिर स्वतन्त्र रूप से गवाना एवं त्रुटियों का सुधार करना। • अच्छे गायक छात्र के नेतृत्व में अभ्यास कराना।	• छात्रों द्वारा गीत–संकलन • अनुश्रवण
पोषण, स्वास्थ्य रक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता तथा जनसंख्या शिक्षा।	• सम्बद्ध भाव–गीत (पृष्ठ–2)	• सामूहिक अभ्यास कराना • शिक्षक द्वारा आदर्श–प्रस्तुति तथा गीत में निहित सम्बोधों का स्पष्टीकरण। • अनुकरण विधि द्वारा अभ्यास।	• श्रवण।
संवैधानिक दायित्व, भावी नागरिकता अधिभार 12%	• संचलन (प्रयास) गीत • समूह–गान (पृष्ठ–2)	• शिक्षक द्वारा आदर्श प्रस्तुति। • अनुकरण विधि में छात्रों द्वारा अभ्यास। • भावानुकूल अभिनय। • सामूहिकता पर बल।	• समूह में गीत श्रवण • व्यक्तिगत गीत श्रवण
ताल ज्ञान अधिभार 12%	• तीन ताल, कहरवा तथा दादरा (मध्य लय में) • सम एवं खाली की	• अध्यापक द्वारा विभिन्न तालों की आदर्श प्रस्तुति तथा छात्रों से हाथ द्वारा सम, ताली तथा खाली लगवाना।	• अन्य गीतों के सम पर ताली लगवाना।

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

	पहचान (पृष्ठ–4)	• गीत गाकर उसके सम पर ताली तथा यथा–स्थान खाली लगवाना।	
सौन्दर्यानुभूति अधिभार 12%	• गीत में प्रयुक्त स्वर–माधुर्य एवं ताल से रसानुभूति (पृष्ठ–2)	• शिक्षक द्वारा प्रस्तुत मधुर–गायन। • रेडियो आदि पर प्रसारित किसी गीत के सम्बन्ध में प्रश्न पूछना।	• गीत में कहाँ क्या अच्छा लगा इस पर प्रश्नोत्तर
आत्माभिव्यक्ति अधिभार 12%	• छात्रों द्वारा प्रस्तुतियाँ (पृष्ठ–2)	• छात्रों द्वारा उनके पसन्द का कोई गीत गवाना जिसमें स्वर, लय एवं ताल का समावेश हो। • त्रुटि सुधार करना।	• मन–पसन्द गीतों का संग्रह एवं श्रवण।

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

ekfl d foHkkt u

ekg	d{kk 1 ,o a 2	dkyka'k	d{kk 3] 4] 5	dkyka'k
जुलाई	• गीतबद्ध लघुकथाएँ	14	• सातों शुद्ध स्वर	14
अगस्त	• राष्ट्रगान	14	• प्रार्थना/सामूहिक भजन	14
सितम्बर	• प्रार्थना • सत्रीय परीक्षा	18	• देशगान • सत्रीय परीक्षा	18
अक्टूबर	• समूहगान	14	• राष्ट्रगान, झण्डा गान	12
नवम्बर	• अभिनय गीत • सत्रीय परीक्षा	18	• सम्बद्ध भाव–गीत • सत्रीय परीक्षा	18
दिसम्बर	• लय ज्ञान	18	• संचलन (प्रयाण) गीत	18
जनवरी	• शिशु गीत	14	• समूहगान	12
फरवरी	• कविता • सत्रीय परीक्षा	18	• तीन ताल, कहरवा तथा दादरा • सत्रीय परीक्षा	18
मार्च	• लघुगीत	14	• सम एवं खाली की पहचान	16
अप्रैल	• पुनरावृत्ति	12	• पुनरावृत्ति एवं रसानुभूति	16
मई	• पुनरावृत्ति • वार्षिक परीक्षा	18	• पुनरावृत्ति • वार्षिक परीक्षा	16
	योग	172	योग	172
जून	• ग्रीष्मावकाश		• ग्रीष्मावकाश	

ekfl d foHkkt u

ekg	d{kk&1] 2	d{kk&3	d{kk&4	d{kk&5
जुलाई	• गीतबद्ध लघु कथाओं द्वारा संगीत के प्रति सम्मान उत्पन्न करना।	• सात शुद्ध स्वरों के अभ्यास क्रम में सा–सां, सा–प का अभ्यास	• सातों शुद्ध स्वरों के आरोह–अवरोह का अभ्यास	• सातों शुद्ध स्वरों के अभ्यास क्रम में सा के सापेक्ष्य स्वरों का अभ्यास–सरे, सग, साम, साप, साध, सानी, ससां
अगस्त	• सरल स्वर लिपियुक्त प्रार्थना तथा लयबद्ध ताली का अभ्यास	• सात शुद्ध स्वरों के अभ्यास	• प्रयाण (संचलन) गीत	• पिछली कक्षा में सीखे गीतों की पुरनावृत्ति
सितम्बर	• अन्य धर्म से सम्बिन्धत प्रार्थना एवं लय–बद्ध ताली। • प्रथम सत्र परीक्षा	• सामूहिक रूप से प्रार्थना का अभ्यास तथा लयबद्ध ताली। • प्रथम सत्र परीक्षा	• समूह गान • प्रथम सत्र परीक्षा	• कहरवा एवं दादरा ताल का ज्ञान • प्रथम सत्र परीक्षा
अक्टूबर	• राष्ट्रगान	• सामूहित भजन का अभ्यास तथा लय–बद्ध ताल।	• तीन ताल के बोल तथा मात्रा की पहचान	• कहरवा ताल में भजन
नवम्बर	• समूह गान • दूसरी सत्र परीक्षा	• देशगान सामूहिक लयबद्ध ताली • दूसरी सत्र परीक्षा	• तीन ताल पर ताली तथा खाली का अभ्यास • दूसरी सत्र परीक्षा	• दादरा ताल में गीत • दूसरी सत्र परीक्षा
दिसम्बर	• अभिनय–गीत का अभ्यास सामूहिक लयबद्ध ताली। • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• झण्डा गान सामूहिक लयबद्ध ताली • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• पहले सीखे हुए गीतों की पुनरावृत्ति • अर्द्धवार्षिक परीक्षा	• तीन ताल, दादरा तथा कहरवा में अन्तर समझना। • अर्द्धवार्षिक परीक्षा
जनवरी	• शिशु–गीत का अभ्यास एवं लय–बद्ध ताली	• भावगीत	• भावगीत	• विभिन्न तालों के गीतों में ताली एवं खाली का अभ्यास
फरवरी	• गीतों की लय का ज्ञान कराना • सत्रीय परीक्षा	• भाव गीत • सत्रीय परीक्षा	• भजन • सत्रीय परीक्षा	• स्वयं गाते हुए ताल के अनुसार ताली खाली का अभ्यास • सत्रीय परीक्षा

मार्च	• गीतों की पुनरावृत्ति तथा लय ज्ञान	• विभिन्न गीतों की पुनरावृत्ति	• विभिन्न गीतों की पुनरावृत्ति	• अध्यापक द्वारा बजाए जाते ताल को सुनकर गीतों के मुखड़े पकड़ने का अभ्यास
अप्रैल	do	do	do	• पुनरावृत्ति
मई	do • वार्षिक परीक्षा	do • वार्षिक परीक्षा	do • वार्षिक परीक्षा	do • वार्षिक परीक्षा
जून	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश	• ग्रीष्मावकाश

'kkjhfjd f'k{kk] [ksy rFkk ;kxklu] LdkmfVx@xkbfMx

'kkjhfjd f'k{kk] [ksy rFkk ;kxklu D;k\

खेल, पुस्तकीय ज्ञान से अलग शिक्षा से जुड़ आयाम बाल व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास को प्रभावित करते हैं। जो बालक में नेतृत्व, सहयोग, आपसी प्रेम और भाई–चारे की भावना की समझ विकसित करने में सहायक हैं जिन्हें हम पाठ्येत्तर क्रियाकलापों के श्रेणी में रखकर भी नियमित पाठ्यचर्या में स्थान दे रहे हैं वही शारीरिक शिक्षा खेल तथा योगासन हैं। खेल की क्रिया हर अवस्था में आनन्द की क्रिया है। शारीरिक भाग दौड़, हारने–जीतने की स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा खेल के ही माध्यम से बालक को प्रभावित करती है। वो कार्य जिसमें हम कुछ समय के लिए तन–मन से डूब जाते हैं और अपने को भी भूल जाते हैं, खेल कहलाती है। खेल का ही एक संयमित एवं निर्देशित स्वरूप योग है जो शरीर की विशिष्ट मुद्राओं द्वारा शरीर को स्वस्थ और तनावमुक्त रखने में सहायक है। शारीरिक शिक्षा, खेल और योगासन शरीर को निर्देशित अवस्थाओं, मुद्राओं और क्रियाओं के माध्यम से स्वस्थ बनाते हैं। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। अतः शरीर को स्वस्थ, स्फूर्तिदायक, तनावग्रस्त और आनन्दित रखना ही शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगासन है।

'kkjhfjd f'k{kk] [ksy ,oa ;kxklu D;ksa\

ज्ञान के विस्तार के साथ ही साथ शैक्षिक जगत में बच्चों के बस्ते का बोझ भी बढ़ता जा रहा है और बच्चों के लिए उस समस्त ज्ञान को समेटने की प्रक्रिया की बोझिलता उनके शारीरिक विकास को भी प्रभावित करने लगी है। पठन–पाठन की पारस्परिक शैली से आगे बढ़कर कुछ समय बच्चे के शारीरिक विकास के लिए देना भी अति आवश्यक एवं उपयोगी समझा जा रहा है। इतना ही नहीं आजकल की महानगरीय संस्कृति के छोटे–छोटे घरों में बच्चों के भागने–दौड़ने के लिए ऐसा कोई स्थान नहीं रहता है जो उनके शारीरिक स्वास्थ्य की इस आवश्यकता को पूरा कर सकें, अतः बच्चों के भागने–दौड़ने की प्राकृतिक माँग, शरीर के स्वस्थ विकास की आवश्यकता और बालक में प्रेम, सहयोग, नेतृत्व आदि के सामाजिक गुणों के विकास के लिए शारीरिक शिक्षा खेल एवं योगासन की आवश्यकता है–

Formatted: Bullets and Numbering

- बालक के स्वस्थ शारीरिक विकास के लिए।
- योग द्वारा संयमित शारीरिक विकास के लिए।
- बालक को तनावमुक्त रखने के लिए।
- बालक को आनन्दित करने के लिए।
- दिनचर्या में परिवर्तन करने के लिए।
- कल्पना, निरीक्षण और रचनात्मक शक्ति के विकास के लिए।
- बस्ते का बोझ कम करने के लिए।
- अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को सजोने के लिए।
- बालक की मौलिक प्रतिभा के विकास के लिए।

d{kk 1] 2 ,o 3

lEck/k	mi lEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
शरीर को लोचपूर्ण तथा गर्म बनाने हेतु प्रारम्भिक क्रियाएँ अधिभार 08%	• हाथ, पैर, गर्दन एवं धड़ को हलके–फुलके व्यायाम द्वारा शरीर को लचीला व गर्म बनाना। नोट – कक्षा 1 से 5 तक प्रारम्भिक व्यायाम में यही क्रियायें कराई जायेंगी एक बार में केवल तीन या चार क्रियायें करायी जाएँ। (पृष्ठ–2)	• इधर–उधर दौड़ना संकेत पर (खड़े हो जाना)। • संकेत पर अपने स्थान पर कूदना। • अपने स्थान पर एक पैर से कूदना। • हाथ ऊपर करके दौड़ना। • हाथ दायें–बायें करके दौड़ना। • हाथी की चाल चलना। • रस्सी कूद की नकल करना। • पंजों पर चलना। • तेज तथा धीरे दौड़ना। • छोटे तथा बड़े कदम चलना। • बन्दर, बिल्ली, हाथी, मेढक आदि की चाल चलना। • पक्षियों की तरह उड़ने का अनुकरण करना। • रेलगाड़ी की तरह चलना • आपस में हाथ पकड़ कर दौड़ना। नोट :– यह क्रियायें शिक्षक स्वयं करके दिखायें तथा साथ ही साथ बच्चे शिक्षक का अनुकरण करेंगे।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
शरीर के समस्त अंगों को पर्याप्त व्यायाम द्वारा स्वस्थ एवं सशक्त बनाना। अधिभार 10%	• छोटी कक्षाओं में अलग–अलग अंगों के व्यायाम नहीं कराये जाते है अतः बाँह, पैर, गर्दन तथा धड़ के सभी सम्मिलित व्यायाम कराएँ जाएँ। नोट – एक समय में किसी एक पाठ में तीन या चार क्रियायें ली जा सकती हैं। (पृष्ठ–2)	• खड़े होकर जितने लम्बे हो सकते हैं होना। • बैठकर बिल्कुल सिकुड़ कर छोटे होना। • जमीन पर उकडू बैठकर खरगोश की तरह अपने स्थान पर कूदना। • कूद कर फैलाना और पंजे छूना। • घुटनों पर चलना। • हाथ ऊपर करके पंजों पर छोटे व बड़े कदम चलना। • पाँव कूद कर खोलना आगे झुकना, दोनों हाथें से एक टखने को पकड़ना तथा सिर को घुटने की तरफ खींचना। • बिल्ली की तरह किसी भी दिशा में रेंगना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

		संकेत पर रुकना, उकड़ू स्थिति में हाथ जमीन पर रहे घुटनों को फैलाकर पीठ से घुमाव बनाना (एक क्रोधित बिल्ली के समान) • रस्सीकूद की तरह कूदना, संकेत पर एक पैर पर रुकना, हाथों को दांयें बायें फैलाना। • खामोशी मुक्त दौड़ना, संकेत पर एक स्थान पर पैर पटक शोर मचाते हुए दौड़ना। • शिक्षक के पीछे दौड़ना और एक से अधिक नीची रस्सियों पर से कूदना। • निम्नलिखित कार्यों का अनुकरण करवाना, खेत पर काम करता हुआ मजदूर, लकड़हारा, बढ़ई, लोहार। • शिक्षक या एक लीडर बच्चे के पीछे रेलगाड़ी की तरह टेढ़े–मेढ़े दौड़ना। • शिक्षक द्वारा बताई गई किसी वस्तु को दौड़ाकर छूकर लौटकर आना।	
विशेष क्रियाएँ अधिभार 04%	• गेंद से सम्बन्धित क्रियाएँ नोट – एक समय में इनमें से केवल तीन क्रियाएँ करायी जायें। (पृष्ठ–1)	• गेंद फेंकना। • गेंद पकड़ना। • गेंद लुढ़काना। • गेंद से टप्पा मारना। • गेंद को पैर से मारना। • गेंद को हाथ से हिट करना। • गेंद को दीवार पर मारना। • गेंद को लगातार जमीन पर मारना। • किसी वस्तु या चिह्न पर गेंद से निशाना लगाना। • कम ऊँचाई पर लगे छल्ले में गेंद डालना। • टप्पा मारना व पकड़ना। • दौड़ते हुये गेंद को पकड़ना। • मुग्दर से गेंद को हिट करवाना। • निश्चित दूरी तक गेंद फेंकना। • गेंद को हवा में उछलवाना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण
	• रस्सी से सम्बन्धित	• एक या दोनों हाथों से रस्सी खींचवाना।	

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

	क्रियायें। नोट :— कोई दो ही क्रियायें करायी जायें।	• दो बच्चों द्वारा रस्सी चलवा कर बाकी बच्चों को उसके अन्दर कुदवाना। • अकेले अपने स्थान पर बच्चों को कुदवाना— (अ) दोनों पैर से (ब) एक पैर से • रस्सी द्वारा कूद लेते हुये दौड़ना। • रस्सियों को कम ऊँचाई पर रखकर बच्चों को कुदाते हुये दौड़ाना।	
	• कूदना और फुदकना (पृष्ठ—2)	• संकेत पर अपने स्थान पर दोनों पैरों से कूदना, पुनः संकेत पाने पर रुक जाना • एक ही स्थान पर कई बार बारी—बारी से एक पैर से कूदना। • एक स्थान पर अधिक से अधिक नीचे एवं अधिक से अधिक ऊपर कूदना। • कुछ ऊँचाई पर लटकी वस्तु को उछल कर छूने का प्रयास करवाना। • आठ बार छलांग भर के आगे पीछे जाना। • तीन बार सामने छलांग लेना फिर दांये मुड़ना। इस क्रिया को चारों ओर करना। • एक पैर को पीछे मुड़कर पकड़ना तथा एक पैर से फुदकना। • एक पैर से फुदकना तथा पैरों को बायें तथा दायें झुलाना। • छलाँग लगाते हुये दोनों हाथों व पैरों पर बैठना तथा फिर वापस इसी क्रिया को दोहरवाना। • ऊँचाई के लिये कूदना तथा नीचे आते समय पैरों से क्रास बनवाना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
विभिन्न प्रकार की दौड़ें अधिभार 12%	• छोटी व लम्बी दौड़ों के लिये अभ्यास देना एवं पैरों की मांसपेशी तथा फेफड़े को सशक्त बनाना। (पृष्ठ—2)		• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
		• किसी एक बड़े पेड़ के चारों ओर बड़े घेरे में दौड़ना। • संकेत पर समान चिह्नित स्थान तक दौड़ना पुनः संकेत पर उलटे दौड़ना।	

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

		• दोनों हाथ व दोनों पैरों पर चौपाये की तरह चलना व दौड़ना। • एक बार पूरे मैदान में बच्चों को दौड़वाना तथा प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाले बच्चों को छाँटना। • संकेत पर दौड़ का आरम्भ तथा दूसरे संकेत पर विपरीत दिशा में दौड़ना। इसे कई बार दोहराना। • हाथ पकड़कर गोला बनाना। संकेत पर पंजों पर पहले बायें फिर दायें चलना तथा दौड़ना। • गोले में हाथ पकड़कर आठ कदम अन्दर चलना तथा आठ कदम पीछे आना। • गोले में शिक्षक के संकेत पर एक बार दायें मुड़कर गोले में दौड़ना। संकेत पर पीछे मुड़कर बायें दौड़ना। • एक निश्चित क्षेत्र में अन्दर दौड़ाना तथा विभिन्न प्रकार के पाँच पत्थर या कंकड़ उठाकर लाना। • दौड़कर जाना, लोहा छूना, लकड़ी छूना, पत्थर छूना तथा दौडकर वापस आना। ukV& एक पाठ में केवल तीन ही क्रियाएँ सिखायी जायें।	
स्थानीय लोकनृत्य अधिभार 08%	• बच्चों को लय का ज्ञान, एक साथ मिलकर क्रिया, स्थानीय संस्कृति से परिचय तथा मनोरंजन। (पृष्ठ–2)	• सीखे हुये सरस व ग्राहय लोकगीतों को सुनना, उनके बोलों के अनुसार हल्के एवं सरल भावों को करवाना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
गीत अधिभार 08%	• छोटी–छोटी कविता को गीत रूप में सिखाना तथा स्थानीय लोकगीत से परिचय। (पृष्ठ–1)	• कवितायें पशु–पक्षियों तथा प्रकृति प्रेम से सम्बन्धित हों। शिक्षक उन्हें लयबद्ध रूप में बच्चों से गवायें।	
आसन अधिभार 15%	• विभिन्न प्रकार के आसन क. ताड़ासन	• सावधान मुद्रा में श्वास अन्दर करते हुये धीरे–धीरे हाथों को सामने से ले जाते हुये सिर के ऊपर ले जाना और पंजों पर खड़े हो जाना। वापस आते समय श्वास छोड़ना। यह क्रिया बच्चों से कराना	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

	ख. प्रार्थनासन	• बच्चों को दोनों हाथ सावधान की अवस्था में धीरे–धीरे नमस्कार की मुद्रा में रखवाना एवं नेत्रों को बन्द करवाना	
	ग. सुखासन	• शिक्षक बच्चों के बांये पैर को दायें के नीचे तथा दांये पैर को बायें पैर के नीचे रखवायें। हथेली एक दूसरे के ऊपर रखवायें, श्वास सामान्य तथा नेत्र बन्द करवायें।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण
	घ. सिद्धासन	• शिक्षक बच्चों के बायें पैर दायें पैर की जांघ के ऊपर तथा दायां पैर बायें पैर की जांघ के नीचे रखवायें। आंखे बन्द, श्वास सामान्य एवं हाथों को सुखासन की स्थिति में रखवायें।	
	ङ अर्द्ध कटि आसन	• सावधान की मुद्रा में श्वास बाहर करवाते हुये बांये हाथ को दांयी ओर से ऊपर लाते हुये दांयी ओर करवायें। धड़ को भी दांयी ओर घुमवायें। घुटने सीधे रखवायें। पुनः वापस इसी क्रिया को दायें हाथ से बांयी ओर करवायें।	
	च. अर्द्ध चक्रासन	• शिक्षक बच्चों के हाथ कमर पर रखवायें श्वास को भर लेते हुये धड़ को धीरे–धीरे झुकवायें, घुटने सीधे रखवायें वापस आते हुये श्वास छुड़वायें एवं हाथ नीचे करवायें।	
	छ. पद्मासन क से छ तक (पृष्ठ–2)	• शिक्षक बच्चों के दायें (बायें) पैर की बांयी (दांयी) जांघ के ऊपर रखवायें। दोनों हाथों की मुट्ठी बन्द करवाकर घुटनों पर रखवायें। धड़ सीधा तथा आंख बन्द करवायें। श्वास लम्बी व गहरा लेने को कहें।	
जिमनास्टिक अधिभार 18%	• मूलभूत अवस्थाएँ तथा क्रियाएँ (पृष्ठ–2)	• खड़े होने की विभिन्न अवस्थाएँ– अ. पंजे पर खड़े होना। ब. बायां पैर फैलाकर खड़े होना। स. एक पैर सामाने रखकर खड़े होना। • विभिनन प्रकार से चलना– अ. पंजों पर चलना। ब. एड़ी पर चलना। स. हाई नी पिकअप पैरों को बारी–बारी से ऊपर उठाकर 90 अंश का कोण	

		बनाना। • विविध क्रियाएँ अ. घुटनों पर खड़े होना। ब. घुटनों को मोड़कर बैठना। स. अ की अवस्था में धड़ सामने घुमाते हुए सिर– जमीन से लगाना। दोनों पैरों पर आगे–पीछे दायें–बांयें कूदना।	
छोटे खेल अधिभार 17%	• अमरुद दौड़ (पृष्ठ–$^{1}/_{2}$)	• आरम्भ और अन्त रेखा अंकित कर आरम्भ रेखा पर बच्चे खड़े कर दिये जायें। 20–25 मीटर की दूरी पर दो भाग में डोरी बांध कर 15–20 अमरुद लटकाना। संकेत मिलने पर बच्चे दौड़कर अमरुद के पास जायेंगे और मुँह से अमरुद तोड़कर अन्त रेखा पर पहुँच जायें। हाथ पीछे बधें रहेंगे। प्रथम, द्वितीय, तृतीय विजयी माने जायेंगे।	
	• छुआ–छुअव्वल (पृष्ठ–$^{1}/_{2}$)	• एक चोर तथा बाकी सब बच्चे बाहर संकेत पर चोर पकड़ने को भागता है जो पकड़ लिया जाता है। वह चोर बन जाता है। खेल इसी प्रकार चलता रहता है।	
	• एक टांग पर (पृष्ठ–$^{1}/_{2}$)	• खेल ऊपर की तरह ही खेला जायेगा। केवल अन्तर इतना है कि चोर अन्य बच्चों का पीछा एक पैर से दौड़कर करेगा।	
	• पीठ पर तड़ी (पृष्ठ–$^{1}/_{2}$)	• एक बड़ा सा गोला बनाकर बच्चों को उसके चारों ओर खड़ा कर देते है चोर गोले के बाहर भागता है और किसी खिलाड़ी की पीठ को छू देता है। वह खिलाड़ी चोर के विपरीत दिशा में भागने लगता है। दोनों खिलाड़ी इस प्रयास में रहते है कि गोले की उस एक खाली जगह को प्राप्त कर लें जो नहीं पहुँच पाता वह चोर बन जाता है।	
	• बिल्ली और चूहा	• एक बच्चा बिल्ली (चोर) बनकर पेड़ के पीछे छिप जाता है। बाकी चूहे (शाह) इधर–उधर घूमते रहते हैं। जैसे ही संकेत मिलता है बिल्ली दौड़कर चूहों का पीछा करती है जो बच्चा आरम्भ रेखा पर पहुँचने से पहले पकड़ लिया जाता है वह चोर हो जाता है।	

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

	• फूल और हवा (पृष्ठ–$^{1}/_{2}$)	• सारे बच्चों को दो बराबर समूहों में बांटकर 30 मीटर की दूरी पर खींची रेखाओं पर आमने–सामने खड़ा करेंगे। एक समूह को हवा का नाम देंगे। दूसरे समूह को फूल का बिना हवा का मालुम हुए एक फूल का नाम दे दिया जैसे गुलाब फूल वाला समूह हवा वाले समूह के पास जाता है। हवा फूलों का नाम लेती है जैसे चम्पा, चमेली, कमल आदि जैसे ही हवा कहती है गुलाब है फूल वाला समूह वापस अपनी रेखा की ओर तेजी से भागता है। अगर वे पकड़ लिए जाते हैं तो हवा, फूल पकड़ती है। पकड़े जाने वाले फूल अलग बैठ जाते हैं। जब सारे फूल पकड़ लिये जाते है तो हवा, फूल बन जाते है और फूल हवा। खेल इसी प्रकार चलता है।	
	• छाया पकड़ (पृष्ठ–$^{1}/_{2}$)	• एक चोर तथा बाकी बच्चे शाह बन जाते हैं। चोर शाह बच्चों की छाया में खड़े होने का प्रयास करता है जिस शाह की छाया में चोर खड़ा हो जाता है। वह चोर बन जाता है। चोर को अपनी छाया में न आने दे इसके लिए, शाह भाग सकते हैं, झुक सकते हैं, शरीर को मोड़ सकते हैं।	

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

d{kk 4

lEck/k	milEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
खण्ड अ प्रारम्भिक व्यायाम खण्ड ब व्यायाम तालिका 1 अधिभार 10%	कक्षा एक से तीन के पाठ्यक्रम में उल्लिखित • बाँह का व्यायाम • पैर का व्यायाम • गर्दन का व्यायाम • धड़ का व्यायाम (पृष्ठ–3)	• कक्षा एक से तीन में लिखित क्रियाओं में से ही करायी जायें। • सावधान से हाथों को सामने कंधे की सीध में फैलाना तथा वापस लाना। संख्या 1 से 8 तक। • कमर कस अवस्था से बांया (दायां) पैर सामने तानना तथा वापस लाना एवं हाथ नीचे करना। संख्या 1 से 8 तक। • कमर कस अवस्था से गर्दन सामने झुकाना, वापस लाना, पीछे झुकाना, वापस लाना तथा हाथ नीचे करना। संख्या 1 से 3 तक।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

		• हाथ पीछे पकड़ अवस्था से धड़ को सामने (पीछे) झुकाना तथा वापस लाना संख्या 1 से 8 तक।	
व्यायाम तालिका–2 अधिभार 15%	• बाहु का व्यायाम • पैर का व्यायाम • गर्दन का व्यायाम • धड़ का व्यायाम • स्फूर्तिदायक व्यायाम (पृष्ठ–3)	• सावधान अवस्था से हाथ सामने फैलाना, दायें–बायें फैलाना तथा वापस लाना संख्या 1 से 8 तक। • कमरकस अवस्था से पैरों को दायें तथा बायें तानना तथा वापस लाना। हाथ नीचे लाना। संख्या 1 से 8 तक। • कमरकस अवस्था से गर्दन को बाये झुकाना, वापस लाना, दायें झुकाना वापस तथा हाथ नीचे करना। संख्या 1 से 8 तक। • हाथ पीछे पकड़ अवस्था से धड़ को बायें (दायें) झुकाना तथा वापस लाना। हाथ नीचे करना। सं0 1 से 8 तक। • पाँव कूद खेलते समय ताली बजाना तथा हाथ वापस लाना सं0 1 से 8 तक।	
विशेष कौशल के अभ्यास अधिभार 15%	• दौड़ (पृष्ठ–2)	• कोई पाँच वस्तुओं को दौड़कर छूना तथा वापस आना। • इधर–उधर दौड़ना तथा दस भिन्न–भिन्न पेड़ों को छूना तथा प्रत्येक पेड़ की गिरी हुई एक–एक पत्ती लाना। • पूरे मैदान में इधर–उधर दौड़ना तथा लौटते हुए लकड़ी, लोहा, सीमेंट से बनी वस्तुओं को छूना तथा तीन कंकड़ लेकर वापस आना। • तीन टांग की दौड़, दो–दो बालक अपने एक–एक पैर को एक साथ बांध लेते हैं तब संकेत पर एक निश्चित दूर तक भागते हैं। • 25 मी की बाधा दौड़ करना। • 50 मी की बाधा दौड़ करना।	
	• रस्सी कूदना (पृष्ठ–1)	• संकेत पर कूदना आरम्भ करना। पुनः संकेत पर दोनों पैरों से अपने स्थान पर कूदना। (15 बार) • तीन बार अपने स्थान पर कूदना। चौथी बार कूद के एक बार आगे बढ़ना बार–बार इसी क्रिया को करना। • दोनों पैरों से कूदना। संकेत पर बायें पैर से 8 बार कूदना फिर संकेत पर दायें पैर से 8 बार	

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

		कूदना। वापस दोनों पैरों से 8 बार कूदना। इसी क्रिया को कई बार दोहरान। • कूदना आरम्भ करना। संकेत पर एक लीडर के पीछे एक लाइन में कूदते हुए जाना।	
	• पशुओं की चालों का नकल करना। (पृष्ठ–1)	• मेढक की तरह चलना। • हाथी की तरह चलना। • भालू की तरह चलना। • बन्दर की तरह उछलना। • चिड़ियों की भांति उड़ना (दोनों हाथ दायें–बायें फैलाकर हिलाते हुए दौड़ना) • घोड़े की तरह दुलत्ती चाल चलना। • बिल्ली की तरह रेंगना। • खरगोश की तरह कूदना।	
	• गेंद से सम्बन्धित क्रियाएं अथवा कौशल	• pLV ik l& आमने–सामने एक दूसरे को सीने के सामने से दोनों हाथों से गेंद देना। • टप्पा मारकर सामने गेंद देना। • सिर के ऊपर से दोनों हाथों से गेंद को सामने खड़े बच्चे को देना। • धड़ के नीचे से दोनों हाथों से गेंद को सामने को देना। • गोले में खड़े बच्चों को, एक लीडर जो कि गोले की बीच में खड़ होगा, वह गेंद देगा फिर वह बच्चा गेंद वापस लीडर को देगा। • ऊपर ही की क्रिया को बच्चे गोले में दौडते हुए करेंगे। चेस्ट पास विधि से गेंद दी जायेगी।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
योगासन अधिभार 15%	• एक पाव हस्तासन (पृष्ठ–½)	• सावधान अवस्था से बायें पैर को दायीं जांघ के जोड़ पर अन्दर रखना। घुटने का मुँह बायीं ओर ही रहेगा तथा दोनों हाथों को सीने के सामने नमस्कार की मुद्रा में रखना। वापस आना। इसी क्रिया को दायें पैर से करना। आंखे बन्द रहेंगी, श्वास गति सामान्य रहेगी। संख्या 1, 2, 3, 4	
	• वीरासन (पृष्ठ–½)	• वीरासन बैठक लगाया जायेगा। दोनों पैर सामने फैलाना, बारी–बारी से बायें को दायीं ओर मोड़कर कूल्हे के पास तथा दायें पैर को मोड़कर बायीं जांघ के ऊपर से बायें ओर	

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

		रखना। पंजे जमीन पर लिटाकर रखना। दोनों हाथों से पैरों का अंगूठा पकड़ना। धड़ सीधा रखा जायेगा। दृष्टि सामने रहेगी। श्वास गति सामान्य रहेगी। संख्या 1, 2, 3, 4	
	• त्रिकोणासन (पृष्ठ–$^{1}/_{2}$)	• सावधान अवस्था से बायें पैर को 30–40 सेमी के फासले पर बायीं ओर खोलना। हाथ को दायें–बायें कन्धे की सीध में फैलाना। धड़ को धीरे–धीरे सामने झुकाते हुए दायें हाथ से बायें पैर की उंगलियों को छूना। बायां हाथ ऊपर सीधा रहेंगा। आँखें बायें हाथ की लम्बी उंगली पर स्थित रहेगी। वापस आना। पूरी क्रिया में घुटने सीधे रहेंगे। इसी क्रिया को दायें पैर से दायीं ओर करना।	
	• मक्रासन	• संख्या 1, 2, 3, 4 पेट के बल लेट कर दोनों पैरों की 30–40 सेमी के फासले पर खोलकर रखना, पंजे, एड़ी लेटे रहेंगे। कुहनी को मोड़ते हुए दोनों हथेलियों पर ठुड्डी को रखना। नजर सामने रहेगी। संख्या 1, 2, 3, 4	
जिमनास्टिक अधिभार 15%	• जिमनास्टिक की मूलभूत अवस्थाएँ	• चलने के लिए खड़ा होना। बायें पैर से आगे कदम रखना। हाथ शरीर के बगल में, सिर ऊपर सामने बराबर की ऊँचाई • पैर देखना। शरीर सीधा रखना। • उछलकर खड़े होना। बायां पैर बगल में, पैर अलग–अलग फैलाना, उछलना। • झटके से झुकना। अ. आगे ब. दायें तथा बायें स. पीछे • कमर पर हाथ/अंगूठे पीछे को, उंगलियाँ पास–पास और सामने की ओर कमर को मजबूती से पकड़ना। • सामने बाजू मोड़ना, बाजू आगे मोड़ना, सीने पर हाथ रखना। कुहनियाँ कंधे की सीध में, हथेलियाँ नीचे को बीच की उंगलियाँ एक दूसरे से छूती हों। • हाथ कंधे तक मोड़ना, बाजू ऊपर मोड़ना, कंधे सख्त उंगलियों कसी हुयी। • बाजू ऊपर रखना– बाजू आगे ऊपर उठाना, बाजू बगल में ऊपर उठाना, बाजू सिर से	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

		ऊपर खड़ी स्थिति में लाना, हथेलियां आमने–सामने हों। • बाजू दायें–बायें कंधे के बीच में उठाना, बाजू कंधे की सीध में हो, हथेलियों का मुँह नीचे की ओर हो। • बाजू सामने कंधे की सीध में हो, हथेलियाँ एक दूसरे की ओर हों। बाजू पीछे ले जाना। बाजू पीछे उठाना, हथेलियाँ एक दूसरे की ओर हों। • पंजों के बल खड़े होना, एड़ियाँ उठी हों तथा हाथ कमर पर हो।	
लोकनृत्य, गीत एवं भाव अधिभार 15%	• स्थानीय लोकनृत्य, छोटी–छोटी कविता को गीत रूप में सिखाना तथा स्थानीय लोकगीत सिखाना।	• स्थानीय, सरल एवं रोचक एक लोकगीत तथा भावगीत।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
छोटे खेल अधिभार 15%	• पेड़ को पकड़ों (पृष्ठ–$^1/_2$)	• चोर मैदान के बीच में खड़ा होता है। बाकी सारे बच्चे मैदान में दो–दो, तीन–तीन के समूह में इधर–उधर कूदते उछलते हैं। अचानक चोर संकेत पर उन्हें पकड़ने दौड़ता है। बच्चे किसी पेड़ को छूने दौड़ते हैं जो बच्चा पेड़ नहीं छून पाता वह चोर बन जाता है। स्थानीय वस्तुओं के आधार पर पेड़ की जगह कोई भी अन्य वस्तु छूने के लिए चुना जा सकता है।	
	• अंधे आदमी की दौड़ (पृष्ठ–$^1/_2$)	• 25 मी की दूरी में एक आरम्भ व अन्त रेखा अंकित की जाय। पूरी कक्षा को बराबर संख्या में 3 या 4 टीमों में बाँटा जायेगा। प्रत्येक टीम के बच्चे आरम्भ रेखा पर एक के बगल एक, तीन–तीन की संख्या पर हो जायेंगे। हर समूह के बायें तथा दायें बच्चे की आँख पर पट्टी बांध दी जायेगी। उनके अन्दर के हाथ आपस में पकड़े हुए होंगे तथा आपस में पकड़े हुए होंगे तथा बाहर के हाथ बीच वाला बच्चा पकड़ेगा तथा वह इन दोनों बच्चों को अन्त रेखा तक लेकर दौड़ेगा। बाकी टीमें भी इसी प्रकार दौड़ेगी।	
	• सर्प रिले (पृग्द–$^1/_2$)	• दो टीमों के सामने दस मी के भीतर पांच मुग्दर रखे जाते हैं। प्रत्येक टीम को संकेत	• शिक्षक द्वारा सतत्

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

		पाने पर आरम्भ रेखा से मुग्दर के अन्दर तथा बाहर जिग जैग दौड़ना तथा वापस भी इसी प्रकार आना होगा तथा टीम के पहले खिलाड़ी को छूकर पीछे खड़े होना होगा। जो टीम पहले दौड़ समाप्त करेगी, वह विजयी मानी जायेगी।	निरीक्षण।
	• गेंद छू	• 20 मी का गोला बना हो, चोर गोले के बीच में खड़ा होगा। बाकी बच्चे गोले के चारों ओर खड़े होकर एक–दूसरे को गेंद पास करेंगी तथा चोर गेंद को छूने, पकड़ने या मारने का प्रयास करेगा। यदि वह गेंद को किसी भी प्रकार छू लेता है तो जिस बच्चे ने आखिरी बार गेंद छुयी थी वह चोर बन जायेगा।	

d{kk 5

lEck/k	milEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
[k.M v प्रारम्भिक व्यायाम [k.M c व्यायाम तालिका–1 अधिभार 25%	• कक्षा एक से तीन में उल्लिखित • बाहु का व्यायाम • पैर का व्यायाम • धड़ का व्यायाम • स्फूर्तिदायक व्यायाम	• कक्षा 1 से 3 तक के लिए दी गई क्रियाओं में से ही प्रारम्भिक व्यायाम के लिए कोई तीन या चार क्रियाओं को चुना जायें। • हाथ सीने मोड़ अवस्था से दोनों हाथों को सामने फैलाना, वापस लाना, दायें–बायें तानना, वापस लाना एवं हाथ–नीचे करना। संख्या 1 से 16 तक। • कमर कस अवस्था से बायां पैर सामने रखना उस पर झुकाव देना, सीधे होना, पैर वापस रखना यही क्रिया दायें पैर से करना तथा हाथ नीचे लाना। संख्या 1 से 16 तक। • हाथ सिर पर रखे अवस्था में धड़ को दायें मोड़ना, वापस लाना तथा हाथ नीचे लाना। संख्या 1 से 16 तक। • हाथ सीने मोड़ अवस्था में पांव कूद खोलना तथा हाथ दायें बायें फैलाना, वापस लाना तथा हाथ नीचे करना। सं0 1 से 16 तक।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
खण्ड स व्यायाम तालिका	• बाहु का व्यायाम (पृष्ठ–3)	• हाथ गर्दन रख अवस्था से हाथों को दायें–बायें फैलाना तथा वापस लाना।	

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

		संख्या 1 से 16 तक।	
	• पैर का व्यायाम (पृष्ठ–2)	• कमर कस अवस्था से बायें पैर को बांई ओर रखना झुकाव देना सीधे होना, यही क्रिया दांये पैर से करना तथा हाथ नीचे लाना। संख्या 1 से 16 तक।	
	• धड़ का व्यायाम (पृष्ठ–1)	• हाथ कंधे रख अवस्था से पांव कूद खोलना दोनों हाथों से पैरों को छूना। हाथ वापस लाना एवं हाथ नीचे करना, पांव कूद मिलाना। संख्या 1 से 16 तक।	
	• स्फूर्तिदायक व्यायाम (पृष्ठ–3)	• सावधनी से पांव कूद खोलते हुए हाथ दायें–बायें को फैलाना तथा वापस आना, पांव कूद खोलते हुए सामने ताली बजाना वापस आना। संख्या 1 से 16 तक।	
	• स्फूर्तिदायक व्यायाम (पृष्ठ–3)	• सावधनी से पांव कूद खोलते हुए हाथ दायें–बायें को फैलाना तथा वापस आना, पांव कूद खोलते हुए सामने ताली बजाना वापस आना। संख्या 1 से 16 तक।	
विशेष कौशल के अभ्यास अधिभार 25%	• दौड़ (पृष्ठ–4)	• 25 मी तथा 5 मी की बाधा दौड़। • 25 मी की शटिल दौड़। • 50 मी की बाधा दौड़। • एक टांग की दौड़ 25 मी। • 50 मी की तीन टांग की दौड।	
	• रस्सी कूदना (पृष्ठ–$^1/_2$)	• कक्षा 4 की क्रियाओं को दोहराना। • तीन–तीन और चार–चार के समूह में रस्सी कूदना। • रस्सी कूदते हुए 25 मी की दौड़ लगाना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
	• बॉल से सम्बन्धित क्रियाएं (पृष्ठ–$^1/_2$)	• कक्षा 4 की क्रियाओं को दोहराना	
	• खड़ी लम्बी कूद (पृष्ठ–1)	• पिट से तीन फीट की दूरी पर उछाल पिट से दोनों पैर से खड़े कूद के लेना। कूद लेने के लिए दोनों हाथों को जोर से पीछे से झुलाकर शरीर के	

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

		ऊपर ले जाना और उछाल लेना।	
	• ऊँची कूद	• नीची बेंच के ऊपर या क्रास बार पर 30 सेमी की ऊँचाई से बच्चों को कुदाना, रस्सी द्वारा भी यह क्रिया कराई जा सकती है। धीरे–धीरे एक दो इंच ऊपर करते जाना।	
योगासन अधिभार 25%	• पश्चिमोत्तानासन (पृष्ठ–1)	• कक्षा 4 के आसनों को दोहराना, बैठकर दोनों पैरों को सामने फैलाना। हाथ बगल में रहेंगे। धीरे–धीरे श्वास लेते हुए हाथों को दायें बायें से ऊपर ले जाना श्वास छोड़ते हुए धड़ को आगे झुकाना हाथों से पंजों को पकड़ना, सिर को घुटनों से लगाना, घुटने सीधे रहेंगे। संख्या 1, 2, 3, 4	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
	• वक्रासन (पृष्ठ–2)	• दोनों पैरों को सामने फैलाकर बैठाना। दायें पैर को मोड़कर बायें हाथ को सामने दायें पैर के पास तथा दायें हाथ को दायी तरफ पीछे रखना, गर्दन दायें कंधे की तरफ जायेगी। श्वास गति सामान्य रहेगी। सं0 1, 2, 3, 4	•
जिमनास्टिक अधिभार 25%	• जिमनास्टिक की मूलभूत अवस्थाएँ (पृष्ठ–3)	• पैर सामने, पीछे और बगल में उठाना। घुटना सीधा रहेगा पंजा जमीन की ओर रहेगा, हाथ कमर पर रहेंगे। • घुटने आधे मोड़ना हाथ कमर पर रहेंगे। • घुटने पूरे मोड़ना तथा कमर पर हाथ रखना। • कमर पर हाथ, धड़, बायें तथा दायें झुकाना। • डंड अवस्था–हाथ सीधे जमीन पर रखे हों, सिर ऊपर धड़, व पैर एक सीध में रहंगे, पंजे खड़े रहेंगे। • विपरीत डंड अवस्था– हाथ सीधे रखना, एड़ियां जमीन को छूती हों, धड़, कंधे और सिर एक सीध में रहेंगे। मुँह ऊपर की ओर रहेगा। • अर्द्ध हलासन–पीठ के बल लेटने की स्थिति से दोनों पैरों को समकोण तक उठाना, घुटने सीधे रहेंगे। हाथ बगल में सीधे रखे रहेंगे।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

		• पैरों को सामने फैलाकर बैठना– पीठ के बल लेटने की स्थिति से धड़ को जमीन से समकोण तक ऊपर उठाना, धड़ सीधा पैर सामने हथेलियाँ जमीन पर तथा घुटने सीधे रहेंगे। • एक घुटने के बल बैठना बांये घुटने पर दायें पैर को आगे बढ़ाकर घुटने मोड़कर जमीन पर रखना, बांयें घुटने को जमीन से छुआना। हाथ कमर पर रखना। • चांदनी रात है, तारों की छांव है, आज रात भूत नहीं आयेगा कहते हुए सरकते या रेंगते हुए उस कोने तक जाते हैं जहाँ भूत छिपकर सोता रहता है। जब भूत 'शू' चिल्लाता है तो वे अपने घर की ओर भागते हैं और वह उनका पीछा करता है। जो खिलाड़ी पकड़ा जाता है उसके बाद वह भूत बनता है।	
	• बाधा दौड़ रिले (पृष्ठ–1)	• दो टीमें आरम्भ रेखा के पीछे खड़ी हो जाती हैं। आरम्भ रेखा से लगभग 30 मी की दूरी पर दो ऐसे निशान बनाये जायेंगे जिनसे खिलाड़ी मुड़कर वापस आयेगा। संकेत पर दोनों टीमों के पहले खिलाड़ी भागकर निशान से मुड़कर वापस आते हैं और अपनी टीम के दो नम्बर के खिलाड़ी को छूते हैं फिर वे दौड़ना शुरु करते हैं। जो टीम पहले दौड़ समाप्त करती है वह विजयी मानी जाती है।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण।
	• खाई लांघ रिले (पृष्ठ–1)	• आरम्भ और मोड़ रेखा के बीच में चार या पांच फुट चौड़ी दो समानान्तर रेखाएं खींच देते हैं। पूरी दौड़ बाधा रिले की भांति ही होगा केवल अन्तर इतना है कि जाते और लौटते दोनों समय उस चार–पांच फुट के फासलें को लांघ कर पार करना होगा।	

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

ekfl d foHkktu

ekg	lEck/k çdj.k		
	d{kk 1] 2] 3	d{kk 4	d{kk 5
जुलाई	• शरीर को लोचपूर्ण तथा गर्म बनाने हेतु प्रारम्भिक क्रियाएं	• व्यायाम तालिका–1	• व्यायाम तालिका–1
अगस्त	• शरीर के समस्त अंगों को पर्याप्त व्यायाम द्वारा स्वस्थ एवं सशक्त बनाना	• व्यायाम तालिका–2	• व्यायाम तालिका–2
सितम्बर	• विशेष क्रियाएं • (सत्र परीक्षा)	• विशेष कौशल के अभ्यास, दौड़, रस्सी कूद • (सत्र परीक्षा)	• विशेष कौशल के अभ्यास, दौड़, रस्सी कूद, बॉल • (सत्र परीक्षा)
अक्टूबर	• विशेष क्रियाएं	• विशेष कौशल के अभ्यास, पशुओं की चालों की नकल	fo'k"k dk'ky l; vH;kl& • खड़ी लम्बी कूद • ऊँची कूद
नवम्बर	• विभिन्न प्रकार की दौड़ • (सत्र परीक्षा)	;kxklu& • एक पाद हस्तासन • वीरासन • (सत्र परीक्षा)	;kxklu& • पश्चिमोत्तासन • वक्रासन • (सत्र परीक्षा)
दिसम्बर	• स्थानीय लोक नृत्य, छोटे खेल, अमरुद, दौड़, छुआ–छुअव्लल • (अर्द्धवार्षिक परीक्षा)	;kxklu& • त्रिकोणासन • मक्रासन • (अर्द्धवार्षिक परीक्षा)	• जिम्नास्टिक • (अर्द्धवार्षिक परीक्षा)
जनवरी	• गीत • आसन	• जिम्नास्टिक	• पुनरावृत्ति
फरवरी	• पुनरावृत्ति • (सत्र परीक्षा)	• लोकनृत्य, गीत एवं भाव • (सत्र परीक्षा)	• पुनरावृत्ति • (सत्र परीक्षा)
मार्च	• जिमनास्टिक • छोटे खेल : एक टांग पर • पीठ पर तड़ी • बिल्ली और चूहा	NkV [ky& • पेड़ को पकड़ो • अंधे आदमी की दौड़ • सर्प रिले • गेंद छू	• बाधा दौड़ रिले • खाई लांघ रिले
अप्रैल	• छोटे खेल : फूल और हवा • छाया पकड़ • पुनरावृत्ति	• पुनरावृत्ति	• पुनरावृत्ति
मई	• वार्षिक परीक्षा	• वार्षिक परीक्षा	• वार्षिक परीक्षा
जून	• ग्रीष्मकालीन अवकाश	• ग्रीष्मकालीन अवकाश	• ग्रीष्मकालीन अवकाश

LdkmfVax@xkbfMax

LdkmfVax@xkbfMax D;k\

इस विषय के माध्यम से बच्चों के अन्तःकरण को संस्कारयुक्त बनाना हैं। जिससे उनमें सच्ची मानवता के मूल्यों का हम विकास कर सकें।

स्काउटिंग/गाइडिंग से बच्चों में अनुशासन, देशभक्ति, कर्त्तव्य परायणता, परस्पर सहयोग, श्रमनिष्ठा जैसी भावनाओं को जागृत किया जा सकता है। इसके साथ ही स्वयं 'करके सीखो' की भावना जागृत करते हुए बच्चें को स्वावलम्बी बनाया जा सकता है यथा–अपनी पोशाक, कपड़े, जूते साफ करना, कपड़े में बटन टाँकना आदि।

स्काउटिंग/गाइडिंग के नियमों एवं प्रतिज्ञाओं में निहित आदर्शों को ग्रहण करने की क्षमता का भी विकास होता है। इस विषय की शिक्षा बच्चों का सर्वांगीण विकास करने में (शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक,चारित्रिक) सफल भूमिका का निर्वाह निरीक्षण करती हैं, यथा–भोजन से पहले प्रार्थना करना, ईश्वर में आस्था की भावना को विकसित करते हुए विश्व बन्धुत्व की भावना भी विकसित करता है।

घर तथा स्कूल में प्रतिदिन एक अच्छा अथवा भलाई का कार्य करने से बच्चों में समाज सेवा एवं देश सेवा की भावना विकसित होती है यथा–घुटने मोड़ने एवं टखने छूने वाली कसरतें करने से न केवल बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है वरन् अच्छे मानसिक विकास क्रिया में भी सहायक होता है। इसीलिए कहा भी जाता है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।

स्काउटिंग/गाइडिंग शिक्षा में प्राकृतिक वातावरण से सामीप्य स्थापित करने का भी उचित अवसर मिलता है यथा–कम से कम दो पेड़ लगाना बच्चों को पर्यावरण सुरक्षा के लिए प्रेरित करता है।

प्राथमिक सहायता करने की जानकारी, कटना, जलना, खुरेचों के सम्बन्ध में प्राप्त होती है। अल्प बचत खाता खोलना, बच्चों को बजट बनाना, धन संचय करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार किसी भी धार्मिक उत्सव में सम्मिलित होकर हम परस्पर प्रेम, सहयोग, सद्भावना, एकता आदि गुणों को अपने जीवन में सहज रूप से शामिल करने में सफल हो जाते हैं।

dc ;k ckyohj] cqycqy ;k ohjckyk çoʼk

- जंगल की कहानी (कब)। तारा की कहानी (बुलबुल)।
- कब/बुलबुल नियम, सिद्धान्त, प्रतिज्ञा और गर्जना का तात्पर्य समझाना।
- कब/बुलबुल प्रणाम करना व बायां हाथ मिलाना व क्यों मिलाया जाता है, जानना।
- माता–पिता द्वारा निर्देशित दैनिक प्रार्थना।
- घर पर नित्य एक भलाई का काम करना।

Formatted: Bullets and Numbering

d{kk&1 ,o 2

¼dc½ çFke pj.k ¼cqycqy½ dkey i[k

Formatted: Bullets and Numbering

- अपनी पोशाक, कपड़े, जूते आदि साफ रखना व कपड़ों पर बटन टांकना, जानना।
- भोजन से पहले प्रार्थना करना जानना।
- घर एवं स्कूल में नित्य भलाई का काम करना।
- घुटने मोड़ने एवं टखने छूने वाली कसरतें नित्य करना और स्वास्थ्य की अच्छी आदतें कायम रखना।
- निम्नलिखित में से किन्हीं दो शारीरिक व्यायाम का अभ्यास (कब के लिए)–

  (अ) सोमर साल्ट

  (ब) मेढक छलांग

  (स) फुदकना

  (द) कूदना (बुलबुल के लिए)।

  (अ) संतुलन कर चलना

  (ब) टेनिस या उतनी वजन की गेंद तीन मीटर से फेंक सकना।

  (स) गुपकना, फुदकना, कूदना।

Formatted: Bullets and Numbering

- दस प्रकार की पत्तियाँ और फूल इकट्ठा करना और प्रत्येक के नाम बताना।
- घड़ी देखकर समय बता सकना।
- डाक्टरी गाँठ और खूँटा गाँठ बाँध लेना और उनके प्रयोग जानना।
- (क) बाइसिकिल चला लेना।

  (ख) लिफाफे पर पता लिख सकना और डाक में डालने के लिए उस पर टिकट चिपकाना जानना।

  (ग) राष्ट्रीय झण्डे के फहराने और राष्ट्रीय गान गाने के समय की रस्में कर सकना।

  (घ) दीक्षा के समय प्राप्त बैज का तात्पर्य जानना।

  (ड.) टेलीफोन का प्रयोग जानना।

  (च) (केवल कब के लिए) पेड़ या रस्सी पर चढ़ सकना।

Formatted: Bullets and Numbering

- (केवल कब के लिए) कब की प्रार्थना और झण्डा गान गाना जानना। (केवल बुलबुल के लिये) माता–पिता के नाम और पते जानना।
- 11. (केवल बुलबुल के लिये) 8 फ्लाक की बैठकों में उपस्थिति।

d{kk&3

¼dc½ f}rh; pj.k ¼cqycqy½ jtr i[k

- माता–पिता द्वारा अपने गाँव या स्थानीय कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों के विषय में जानना और उनके विषय में अपने कब मास्टर या फ्लाक लीडर को बताना।
- अपने माता–पिता से शीघ्र टूटने वाली, नुकीली और मूल्यवान वस्तुओं की सुरक्षा करना जानना।
- किसी बेकार पदार्थ से कोई दस्तकारी की वस्तु बनाना या मिट्टी से कोई वस्तु बना सकना।
- किसी स्थान विषय के फूलों और वृक्षों का निरीक्षण और कब मास्टर लीडर को जानकारी देना। उनमें से प्रत्येक में से एक को आप किसे पसन्द करते हैं और क्यों?
- अपने द्वारा इकट्ठा की गई वस्तुओं को सुरक्षित करना।
- जुलाहा गाँठ और मछुआ गाँठ बाँधना जानना और उनका उपयोग जानना।
- कटना, जलना एवं खुरेंचों में प्राथमिक सहायता करना।
- अपने छक्के के साथ कब मास्टर/फ्लाक लीडर की देख–रेख में अपने विद्यालय या मुहल्ले में भलाई का काम।
- निम्नलिखित में से तीन का प्रदर्शन कर सकना :–

  (अ) कम से कम एक महीने तक अपना बिस्तर नित्य लगाना।

  (ब) अपने राष्ट्रीय झण्डे के महत्व को जानना।

  (स) बीज बोना और पौधे लगाना और उनका विकास, कब (केवल बुलबुल) बड़े फीडर या फाउन्टेन बनाना और तीन माह तक रखना कब मास्टर/फ्लाक लीडर बताना।

  (द) अपनी पसन्द का कोई चित्र खींचना या पेण्ट करना।

  (य) हरीकेन लालटेन की बत्ती ठीक करना, तेल भरना, जलाना और बुझाना जानना।

  (र) (केवल बालवीर) किसी मार्ग पर पाँच मिनट दौड़कर या तीन मिनट साइकिल पर चलकर कम से कम दस शब्दों का संदेश ठीक–ठाक पहुँचाना, (केवल वीरबाला) रुमाल बनाना और अपनी माता को भेंट करना।

  (ल) (केवल बुलबुल) कोमल पंख के रुप में 8 फ्लाक बैठकों में सम्मिलित होना।

Formatted: Bullets and Numbering

d{kk&4

¼dc½ r`rh; pj.k ¼cqycqy½ Lo.kZ i[k

- हस्तकला की कोई वस्तु विशेष रुप से अपने स्थान के किसी अपंग बच्चे के लिए तैयार करना।
- कम्पास की 8 दिशाओं की जानकारी।
- अपने कब मास्टर/फ्लाक लीडर को अपने जिलों की विशेष रुप से और सामान्यत: अपने प्रदेश के लोगों की भाषा और पोशाक की अपनी जानकारी से संतुष्ट करना।
- मोच और डंक लगने का प्राथमिक उपचार जानना और घाव साफ कर सकना।
- पैक फ्लाक कार्यक्रम के अन्तर्गत कम से कम दो प्रार्थना सभाओं में भाग लेना।
- किसी सार्वजनिक स्थान में अपने पैक/फ्लाक की भलाई के कार्यक्रम में भाग लेना।
- कम से कम तीन इन्द्रिय शिक्षण के खेलों में भाग लेना।

- एक दिन के पैक/फ्लाक शिविर में भाग लेना।
- छोटे बच्चे की सफाई की आदत में सहायता करना।
- निम्नलिखित में से एक दक्षता के पदक की जानकारी :—

(क) निरीक्षक

(ख) टीम खिलाड़ी

(ग) गृहकला

(घ) गाइड

- (केवल बुलबुल) किसी अतिथि का स्वागत करना।
- (केवल बुलबुल) कम से कम 8 फ्लाक बैठकों में रजत पंख के बाद भाग लेना।

Formatted: Bullets and Numbering

d{kk&5

¼dc½ prFk pj.k ¼cycy½ ghjd i[k

- किसी पालतू पशु/पक्षी का पालना केवल कब के लिए और 3 माह तक उसकी देख—रेख करना या स्थानीय पशु—पक्षियों का 3 माह तक निरीक्षण करना और उनका रिकार्ड रखना या (केवल बुलबुल के लिये) उत्सव की सजावट में सहायता या शरबत बनाकर पिलाना या मेज लगाना।
- एक रात्रि के पैक/फ्लाक शिविर में भाग लेना।
- पैक/फ्लाक साहसिक यात्रा में भाग लेना।
- ध्रुव गाँठ व एक गोल बनकर दो अर्द्ध फाँस गाँठे बांधना एवं उनका उपयोग जानना।
- अल्प बचत खाता खोलना या कम से कम दो पेड़ लगाना और कम से कम 6 माह तक उनका विकास देखना।
- किसी धार्मिक उत्सव में सम्मिलित होकर अपने कब—मास्टर या फ्लाक लीडर को अपने अनुभव बताना।
- निम्नलिखित में से एक दक्षता का पदक पास करना :—
  (क) विश्व संरक्षण
  (ख) प्राथमिक सहायता
  (ग) साइकिलिस्ट
  (घ) माली
- किसी पेट्रोल/ट्रूप कम्पनी को एक माह तक पड़ोस में काम करते देखना और अपने अनुभव कब मास्टर/फ्लाक लीडर को बताना या स्थानीय व्यक्ति के नाम व पते ज्ञात करना जो स्काउट या गाइड रहे हों या निकटतम पुलिस स्टेशन, अस्पताल/दवाखाना, रेलवे स्टेशन,अग्नि शामक स्थान और बस स्टेशन की जानकारी। (केवल बुलबुल) स्वर्ण पंख के बाद 8 फ्लाक की बैठकों में भाग लेना।

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

dc@cycy dk fodkl Øe

(1) प्रवेश।
(2 प्रथम चरण/ कोमल पंख
(3) द्वितीय चरण/ रजत पंख
(4) तृतीय चरण/ स्वर्ण पंख
(5) चतुर्थ चरण/ हीरक पंख

- एक लड़का/लड़की 6 वर्ष की आयु पूरी करने पर ही कब/वीरबाला हो सकते है।
- कब/बुलबुल कम से कम प्रवेश के बाद ही प्रथम चरण/कोमल पंख पास कर सकता है।
- कम से कम 3 माह की सेवा के उपरान्त ही प्रथम चरण कब या रजत पंख बुलबुल हो सकती है।
- कम से कम 6 माह की सेवा उपरान्त ही द्वितीय चरण कब या रजत पंख बुलबुल क्रमशः तृतीय चरण कब व स्वर्ण पंख बुलबुल हो सकती है।
- कम से कम 9 माह की सेवा के उपरान्त की तृतीय चरण कब या स्वर्ण पंख बुलबुल क्रमशः चतुर्थ चरण कब या हीरक पंख बुलबुल हो सकती है।
- प्रवेश और प्रथम चरण, कोमल पंख का अभिक्षण व परीक्षण कब मास्टर/फ्लाक लीडर करेंगे।
- द्वितीय चरण/रजत पंख और उससे आगे की व दक्षता के पदको की शिक्षा व परीक्षा की व्यवस्था प्रशिक्षण सलाहकार करेंगे।

Formatted: Bullets and Numbering

LdkmfVax@xkbfMax

ekfld foHkktu

ekg	d{kk 1 ,oa 2	d{kk 3	d{kk 4	d{kk 5
जुलाई से सितम्बर (सितम्बर में सत्र परीक्षा)	(कब) प्रथम चरण (बुलबुल) कोमल पंख– • पोशाक, कपड़े, जूते आदि साफ रखना एवं जानना तथा कपड़े पर बटन टाँकना। • भोजन से पहले प्रार्थना। • घर एवं स्कूल में नित्य भलाई • स्वास्थ्य की अच्छी आदतें कायम रखना।	(कब) द्वितीय चरण (बुलबुल) रजत पंख– • माता–पिता, गाँव तथा कुछ स्थानीय, महत्वपूर्ण व्यक्तियों के विषय में जानना एवं उनके बारे में कब–मास्टर तथा फ्लाक लीडर को बताना। • मता–पिता से शीघ्र टूटने वाली नुकीली एवं मूल्यवान वस्तुओं की सुरक्षा करना सीखना।	(कब) तृतीय चरण (बुलबुल) स्वर्ण पंख– • हस्तकला की कोई वस्तु विशेष रूप से किसी अक्षम बच्चे के लिए तैयार करना। • कम्पास की 8 दिशाओं की जानकारी। • जिले एवं प्रदेश के लोगों की भाषा एवं पोशाक की जानकारी से कब/मास्टर/फ्लाक लीडर को बताकर संतुष्ट करना। • मोच एवं डंक लगने पर प्राथमिक उपचार एवं घाव साफ करना।	(कब) चतुर्थ चरण (बुलबुल) हीरक पंख– • पालतू पशु, पक्षी का पालन उसकी देखरेख निरीक्षण तथा रिकार्ड एवं केवल बुलबुल के लिए–उत्सव की सजावट में सहायता, शरबत बनाकर पिलाना या मेज लगाना। • एक रात्रि के पैक। फ्लाक शिविर में भाग लेना, साहसिक यात्रा में भाग लेना। • ध्रुव गाँठ, 2 अर्द्ध फ्रांस गाँठ बाँधना एवं उपयोग • बचत खाता खोलना। • 2 पेड़ लगाना एवं उनकी देखरेख।
अक्टूबर से दिसम्बर (नवम्बर में सत्रीय तथा दिसम्बर में अर्द्धवार्षिक परीक्षा)	• घुटने मुड़ने एवं टखने छूने की नित्य कसरतें करना। • निम्न में से कोई 2 व्यायाम करना– – सोमर साल्ट – मेढ़क छलांग – फुदकना – कूदना • संतुलित कर चलना • टेनिस या उतनी वनज की गेंद तीन मीटर तक	• बेकार वस्तुओं से दस्तकारी की वस्तु बनाना तथा मिट्टी से कोई वस्तु बनाना। • फूलों एवं वृक्षों का निरीक्षण कर कब–मास्टर लीडर को जानकारी देना तथा उनमें आप किसे, क्यों पसन्द करते हैं। • अपने द्वारा एकत्रित वस्तुओं को सुरक्षित करना।	• पैक फ्लाक कार्यक्रम की कम से कम दो प्रार्थना सभा में भाग लेना। • किसी सार्वजनिक स्थान में पैक/फ्लाक के भलाई के कार्य में भाग लेना। • कम से कम तीन इन्द्रिय शिक्षण के खेलों में भाग लेना। • एक दिन के पैक/फ्लाक शिविरि में भाग	• धार्मिक उत्सव में सम्मिलित होकर अनुभव कब मास्टर को बताना। • निम्न में से किसी एक दक्षता का पदक पास करना– – विश्व संरक्षण – प्राथमिक सहायता – साइकिलिस्ट – माली • किसी पैट्रोल/ट्रूप कम्पनी के 1 माह तक काम देखना, अनुभव बताना। स्थानीय गाइड, स्काउड का नाम पता ज्ञातकर बताना,

	फेंकना। • गुपकना, फुदकना, कूदना।	• जुलाहा गाँठ एवं मछुआ गाँठ बाँधना एवं उसका उपयोग।	लेना। • छोटे बच्चे की सफाई करने की आदत में सुधार करना।	पुलिस स्टेशन, अग्निशमन स्थान एवं बस स्टेशन की जानकारी। केवल बुलबुल स्वर्ण पंख के बाद चार्ट/पोस्टर फ्लाक की बैठक में भाग लेना।
जनवरी से मार्च (मार्च में सत्र परीक्षा)	• दस प्रकार पत्तियाँ इकट्ठा करना एंव नाम बताना। • घड़ी देखकर समय बताना। • डाक्टरी गाँठ एवं खूँटा गाँठ बांधना एवं प्रयोग जानना।	• कटना, जलना एंव खुरोंच में प्राथमिक सहायता। • कब–मास्टर की देखरेख में विद्यालय या मुहल्ले में भलाई का कार्य करना।	• निम्न में से एक दक्षता के पदक की जानकारी– • निरीक्षक • टीम खिलाड़ी • गृह कला • गाइड	• कब/बुलबुल का विकास क्रम– 1 प्रवेश 2 प्रथम चरण/कोमल पंख 3 द्वितीय चरण/रजत पंख 4 तृतीय चरण/स्वर्ण पंख 5 चतुर्थ चरण/हीरक पंख।
अप्रैल से मई (मई में वार्षिक परीक्षा)	• साइकिल चलाना • लिफाफे पर पता लिखना, टिकट लगाना • राष्ट्रीय झण्डे का फहराना, राष्ट्रगान गाने की रस्में करना। • दीक्षा के समय प्राप्त बैच का अर्थ जानना। • टेलीफोन का प्रयोग जानना। • पेड़ या रस्सी पर चढ़ना सीखना • कब की प्रार्थना, झण्डागान गाना जानना। • माता–पिता का नाम एवं पता जानना।	• निम्न में से किसी तीन का प्रदर्शन– • कम से कम एक माह तक अपने नित्य बिस्तार लगाना। • राष्ट्रीय झण्डे के महत्व को जानना। • बीज बोना, पौध लगाना, उसका विकास, तथा फाउन्टेन बनाना एवं रखना। • अपनी पसन्द का चित्र बनाना एवं पेंट करना। • हरीकेन लालटेन की बत्ती ठीक करना तेल भरना, जलाना एवं बुझाना सीखना। • बालवीर–पाँच	• केवल बुलबुल किसी अतिथि का स्वागत करना। • केवल बुलबुल–कम से कम 8 फ्लाक बैठकों में रजत पंख के बाद भाग लेना।	• एक लड़का/लड़की छः वर्ष के बाद कब/वीरवाला हो सकता है। • कब/बुलबुल कम से कम प्रवेश के बाद ही प्रथम चरण/कोमल पंख पास कर सकता है। • प्रथम चरण कब या रजत पंख बुलबुल 3 माह की सेवा के बाद हो सकते हैं, • द्वितीय चरण कब या रजब पंख बुलबुल 6 माह की सेवा के बाद तृतीय चरण कब व स्वर्ण पंख बुलबुल हो सकते हैं। • तृतीय चरण कब या स्वर्ण पंख बुलबुल क्रमशः चतुर्थ कब या हीरक पंख बुलबुल 9 माह की सेवा के बाद हो सकते हैं।

		मि0 दौड़कर या तीन मि0 साइकिल पर चलकर 10 शब्दों का सन्देश पहुचाना। • वीरबाला–रुमाल बनाना एवं माता को भेंट करना। • केवल बुलबुल–8 फ्लाक बैठकों में सम्मिलित होना।		• प्रवेश, प्रथम चरण, कोमल पंख का परीक्षण कब फ्लाक लीडर करेंगे; • द्वितीय चरण/रजत पंख और उसके आगे की दक्षता के पदकों की शिक्षा एवं परीक्षा की व्यवस्था प्रशिक्षण सलाहकार करेंगे।

uSfrd f'k{kk

नैतिक शिक्षा का उद्देश्य बालक में उत्तम चरित्र का निर्माण है। हमारा प्रयास है कि बालक में मानवीय मूल्यों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सुरुचिपूर्ण व्यवहार, सौन्दर्यानुभूति तथा स्वस्थ खेल–भावना का विकास हो सके। बालक के व्यक्तित्व–निर्माण और वस्तु–विश्लेषण की क्षमता की वृद्धि में नैतिक गुणों की आवश्यकता है। इस पृष्ठभूमि में नैतिक शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों का उल्लेख निम्नलिखित रूपों में किया जा सकता है।

Formatted: Bullets and Numbering

- बालक का शारीरिक, भावात्मक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास करना।
- सद्व्यवहार, दायित्व बोध और नागरिकता के गुणों का विकास करना।
- देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करना।
- सर्व धर्म–समभाव की अनुभूति कराना।
- सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय बोध का जागरण करना।
- ईश्वरसत्ता की अनुभूति और उसमें विश्वास उत्पन्न करना।
- स्वच्छता, सहयोग, समयपालन, सच्चाई, ईमानदारी, सहानुभूति, स्वाध्याय, साहस और समानता आदि गुणों का विकास करना।
- माता–पिता, शिक्षकों तथा बड़ों के प्रति सम्मान की भावना का विकास करना।
- पशु–पक्षी तथा सभी प्राणि जगत के प्रति दया की भावना का विकास करना।
- धर्म, भाषा, जाति, क्षेत्र, लिंग आदि के भेदभाव से ऊपर उठकर व्यवहार करने की आदत का विकास करना।
- धैर्य, अहिंसा, प्रसन्नता और रचनात्मकता का विकास करना।

d{kk 1 rFkk 2

lEck/k	mi lEck/k	fØ;kdyki	eY;kdu
स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा अधिभार–13%	• शरीर, वस्त्र, निजी–कक्ष एवं कक्षा–कक्ष की स्वच्छता। प्रातः जागरण तथा व्यायाम। (पृष्ठ–4)	• आँख, दाँत, मुख की सफाई, स्नान, धुले कपड़े पहनना तथा सफाई करना। व्यायाम तथा पौष्टिक भोजन करना।	• शरीर और वस्त्रों का निरीक्षण, व्यायाम तथा भोजन सम्बन्धी प्रश्न।
आपसी सहयोग अधिभार–12%	• घर और विद्यालय में मिलजुलकर कार्य करने का भाव जगाना। (पृष्ठ–3)	• मिलजुलकर खेलना तथा भोजन करना। आपसी सहयोग सम्बन्धी चित्रों कहानियों से प्रेरणा प्राप्त करना।	• कार्यों का विवरण लेना तथा चित्राधारित प्रश्न।
समय–पालन तथा नियमितता अधिभार–13%	• दैनिक कार्यों को समय से और नित्य करने की आदत का विकास। (पृष्ठ–2)	• समय का पालन और नियमित कार्य करने वाले बालक–बालिकाओं एवं महान व्यक्तियों के जीवन–प्रसंगों को सुनाना।	• निरीक्षण एवं प्रश्न।
सत्य–पालन अधिभार–12%	• सत्य पालन की प्रेरणा देना। (पृष्ठ–2)	• सत्यवादी महान व्यक्तियों की घटनाओं को सुनाना, सुनना।	• समय–पालन से सम्बन्धित कहानियाँ तथा प्रश्न।
सुव्यवस्था अधिभार–12%	• अपनी वस्तुओं को उचित स्थान पर रखने की आदत का विकास (पृष्ठ–3)	• सुव्यवस्था सम्बन्धी कहानी कथन। घर और विद्यालय में वस्तुओं को ठीक प्रकार रखना।	• प्रेक्षण एवं मौखिक प्रश्न।
शिष्टाचार अधिभार–13%	• माता–पिता, शिक्षकों तथा बड़ों के प्रति शिष्ट व्यवहार करने की प्रेरणा। (पृष्ठ–3)	• परिवार, विद्यालय तथा समाज में शिष्ट व्यवहार करना और प्रेरक प्रसंग सुनाना।	• अपेक्षित परिवर्तन का निरीक्षण एवं मौखिक प्रश्न
अहिंसा अधिभार–13%	• जीवों के प्रति दया एवं करुणा की भावना का विकास। (पृष्ठ–3)	• तितली, चींटी आदि जीवों को न सताने की प्रेरणा। जीवों पर दया करने वाले महान व्यक्तियों के जीवन के प्रेरक–प्रसंग सुनाना।	• व्यवहार का निरीक्षण एवं प्रश्न।
प्रेम, देशप्रेम अधिभार–13%	• आपसी प्रेम तथा देशप्रेम की भावना का विकास। (पृष्ठ–3)	• आपसी प्रेम तथा देशभक्तों के प्रेरक प्रसंगों को सुनाना तथा चित्रों से उनका परिचय कराना।	• चित्राधारित प्रश्न तथा अभिमत।

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

d{kk 3 rFkk 4

lEck/k x.k	fo"k;oLrq	fØ;kdyki	eY;kdu
आदर्श एवं शिष्टाचार अधिभार–09%	• पौराणिक कथाएँ, महान व्यक्तियों के जीवन प्रसंग तथा उन पर आधारित नाटक। शिष्टाचार के नियम। (पृष्ठ–4)	• कहानी, अभिनय, वाद–विवाद आयोजित करना। समाचार पत्रों में प्रकाशित घटनाओं को सुनाना। स्वयं के व्यवहार से आदर्श प्रस्तुत करना।	• छात्रों के व्यवहार का निरीक्षण। बच्चे के व्यवहार को जानना।
स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सुव्यवस्था अधिभार–10%	• स्वच्छता एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी चार्ट, पत्र–पत्रिकाएँ, कहानी, नाटक, कविता, लेख आदि। सन्तुलित आहार, विद्यालय, पास–पड़ोस तथा परिवार की स्वच्छता एवं सुव्यवस्था। (पृष्ठ–4)	• विद्यालय, पास–पड़ोस में स्वच्छता अभियान चलाना, व्यायाम, योगासन की कक्षाएं लगाना, खेलकूद कराना, गांव तथा नगरों में स्वच्छता का प्रयास, बैठने तथा खड़े होने की सही मुद्रा।	• बच्चों की दिनचर्या जानना। विद्यालय परिसर में छात्रों के व्यवहार का प्रेक्षण। बस्ते की सामग्री का निरीक्षण।
श्रमनिष्ठा एवं स्वालम्बन अधिभार–09%	• सम्बन्धित कहानियाँ, नाटक तथा उपयुक्त प्रसंग, किसान–मजदूर की दिनचर्या की प्रेरणा लेना। (पृष्ठ–3)	• कविता, कहानी, घटना से सम्बन्धित उपयुक्त प्रसंगों का उल्लेख। किसान मजदूर की दिनचर्या से सम्बन्धित क्रियाकलाप।	• व्यवहार निरीक्षण मौखिक प्रश्नों के माध्यम
सहानुभूति एवं सहयोग अधिभार–09%	• सहानुभूति एवं सहयोग पर आधारित कहानी, कविता, नाटक, दृष्टान्त आदि। (पृष्ठ–3)	• परस्पर सहयोग करना, एक दूसरे के काम में हाथ बँटाना। • दु:ख संवेदना प्रकट करना, बीमार साथी का हाल पूछना। • सेवा करना, पर्व, त्यौहारों को मिलजुलकर मनाना।	• व्यवहार का निरीक्षण।
साहस एवं धैर्य अधिभार–09%	• ऐतिहासिक महान व्यक्तियों के साहसिक कार्य। स्वतंत्रता सेनानियों के प्रेरक प्रसंग। क्रान्तिकारियों के कार्यकलाप। सत्याग्रह एवं यातनाओं के समय धैर्य का परिचय। (पृष्ठ–4)	• विद्यालय परिसर और समाज में साहस एवं धैर्य से सम्बन्धित गुणों का परिचय देना जैसे आग से बचाना, डूबते की रक्षा करना, दुर्घटनाग्रस्त की रक्षा करना। चोट, भूख, बीमारी के समय धैर्य रखना।	• निरीक्षण एवं अवलोकन।
सत्य–पालन तथा ईमानदारी अधिभार–09%	• सत्य पालक एवं ईमानदार बालकों, पुरुषों एवं महिलाओं के उदाहरण, कहानी, संस्मरण तथा जीवनियाँ, झूठ बोलने तथा	• सत्यवादी एवं ईमानदार छात्रों से तथा उनके परिवारों से परिचय कराना। ईमानदार छात्रों को पुरस्कृत करना। विद्यालय–पत्रिका में नामोल्लेख	• व्यवहार का प्रेक्षण, मौखिक प्रश्न, पुरस्कार एवं दण्ड।

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

	बेईमानी से जुड़े प्रसंगों एवं घटनाओं के दुष्परिणामों का उल्लेख। (पृष्ठ–3)	करना। स्वयं आदर्श प्रस्तुत करना। असत्य तथा बेइमानी के कार्यों की निन्दा करना।	
समयानुपालन तथा अनुशासन अधिभार–09%	• विद्यालय–आवागमन, प्रार्थना स्थल पर छात्रों की उपस्थिति तथा अनुशासन के आदर्श प्रसंग, तथा कहानी, नाटक, संस्मरण, घटनाएँ, चित्र प्रसंग एवं कविता पाठ आदि। (पृष्ठ–3)	• शिक्षक द्वारा समयानुपालन का आदर्श प्रस्तुत करना, पंक्तिबद्ध होकर खड़े होना, अपनी बारी की प्रतिक्षा करना, श्रद्धा से आज्ञापालन करना, सही ढंग से उठना, बैठना, बोलना। इसी प्रकार का आचरण समाज एवं परिवार में करना।	• विद्यालय परिवार एवं समाज में किए गए कार्य–व्यवहार का निरीक्षण तथा उनका पता लगाना।
सामुदायिक कार्य एवं समाज सेवा अधिभार–09%	• सम्बन्धित गुणों पर आधारित कहानी, कविता, प्रसंग और समाज सेवकों की जीवनी–विनोवा भावे, गांधी महात्मा फुले, विवेकानन्द, डॉ0 अम्बेडकर, डॉ0 हेगड़ेवार, ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती, सर सैय्यद अहमद खां आदि। (पृष्ठ–3)	• विद्यालय परिवार एवं समाज में मिलकर किए जा रहे कार्यों में हाथ बँटाना/संकट/विपत्ति के समय समाज सेवा में तत्पर होना जैसे बाढ़ और भूकम्प के समय।	• सहभागिता के आधार पर।
देशप्रेम एवं एकीकरण अधिभार–09%	• देशभक्त, देशसेवा और सामाजिक समरसता आदि का परिचय। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय प्रतीकों का परिचय, देशभक्तों के चित्र तथा प्रेरक प्रसंग, देशभक्ति पूर्ण कविताएं एवं नाटक, सांस्कृतिक एकता विषयक प्रसंग। (पृष्ठ–2)	• देशभक्ति सामूहिक गान, प्रयाण गीत का अभ्यास, देशभक्तिपूर्ण अभिनय, राष्ट्रीय पर्वों और देशभक्तों की जयन्तियों में भाग लेना तथा विद्यालयों में उनका आयोजन करना। समाज के अनुसूचित जातियों/पिछड़े वर्गों में जाकर सेवा तथा साक्षरता के कार्य करना।	• अभिनय एवं सहभागिता के आधार पर प्रशस्त्रिपत्र एवं पुरस्कार, निरीक्षण।
प्रकृति प्रेम तथा पर्यावरण बोध अधिभार–09%	• पेड़–पौधों से लाभ, पृथ्वी, जलवायु, आकाश की उपयोगिता के विषय एवं महत्व, मानव जीवन में प्रकृति के योगदान पर लेख, संवाद तथा परिचर्चा। (पृष्ठ–2)	• प्राकृतिक स्थलों का भ्रमण, पौधे और फुलवारी लगवाना, विद्यालय परिसर एवं खेतों में वृक्षारोपण, पक्षी एवं पशुओं को न सताना। प्राकृतिक वस्तुओं के चित्र बनवाना।	• प्रकृति सम्बन्धी कविता, कहानी, को सुनना क्रियाकलापों का निरीक्षण।
ईश्वरीय सत्ता में विश्वास एवं ईशभक्ति	• ईश्वर सम्बन्धी गीत कविता एवं भजन सन्तों की जीवनी, ईश्वरीय	• देवी–देवताओं के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति की अभिव्यक्ति, घर–परिवार विद्यालय में	• छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन का प्रेक्षण।

Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering
Formatted: Bullets and Numbering

अधिभार–09%	विश्वास की कहानियाँ, ईश्वर भक्त बच्चों की जीवनियाँ (पृष्ठ–2)	ईश–वन्दना, प्रार्थना सभा का आयोजन, धार्मिक स्थलों एवं तीर्थों का भ्रमण, सत्संग भजन एवं प्रवचनों में सहभागिता।	• मौखिक प्रश्न पूछकर जानकारी / लेखन कराना।

d{kk 5

आत्म सम्मान एवं साहस अधिभार–10%	• स्वाभिमानी एवं बलिदानी पूर्वजों तथा महान व्यक्तियों से सम्बन्धित कविताएँ, प्रसंग घटनाएँ तथा जीवनियाँ– महाराणा प्रताप, लक्ष्मी बाई, सुभाष चन्द्र बोस। (पृष्ठ–2)	• स्वाभिमानी महान पुरुषों के जीवन प्रसंगों का कथन। तुच्छ मनोवृत्ति का विरोध करके आत्म सम्मान का भाव जगाना। साहसिक खेलों में भाग लेना। संकट के समय साहस का परिचय देना।	• अपेक्षित व्यवहार का प्रेक्षण, निर्देशन, स्वाभिमानी छात्रों का अभिनन्दन, प्रशंसा।	**Formatted:** Bullets and Numbering
सत्य और अहिंसा अधिभार–10%	• जीवन में सत्य अहिंसा पालन करने वाले महान व्यक्तियों की जीवनियाँ, नाटक और कविताएँ– हरिश्चन्द्र, बुद्ध, महावीर, गांधी आदि। (पृष्ठ–2)	• जीवन प्रसंग, घटनाओं का कथन, भाषण–चर्चा, लेख संवाद कराना। जयन्तियाँ मनाना, चित्रों, मूर्तियों एवं स्मारकों का अवलोकन।	• सम्बन्धित प्रसंग सुनना, प्रश्नों द्वारा बोध की जानकारी करना।	**Formatted:** Bullets and Numbering
आज्ञा पालन अधिभार–11%	• माता–पिता, गुरु और श्रेष्ठ पुरुषों की आज्ञा का पालन करने वाले बालकों, महान व्यक्तियों के जीवन प्रसंग, घटनाएं कथाएँ तथा दृष्टान्त–श्रवण, लव–कुश, ध्रुव शिवाजी आदि। (पृष्ठ–2)	• उत्साह एवं भक्ति भाव के साथ माता–पिता और गुरु के आदेश का पालन सर्वत्र करना। ऐसे छात्र / छात्राओं की प्रार्थना सभाओं में प्रशंसा एवं परिचय कराना। आज्ञा पालन के महत्व का कथन। चरण छूते बालकों के चित्रों का प्रदर्शन।	• अभिवादन, विनम्रता प्रणाम, चरण स्पर्श के व्यवहार का प्रेक्षण।	**Formatted:** Bullets and Numbering
सहानुभूति एवं सहयोग अधिभार–09%	• गुणों पर आधारित कथा, प्रसंग, दृष्टान्त एवं नाटक। दोनों के गुणों के सामाजिक लेख पर परिचर्चा एवं संवाद। (पृष्ठ–1)	• कहानी प्रसंग, परिचर्चा का कथन। सामाजिक गुणों के विकास का उल्लेख। इन गुणों को प्रकट करने के लिए छात्रों को प्रेरित करना। स्वयं आदर्श प्रस्तुत करना।	• अपेक्षित व्यवहार का प्रेक्षण। समाज में किए गए कार्यों का व्यवहार का पता लगाना।	**Formatted:** Bullets and Numbering
सामुदायिक भावना अधिभार–12%	• किसी ग्राम के विकास में सामूहिक योगदान पर लेख एवं समाचार। सामुदायिक भावना के कारण खेलों की प्रतियोगिता में सफलता की घटना। सम्बन्धित विषय पर आधारित कहानी, नाटक, प्रसंग एवं दृष्टान्त। (पृष्ठ–2)	• घर एवं विद्यालय मे छोटे समूहों में स्वच्छता, साज–सज्जा तथा व्यवस्था में हाथ बँटाना। राष्ट्रीय पर्वों / जयन्तियों, शोभा यात्राओं के आयोजन में योगदान करना। संकट काल में समाज की सहायता करना। स्वयं के व्यवहार से आदर्श प्रस्तुत करना।	• अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन का प्रेक्षण, घर गाँव, मुहल्ले में किए गए कार्यों का पता लगाना।	**Formatted:** Bullets and Numbering

देशभक्ति एवं देशसेवा अधिभार–09%	• देशभक्तों की जीवनियाँ, घटनाएँ, मार्मिक प्रसंग, कविताएँ, कहानी, नाटक, एवं लेख। राष्ट्र हित में स्वार्थ से ऊपर कार्य करने वालों के उदाहरण एवं चित्र। राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रीय प्रतीकों पर लेख एवं उनकी रक्षा के उदाहरण।	• कविता, गीत, नाटक, अभिनय के माध्यम से देशभक्ति की भावना पैदा करना। देश भक्तों की जीवन गाथा सुनाना। देश की समस्याओं पर चर्चा एवं वाद–विवाद कराना। समाज सेवा के कार्यों का पता लगाना। गुणों पर आधारित प्रतियोगिताएं आयोजित करना। समाज के पिछड़े वर्गों के बीच में जाकर अवस्था की अनुभूति करना।	• उक्त से सम्बन्धित प्रश्न पूछना। कार्यों का आकलन करना।
मन–कर्म–वाणी में समानता अधिभार–09%	• ऐसे जीवन के धनी, महान व्यक्तियों, क्रान्तिकारियों एवं देशभक्तों की जीवनियाँ प्रसंग घटनाएँ और रोचक कथाएँ– बुद्ध, महावीर, कबीर, रैदास, दयानन्द, विद्यासागर, गाँधी आदि।	• जीवनियों, घटनाओं एवं प्रसंगों को सुनाना। विचार, वचन एवं तदनुसार कर्म करने के लिए प्रेरित वाणी और कर्म के धनी छात्रों का कक्षा में, प्रार्थना के समय विशेष परिचय एवं उल्लेख करना। स्वयं का आदर्श प्रस्तुत करना।	• अभिनन्दन तथा एतदनुसार कार्य न करने पर भर्त्सना।
सौन्दर्यबोध एवं सृजनात्मकता अधिभार–10%	• प्रकृति चित्रण की कविताएँ– झरना, पर्वत, सरिता, उपवन, सागर, ऋतु वर्णन, सृजनात्मकता, कलात्मकता एवं सौन्दर्यबोध कराने वाले चित्र, दृश्य एवं मूर्तियाँ।	• कविताओं की व्याख्या करके कला पक्ष एवं ज्ञान पक्ष के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति करना। चित्रों, मूर्तियों की कलात्मकता से सौन्दर्य बोध कराने के लिए प्रेरित करना। चित्रांकन, लेखन और भ्रमण का आयोजन करना।	• बच्चों की सृजनात्मक एवं सौन्दर्यबोध की प्रतिभा का प्रेक्षण। सृजन की सराहना, प्रदर्शन, प्रोत्साहन।
सर्वोच्च सत्ता के प्रति आस्था एवं विश्वास अधिभार–08%	• ईश वन्दना, प्रार्थना, भजन। सरिता, पर्वत, सागर, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र पृथ्वी, आकाश, की महत्ता पर लिखा गया साहित्य। ईश्वर भक्तों की जीवनियाँ। सृष्टि–संचालकों, प्रकृति के रहस्यों के जनक और प्रकृति के तत्वों के नियन्ता की महत्ता का वर्णन। उपासना के सभी मार्ग। ईश्वर प्राप्ति के उपायों का उल्लेख।	• मन्दिरों, तीर्थों, सरिता, सरोवरों, पर्वतों और सागरों के दर्शन कराना। वन्दना, प्रार्थना एवं भजन–कार्यक्रमों में भाग लेना। सूर्य, चन्द्र, धरा, वन, पर्वत के योगदान एवं महत्व का उल्लेख करना। प्रकृति के रहस्यों एवं तत्वों की अनुभूति कराना। ईश्वरोपासना के सभी मार्गों का प्रतिपालन कराना।	• प्रेक्षण एवं मौखिक प्रश्न।
सांस्कृतिक विरासत का बोध अधिभार–12%	• धार्मिक चित्र गीत, सूक्तियाँ, धार्मिक / पौराणिक वैदिक, साहित्य, देश–विदेश में बिखरा पुरातत्व का	• प्राचीन साहित्य, पुरातत्व अभिलेखों और धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना। भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति चेतना और गौरव का भाव जागृत	• सांस्कृतिक धरोहर के प्रति उत्पन्न आस्था के समय–समय पर प्रेक्षण।

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

Formatted: Bullets and Numbering

	इतिहास / प्राचीन ऋषि, सन्त महात्माओं के जीवन चरित्र एवं कथाएँ। ललित कला एवं वास्तु शिल्प का इतिहास और साहित्य। मूर्तियाँ और सांस्कृतिक प्रतीक।	करना।	साँस्कृतिक चेतना का निरीक्षण तथा मौखिक प्रश्न।

ekfl d foHkktu

ekg	d{kk 1	d{kk 2	d{kk 3] 4	d{kk 5
जुलाई	• स्वच्छता एवं स्वास्थ्य रक्षा, शरीर, वस्त्र, कक्ष तथा कक्षाकक्ष की स्वच्छता।	• स्वच्छता एवं स्वास्थ्य रक्षा, शरीर, वस्त्र निजी कक्ष एवं कक्षाकक्ष की स्वच्छता।	• आदर एवं शिष्टाचार – कथाओं पर आधारित शिष्टाचार।	• आत्म सम्मान एवं साहस।
अगस्त	• पारस्परिक सहयोग–घर और विद्यालय में मिलजुल कर कार्य करना।	• पारस्परिक सहयोग– घर और विद्यालय में मिलजुलकर कार्य करना।	• स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सुव्यवस्था– विद्यालय, पास–पड़ोस, घर परिवार।	• सत्य और अहिंसा।
सितम्बर	• समय पालन तथा नियमितता–दैनिक कार्यों को नियमित और समय पर करना।	• समय पालन तथा नियमितता–दैनिक कार्यों को नियमित तथा समय से करना।	• श्रमनिष्ठा एवं स्वावलम्बन – कहानी, नाटक पर आधारित सम्बन्धित प्रेरक प्रसंग।	• आज्ञापालन
		l= ijh{kk		
अक्टूबर	• महापुरुषों के जीवन प्रसंगों को सुनाना।	• समयानुपालन तथा नियमितता से सम्बन्धित महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाना।	• साहस एवं धैर्य– महान व्यक्तियों के साहसिक कार्य, स्वतंत्रता सेनानियों के प्रेरक प्रसंग तथा क्रान्तिकारियों के कार्यकलाप • सत्य पालन तथा ईमानदारी	• सहानुभूति एवं सहयोग
नवम्बर	• सत्यपालन, सत्य का अनुसरण करने वाले महापुरुषों की घटनाओं को सुनना, सुनाना	• सत्य पालन – सत्यवादी महापुरुषों के जीवन की घटनाओं को	• समयानुपालन तथा अनुशासन • सामुदायिक कार्य एवं समाज सेवा।	• सामुदायिक भावना • देशभक्ति एवं देशसेवा।

	l= ijh{kk			
दिसम्बर	• सुव्यवस्था– अपनी वस्तुओं को घर तथा विद्यालय में ठीक प्रकार से रखना।	• सुव्यवस्था–अपनी वस्तुओं को घर तथा विद्यालय में उचित स्थान पर रखने की आदत का अभ्यास।	• देशप्रेम एवं एकीकरण	• मन कर्म एवं वाणी में समानता
	v)okf"kd ijh{kk			
जनवरी	• पंचतंत्र की कहानियों को सुनाना।	• पंचतंत्र की कहानियों को सुनाना।	• प्रकृति प्रेम तथा पर्यावरण बोध	• सौन्दर्यबोध एवं सृजनात्मकता
फरवरी	• शिष्टाचार–परिवार–विद्यालय तथा समाज के प्रति	• शिष्टाचार, माता–पिता, शिक्षकों तथा समाज के प्रति शिष्ट व्यवहार करना।	• ईश्वरीय सत्ता में विश्वास एवं ईशभक्ति	• सर्वोच्च सत्ता के प्रति आस्था एवं विश्वास
	l= ijh{kk			
मार्च	• अहिंसा जीवों पर दया करने वाले महापुरुषों के जीवन प्रसंग सुनाना	• अहिंसा–जीवों पर दया करने वाले महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाना।	• पुनरावृत्ति एवं अभ्यास	• सांस्कृतिक विरासत का बोध
अप्रैल	• देशप्रेम, प्रेम–देशभक्तों के जीवन–प्रसंगों को सुनाना	• प्रेम–देशप्रेम, छात्रों में देशप्रेम देशभक्तों के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाना	• पुनरावृत्ति एवं अभ्यास	• सांस्कृतिक विरासत का बोध
मई	• पौराणिक कथाएँ सुनाना	• पौराणिक कथाएं सुनाना	• पुनरावृत्ति एवं अभ्यास	• पुनरावृत्ति एवं अभ्यास
	okf"kd ijh{kk			
जून	xh"ekodk'k			

d{kk 3 & 5

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। अधिकांश भारतीय भाषाओं का जन्म संस्कृत से ही हुआ है, इसलिए उसे भारतीय भाषाओं की जननी भी कहते हैं। धर्म, दर्शन, चिकित्सा, ज्योतिष, इतिहास, कला, विज्ञान इत्यादि विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित विषयों के मौलिक ग्रन्थ इस भाषा में लिखे गये हैं। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के मूलतत्व संस्कृत साहित्य में प्राप्त होते हैं जिसका अनुसरण करके समाज में गिरते हुए नैतिकता के स्तर को उठाया जा सकता है।

संस्कृत ने अपनी भाषायी एवं साहित्यिक महत्ता के कारण देश में क्षेत्रवाद एवं भाषावाद के भेद को मिटाते हुए प्रत्येक नागरिक को भारतीय होने का गौरव प्रदान किया है। मानवीय मूल्यों एवं विश्वबन्धुत्व की भावना के विकास में संस्कृत का महत्व अद्वितीय है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, 'सत्यमेव जयते' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे संस्कृत के आदर्श वाक्य विश्व के समक्ष भारत की धर्मनिरपेक्ष एवं मानवतावादी छवि को प्रस्तुत करते हैं।

संस्कृत को केवल धर्म से सम्बन्धित प्राचीन भाषा मानना पर्याप्त नहीं है। इसका समृद्ध साहित्य अतीत का ज्ञान कराने के साथ ही सुनियोजित भविष्य निर्माण के लिए मजबूत आधार प्रदान करता है। परिवार, समाज, राष्ट्र के विकास एवं विश्व में शान्ति की स्थापना के लिए संस्कृत शिक्षण आवश्यक है। संस्कृत ग्रंथों में प्रतिपादित, सत्य, अहिंसा, परोपकार, दया जैसे मानवीय मूल्यों के द्वारा बच्चों में समाजोचित संस्कारों को विकसित किया जा सकता है।

mnn';& इस पाठ्यक्रम का निर्माण छात्र/छात्राओं की क्षमता को देखते हुए निम्नांकित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया है–

- बच्चों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
- संस्कृत की ध्वनियों (वर्ण एवं पद) का शुद्ध उच्चारण करने की क्षमता विकसित करना।
- छोटे–छोटे वाक्यों को सुनने एवं पुनरावृत्ति करने की योग्यता का विकास करना।
- संस्कृत भाषा के प्रयोग के लिए प्रेरित करना।
- विद्यार्थियों में संस्कृत के सरल वाक्यों द्वारा भावों को अभिव्यक्त करने का कौशल विकसित करना।
- संस्कृत श्लोकों को स्मरण करके सस्वर वाचन करने का कौशल विकसित करना।
- मातृभाषा में प्रयोग होने वाले संस्कृत शब्दों की पहचान कराना।
- संस्कृत में लिखे हुए श्लोकों, कहानियों एवं गद्यांशों के अर्थ को समझते हुए पढ़ने की क्षमता विकसित करना।
- संस्कृत शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
- संस्कृत में लिखे हुए सरल वाक्यों का अर्थ ग्रहण करने की योग्यता उत्पन्न करना।
- सरल संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में तथा हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत भाषा में अनुवाद करने का कौशल विकसित करना।
- एकता, समानता एवं परस्पर प्रेम जैसे मानवीय मूल्यों को विकसित करना।
- विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, सहिष्णुता जैसे नैतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करना।
- बच्चों में कल्पनाशीलता, चिन्तन तथा सौन्दर्य बोध का विकास करना।

lLdr f'k{k.k fof/k %&

ऐसा कहा जाता है कि छोटे बच्चों के लिए संस्कृत विषय क्लिष्ट है अतः यह आवश्यक है कि इसके शिक्षण की सरलता पर विशेष ध्यान दिया जाय। संस्कृत शिक्षण को सुगम एवं रोचक बनाने के लिए अध्यापकों को संस्कृत के सरल वाक्यों के द्वारा शिक्षण का प्रयास करना चाहिए। आवश्यकतानुसार प्रश्नोत्तर विधि, अभिनय विधि, कहानी विधि, खेल विधि द्वारा अध्यापन करें जिससे विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि उत्पन्न हो और वे सक्रिय होकर मौखिक रूप से सहभागिता कर सकें। शिक्षक विद्यार्थियों के परिवेश तथा स्थानीय भाषा के ज्ञान के आधार पर संस्कृत शिक्षण करें–

- कक्षा में वातावरण सृजित करने के लिए अध्यापक संस्कृत श्लोकों का सस्वर वाचन करें।
- सरल संस्कृत वाक्यों के द्वारा प्रश्न पूछकर शिक्षक विद्यार्थियों में संस्कृत बोलने की प्रवृत्ति विकसित करें।
- अध्यापक द्वारा संस्कृत के श्लोकों, गद्यांशों आदि का आदर्श वाचन किया जाय तथा छात्रों से अनुकरण वाचन कराया जाय एवं उसके उच्चारण में होने वाली त्रुटियों का निवारण किया जाए।
- चित्रकार्ड एवं शब्दकार्ड के माध्यम से परिचित हिन्दी नामों की संस्कृत बतायें।
- संस्कृत अनुलेख तथा श्रुतलेख पर बल दें।
- निर्धारित व्याकरण का विविध प्रयोग द्वारा ज्ञान करवाएँ।
- पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त सरल भाषा में लिखी हुई पत्रिकाएँ छात्रों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
- कक्षा में विद्यार्थियों का समूह बनाकर उनके मध्य विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए।
- श्रवण एवं भाषण कौशल का विकास करने के लिए विभिन्न खेल विधियों का आयोजन किया जाए।

ikB;iLrd l lEcfU/kr fo"k;oLr&

कक्षा–3, 4 तथा 5 के लिए संस्कृत विषय की एक–एक पाठ्यपुस्तक होगी।
पाठ्य सामग्री को विकसित करने के लिए परिवार, पशु–पक्षी, फलों के नाम, घर, विद्यालय, दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं के नाम, शरीर के अंगों, प्राकृतिक वातावरण, दिनचर्या, राष्ट्रीय प्रतीक, राष्ट्रीय पर्व, अच्छी आदतों से सम्बन्धित कार्य, सामाजिक त्यौहार, देश प्रेम, यातायात के सामान्य नियम, त्याग, साहस, अहिंसा, महापुरुषों, ऋतुओं, दिशाओं आदि विषयों को आधार बनाया जा सकता है।

बच्चों में सहायता, बड़ों का आदर, परोपकार, सदाचार, समानता, शिष्टाचार, स्वावलम्बन, आत्मविश्वास, सहिष्णुता, राष्ट्रीय एकता, विश्वबन्धुत्व, सभी धर्मो के प्रति समभाव इत्यादि मूल्यों को ध्यान में रखते हुए पाठ्य सामग्री का विकास किया जाय।

lLdr &3

mnns';	lEcks/k	fØ;kdyki	eY;kadu
• बच्चों को हिन्दी और संस्कृत के सम्बन्ध को समझाना। • सरल संस्कृत शब्दों को सुनकर समझने तथा बोलने का	• vfHkoknu • ljLorh&oUnuk	• शिक्षक बच्चों को बताएं कि प्रातःकाल किसी से मिलने पर अभिवादन हेतु संस्कृत में 'सुप्रभातम्' कहा जाता है और बच्चों से कई बार 'सुप्रभातम्' शब्द बोलने का अभ्यास कराएं।	• निरीक्षण द्वारा।

कौशल विकसित करना।		• शिक्षक सरस्वती–वन्दना पाठ का सस्वर वाचन करें, तथा छात्रों से सही उच्चारण के साथ अनुकरण वाचन करवाएं।	
• बच्चों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए उनके परिवार, आस–पास के परिवेश, पालतू पशु–पक्षियों एवं घरेलू उपयोग की वस्तुओं के संस्कृत नाम से परिचित कराना तथा बोलने के लिए प्रेरित करना। • छात्रों के संस्कृत शब्दकोष में वृद्धि करना।	• laKk (बिना परिभाषा बताए हुए।) माता–पिता, भाई बहन आदि परिवार के सदस्यों आस–पास के जीवों एवं पालतू पशु–पक्षियों जैसे– बकरी, गाय, मक्खी, कुत्ता, घोड़ा, हाथी, साँप, मोर, बन्दर के लिए प्रयुक्त संस्कृत शब्द। इसके अलावा घरेलू उपयोग की वस्तुएं जैसे– बर्तन, किताब, कलम, फल, फूल, पत्ता आदि एवं परिवेश जैसे– घर, विद्यालय, बगीचा, पेड़, नदी, तालाब आदि के संस्कृत नाम।	• शिक्षक स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हुए चर्चा के माध्यम से पहले इनके नाम संस्कृत में बताएं फिर छात्रों के मध्य चित्र कार्ड वितरित करके तथा उन चित्रों के नीचे लिखे हुए संस्कृत नामों का कई बार उच्चारण करते हुए बच्चों से अनुकरण करवाएं।	• मौखिक रूप से प्रश्न पूछकर। • चित्र के अनुरूप बच्चों से संस्कृत शब्द कार्ड मिलवाएं।
• पढ़ना, लिखना, जाना, हँसना आदि क्रियाओं के संस्कृत शब्दों की समझ विकसित करना।	fØ;k • दैनिक जीवन में होने वाली सरल क्रियाओं का प्रयोग जैसे– पठ्, लिख्, गम्, हस् आदि धातुएँ।	• शिक्षक बच्चों से विभिन्न क्रियाएं जैसे उन्हें हँसाकर, चलाकर, पढ़वाकर, लिखवाकर इन क्रियाओं की संस्कृत बताएं। एक बच्चे से एक क्रिया करवाएं और दूसरे से पूछेंगे कि इसकी संस्कृत क्या होगी। इसी प्रकार अन्य क्रियाओं का भी अभ्यास कराएं।	क्रिया सम्बन्धी चित्रचार्ट के माध्यम से बच्चों से विभिन्न क्रियाओं के संस्कृत नाम पूछें।
• दो, तीन शब्दों के नीतिपरक एवं सरल वाक्यों को बोलने एवं कण्ठस्थ करने का	• दो, तीन शब्दों के सरल सुभाषित एवं नीति परक वाक्यों का प्रयोग।	• अध्यापक नीतिपरक वाक्यों का सस्वर वाचन करें साथ ही उनका अर्थ भी बताएं, तत्पश्चात् बच्चों से अनुकरण वाचन करवाएं और सही	याद किए हुए सुभाषित वाक्यों को सुनें।

कौशल विकसित करना। • छात्रों में संस्कृत के शब्दों एवं सरल वाक्यों का शुद्ध उच्चारण करने की क्षमता विकसित करना।		उच्चारण के लिए प्रेरित करें।	

lLd`r &4

mn~ns';	lEcU/k	fØ;kdyki	eY;kadu
• पिछली कक्षा के विषय वस्तु की पुनरावृत्ति कराना। • संस्कृत के सरल श्लोकों से बच्चों को परिचित कराना। • सुनकर बोलने के कौशल को विकसित करना।	• oUnuk त्वमेव माता च पिता त्वमेव .... ।	• शिक्षक उचित लय, आरोह–अवरोह तथा हाव–भाव के साथ श्लोक का सस्वर वाचन करें तथा बच्चों से अनुकरण वाचन करवाएँ।	• कण्ठस्थ श्लोक को सुनकर।
• संज्ञा पदों को उनके वचनों के अनुसार क्रिया पदों से जोड़ने का अभ्यास करवाना। • छात्रों में पढ़कर लिखने की क्षमता विकसित करना।	• पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग शब्दों का लट्लकार के तीनों पुरुषों एवं तीनों वचनों के साथ प्रयोग।	• कक्षा के बच्चों को क्रिया पदों के तीनों पुरुषों एवं वचनों के कार्ड वितरित कर दें तथा शिक्षक कोई संज्ञा शब्द श्यामपट्ट पर लिखें तथा बच्चों से श्यामपट्ट पर लिखे संज्ञा शब्द के साथ उपयुक्त क्रिया पद मिलाने के लिए कहें। • जैसे– बालक : लिखति। बालकौ लिखतः । बालकाः लिखन्ति।	• बच्चों से संज्ञा शब्द के तीनों वचनों के आधार पर उपयुक्त क्रिया लगाकर जोड़े बनवाएं।

• सर्वनाम शब्दों के प्रयोग की जानकारी देना।	• सर्वनाम–इदम्, तद्, किम् आदि शब्दों का लट्लकार के तीनों पुरुषों तथा तीनों वचनों के साथ प्रयोग।	• बच्चों को तीन समूह में बाँटें। एक समूह को सर्वनाम के शब्द कार्ड दूसरे समूह को संज्ञा के शब्द कार्ड तथा तीसरे समूह को क्रिया के शब्द कार्ड दें। सर्वप्रथम संज्ञा कार्ड वाले समूह के किसी एक बच्चे को बुलायें तथा उसके शब्द कार्ड पर अंकित संज्ञा पद को पढ़ने के लिए कहें जैसे बालकः, पुनः क्रिया समूह वाले बच्चों से बालकः के अनुरूप क्रिया पद को ढूंढने के लिए कहें जैसे–पठति। तत्पश्चात् सर्वनाम समूह वाले बच्चों से 'बालकः पठति' इस वाक्य में आये हुए संज्ञा पद बालकः के स्थान पर उचित सर्वनाम पद जैसे–सः जोड़कर वाक्य बनवाएँ। इस प्रकार की क्रिया कई बार बच्चों से करवाकर विभिन्न सर्वनाम शब्दों की जानकारी दें।	• प्रश्नोत्तर द्वारा संज्ञा शब्दों के स्थान पर सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करवाकर।
• विभिन्न क्रियाओं के लट्लकार के तीनो पुरुषों तथा तीनों वचनों के प्रयोग से परिचित कराना।	• क्रिया–चल्, लिख्, खाद्, दृश्, हस्, अस्, आदि के लट्लकार का प्रयोग।	• पाठ में आये हुए चित्रों के माध्यम से शिक्षक बच्चों से प्रश्न पूछेंगे– गजः किं करोति? बच्चे उत्तर देंगे। तत्पश्चात् शिक्षक प्रश्न तथा उत्तर में आए हुए क्रिया पदों से छात्रों को परिचित कराएंगे। इसीप्रकार अन्य क्रियाओं का भी ज्ञान करवाएं।	• पाठ में आए हुए क्रिया पदों को बच्चों से सूचीबद्ध करवाएँ। • क्रियापदों से रिक्त स्थान की पूर्ति कराएं।
• शरीर के अंगों के संस्कृत नाम बताते हुए छात्रों के शब्द कोष में वृद्धि करना।	• शरीर के प्रमुख अंगों के लिए प्रयुक्त संस्कृत शब्द जैसे– केशः, नेत्रम्, उदरम्, मुखम्, कर्णः, ललाटम् इत्यादि।	• शिक्षक किसी एक छात्र को बुलाकर उसके शरीर के प्रमुख अंगों का नाम कक्षा के छात्रों से पूछें तथा स्वयं उनके संस्कृत नाम बताते जाएँ और बच्चों से दुहराने के लिए कहें। इस प्रकार की क्रिया कई बार करवाकर शरीर के सभी अंगों की जानकारी दें।	• शरीर के अंगों से सम्बन्धित चित्र चार्ट कक्षा में टाँगें, और प्रत्येक छात्र से अंगों के संस्कृत नाम पूछें।

• बच्चों को सामाजिक एवं राष्ट्रीय पर्वो से परिचित कराना।	• स्वतंत्रता दिवस तथा होली से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें।	• शिक्षक नाटक, कहानी तथा प्रश्नोत्तर के माध्यम से छात्रों को राष्ट्रीय एवं सामाजिक पर्वों के विषय में जानकारी प्रदान करें।	• छात्रों से राष्ट्रीय एवं सामाजिक पर्वों की सूची बनवाकर।
• बच्चों में परोपकार, सदाचार एवं शिष्टाचार जैसे नैतिक मूल्यों का विकास करना। • छात्रों में शुद्ध बोलने तथा लिखने का कौशल विकसित करना।	• सदाचार, शिष्टाचार, परोपकार से सम्बन्धित बातें तथा सूक्तियाँ।	• शिक्षक पाठ का आदर्श वाचन करें तथा बच्चों से शुद्ध–शुद्ध अनुकरण–वाचन करवाएँ। बच्चों की मात्रात्मक त्रुटियों को दूर करने के लिए उनसे सुलेख एवं श्रुतलेख लिखवाएँ।	• संस्कृत के छोटे गद्य खण्डों तथा सरल श्लोकों को लिखवाना तथा उससे सम्बन्धित प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाकर। • कक्षा में बच्चों के व्यवहारगत परिवर्तन का अवलोकन करके। • कण्ठस्थ सूक्तियों को सुनकर।

lLd`r &5

mn~ns';	lEcU/k	fØ;kdyki	ewY;kadu
• पिछली कक्षा के विषयवस्तु की पुनरावृत्ति कराना। • छात्रों में संस्कृत पद्यों के भाव को समझते हुए उनके सस्वर वाचन का कौशल विकसित करना।	• Lon'k oUnuk	• शिक्षक देश के विविध क्षेत्रों, नदियों तथा राष्ट्रध्वज के विषय में जानकारी देते हुए पाठ का उचित लय एवं हाव–भाव के साथ सस्वर वाचन करें तथा छात्रों से अनुकरण वाचन करवाएँ।	• राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रीय प्रतीकों से सम्बन्धित प्रश्न पूछ कर।
• अकारान्त पुंल्लिंग, अकारान्त नपुंसकलिंग, तथा आकारान्त स्त्रीलिंग, ईकारान्त स्त्रीलिंग, उकारान्त पुंल्लिग,	• lKk • अकारान्त पुल्लिंग– जैसे बालकः अश्वः, वानरः आदि। • अकारान्त नपुंसकलिंग जैसे–पुस्तकम्, कमलम्, पत्रम् आदि।	• शिक्षक श्यामपट्ट पर अकारान्त, आकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त संज्ञाओं को लिखें तथा बच्चों से उनकी अलग–अलग सूची बनाने के लिए कहें।	• बच्चों से संज्ञा पदों के द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति करवाकर।

ऋकारान्त पुंल्लिग, ऋकारान्त स्त्रीलिंग आदि के प्रथमा विभक्ति के तीनों वचनों से परिचित कराना। • छात्रों में लेखन क्षमता का विकास करना।	• आकारान्त स्त्रीलिंग जैसे–बालिका, छात्रा, अजा आदि। • ईकारान्त स्त्रीलिंग जैसे–नदी। • उकारान्त पुंल्लिग जैसे गुरु। • ऋकारान्त पुंल्लिग–पितृ। • ऋकारान्त स्त्रीलिंग–मातृ आदि शब्दों का प्रयोग।		
• सर्वनाम के प्रयोग से छात्रों को परिचित कराना।	• l o'uke अस्मद्, युष्मद्, तद्, इदम्, किम् तथा सर्व इत्यादि सर्वनाम पदों का प्रयोग।	• शिक्षक हाथ में पुस्तक लेकर छात्रों से बतायें 'इदम् पुस्तकम्' अर्थात् यह पुस्तक है। पुनः पुस्तक को मेज पर रखकर दूर से संकेत करते हुए बतायें 'तत् पुस्तकम्' अर्थात् 'वह पुस्तक है।' इस प्रकार की क्रिया द्वारा छात्रों को सर्वनाम के एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन के प्रयोग का ज्ञान करवाएं।	• वाक्य प्रयोग द्वारा।
• छात्रों को विभिन्न क्रियाओं के प्रयोग का ज्ञान करवाना।	fØ;k • दा, धाव्, प्रच्छ्, नी, पठ्, गम्, खाद्, कृ, पत्, लिख्, स्था, भू, इत्यादि धातुओं के लट्, लोट्, लृट् एवं लङ् लकारों का प्रयोग।	• शिक्षक संज्ञा तथा सर्वनाम के अनुरूप क्रिया से सम्बन्धित विभिन्न लकारों के प्रयोग का ज्ञान कराने के लिए किसी एक छात्र को बुलाकर उसे किताब पढ़ने के लिए दें तथा कक्षा के छात्रों से पूछें– सः किं करोति? छात्र उत्तर देंगे– सः पठति। शिक्षक स्पष्ट करें कि पढ़ना क्रिया है। पुनः किसी छात्र से पूछे– 'त्वं किं करोषि?' छात्र उत्तर देंगे– 'अहं पठामि।' इस प्रकार शिक्षक विभिन्न लकारों के प्रयोग को सिखाएं।	• संज्ञा एवं सर्वनाम पदों के वचनों के आधार पर क्रिया का प्रयोग करवाकर। • रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा।

• छात्रों को अव्यय पदों से परिचित कराना।	v0; ; • कुत्र, किं, कदा, प्रातः तत्र, सदा, सायं, अधुना, एकदा, चेद्, श्वः, कदा, शनैः शनैः इत्यादि अव्यय पदों का प्रयोग।	• शिक्षक पहले कुछ अव्यय पदों को श्यामपट्ट पर लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग करके छात्रों को समझायें तत्पश्चात् कुछ अव्यय पद देकर उनसे वाक्य रचना करवाएं।	• पाठ में आये हुए अव्यय पदों की सूची बनवायें।
• सरल शब्दों की सन्धि तथा उनके विच्छेद से परिचित कराना।	l fU/k • दीर्घ सन्धि का प्रयोग	• शिक्षक पाठ में आये हुए विद्यालयः, देवालयः, नदीशः, बाल्यावस्था जैसे सरल शब्दों के विच्छेद युक्त कार्ड छात्रों के मध्य वितरित करें तथा प्रत्येक छात्र से विच्छेद वाले पदों के सन्धि शब्द पूछकर श्यामपट्ट पर लिखें।	• सरल शब्दों की सन्धि तथा विच्छेद करवाकर। • विच्छेद युक्त कार्ड के अनुरूप सन्धि युक्त कार्ड के जोड़े बनवाकर।
• खेल के माध्यम से बच्चों में सामूहिकता एवं सहयोग की भावना को विकसित करना। • पाठ्यपुस्तक के पाठों का छात्रों से शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन करवाना।	• बालक्रीड़ा–खेल से सम्बन्धित गतिविधियों के लिए प्रयुक्त संस्कृत शब्द जैसे– क्रीडन्ति, कूर्दति आदि।	• शिक्षक बाल–क्रीड़ा पाठ का सस्वर वाचन करें तथा बच्चों से भी अनुकरण वाचन कराएँ। तत्पश्चात् बच्चों को खेल के मैदान में ले जाकर उन्हें खेलने के लिए गेंद दें तथा खेल के नियमों से परिचित कराएँ ।	• पाठ में आए हुए कठिन शब्दों को छात्रों से पढ़वाकर।
• संख्याओं के संस्कृत नाम से परिचित कराना। • छात्रों में सुनने तथा समझने के कौशल का विकास करना।	• संख्याएँ– 1 से 10 तक की संख्याओं का प्रयोग।	• शिक्षक कक्षा में एक छोटी कहानी सुनाएँ जिसमें एक से दस तक की संख्याएं समाहित हों।	• हिन्दी में लिखी संख्याओं का संस्कृत में लिखी संख्याओं के साथ मिलान करवाकर।
• छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास करना। • छात्रों में पढ़ने तथा शुद्ध उच्चारण करने का कौशल विकसित करना।	• सुभाषित श्लोक	• शिक्षक सुभाषित श्लोकों का सस्वर वाचन करें तथा छात्रों से अनुकरण वाचन कराएं तथा श्लोकों का अर्थ बताते हुए छात्रों में उचित नैतिक मूल्यों को जीवन में व्यवहार में लाने के लिए प्रेरित करें।	• कण्ठस्थ श्लोकों को छात्रों से सुनकर। • कक्षा में छात्रों के व्यवहार का अवलोकन करके।

vx:th

çkFkfed Lrj ij vx:th Hkk"kk f'k{k.k

ज्ञान–विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास और उच्च शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से English Language बहुत ही उपयोगी है। इसे प्रगति और विकास (Development) की भाषा कहा जाता है। इसीलिए संसार के अधिकतर देशों में मातृभाषा के बाद अंग्रेजी भाषा की शिक्षा को स्थान दिया जाता है। हमारे देश एवं प्रदेश में भी अंग्रेजी को द्वितीय भाषा (Second Language) का स्थान प्राप्त है। हमारे प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर इसके शिक्षण/अधिगम को वरीयता देना तथा इस भाषा के कौशलों के विकास के लिए एक सुदृढ़ नींव डालना अत्यंत आवश्यक है। हमने इसका एक ऐसा पाठ्यक्रम विकसित किया है, जिसमें प्राथमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के मातृभाषा का पूर्वज्ञान दूसरी भाषा (Second Language) सीखने में सहायक हो। वास्तव में अंग्रेजी भाषा अपने ढाँचे (structure) वाक्य विन्यास, लचीलेपन, परिर्वतनशीलता में हिन्दी भाषा के अत्यंत निकट है। अतः पाठ्यक्रम का आधार द्वि भाषी (Bilingual) होने के साथ–साथ वाक्य संरचनाओं पर आधारित है। पाठ्यक्रम में दी गई वाक्य संरचनाओं (structures) व शब्दावली (Vocabulary) को सीख लेने पर अपेक्षा की जाती है कि छात्र/छात्राएं जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों (functions) का सम्प्रेषण (Communication) अंग्रेजी भाषा में कर सकने में समर्थ होंगे।

çkFkfed Lrj ij vx:th Hkk"kk f'k{k.k d çe[k mn';

- भाषा की चारों दक्षताओं (skills) का विकास करना।
- अंग्रेजी भाषा में बोले गये शब्दों, (Words) वाक्यों (sentences) को सुनकर समझना।
- सुनकर समझे हुए शब्दों एवं वाक्यों को सही उच्चारण (Pronunciation) के साथ उपर्युक्त परिस्थितियों में बोलना।
- बच्चों को प्रतिदिन प्रयोग किये जाने वाले वस्तुओं एवं सामान्य पशु–पक्षियों, सब्जियों, फलों आदि के नामों को English Language में जानना।
- छोटी–छोटी कविताओं (Nursery Rhymes) को लय, ध्वनि के उतार–चढ़ाव और हाव–भाव के साथ पढ़ना और आनन्द प्राप्त करना।
- छोटी–छोटी कहानियों को चित्रों की सहायता से घटना क्रमानुसार पढ़कर समझना, बोलना व लिखना।
- सीखी हुई भाषा को नये संदर्भों में समझकर, सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना।
  अंग्रेजी भाषा शिक्षण की सामान्य विधियाँ–

vx:th Hkk"kk f'k{k.k@vf/kxe dk vf/kd mi;kxh] iHkkoh o jkpd cukus d fy, fuEufyf[kr fcUnvk ij /;ku nuk pkfg,A

- बच्चों को अंग्रेजी भाषा सीखने के लिए प्रेरित करना (motivation)
- एक बार में एक चीज पढ़ायें। (Teach one thing at a time)

- English की class में कोशिश करे की English language का अधिक से अधिक प्रयोग करें, ताकि बच्चे आपका अनुकरण करके सीख सकें।
- निर्देशों को English language में दें।
- प्रारम्भिक स्तर पर मौखिक कार्य (Oral work) पर विशेष बल दें।
- बच्चों में उत्सुकता जाग्रत करने के लिए चित्र एवं अन्य सहायक सामग्रियों का प्रयोग करें।
- सही उच्चारण (Pronunciation) पर ध्यान दें।
- लिखने की कौशल के विकास के लिए, सुलेख, अनुलेख तथा अन्य विधियों का अभ्यास करायें।
- कविता, कहानी, संवाद को उचित हाव–भाव, लय, स्वर के उतार–चढ़ाव के साथ प्रवाहपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाए।
- विभिन्न वस्तुओं, उपकरणों आदि के नाम, संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि से प्रकट होने वाले अर्थ/भाव इत्यादि श्यामपट्ट पर रेखाचित्र/stick figure drawings/sketches बनाकर स्पष्ट करें।
- Language game के माध्यम से अंग्रेजी शब्दों का ज्ञान दें जिससे बच्चों के रूचि उत्पन्न होगी।

ikB~; lkexh

- प्राथमिक स्तर पर (1 से 5 तक) की पाठ्यसामग्री में पाठ्यपुस्तक (Text book) के साथ एक कार्यपुस्तिका (wrok book) हो। पाठ्यपुस्तक में कम से कम 10 पाठ हो जिसमें (exercises and activites) एवं चार कविताएं जो स्तर के अनुरूप हो।

Class-1

Aims	Content	Activity	Evaluation
बच्चों को English Language स्थानीय भाषा (Local Language) के माध्यम से परिचित कराना। जिससे उनकी झिझक मिट सके। 15%	Teacher's talk • General talk with greetings as good morning etc. • Introduction	शिक्षक Class में प्रवेश करते समय बच्चों से good morning children कहें। साथ ही प्रति उत्तर (response) प्राप्त करना बताया Good morning teacher. शिक्षक बोलेगे My name is .... मेरा नाम .... है। तुम्हारा नाम क्या है ? (What is your name?)	• बच्चों को मौखिक मूल्यांकन होगा।
• Developing listening speaking skills. 10% • Continuous developing listening and speaking skill. 10%	• Oral drilling • Nursery rhymes के माध्यम से	• शिक्षक विषय सम्बंधित वातावरण बनाने के लिए Alphabet letter song को पूरे हाव–भाव के साथ class में सुनाएँ। Come little children come to me I will teach your A BC A B C D E F G H I J K L M N O P L M N O P Q R S T U V X X Y Z. • A B C • Tumble down D The cat is in the cupboard And can not see me. • Jack and Jill Went up the hill To fetch a pail of water Jack fell down, And broke his crown And Jill came tumbling after.	• बच्चों को मौखिक मूल्यांकन होगा।
• बच्चों को समय–समय पर हाव–भाव के	• Sit down, standup, come in, go out, Jump hop, walk,	• शिक्षक इस कार्य को classroom में या बाहर ले जाकर के action words daily oral drill के साथ	• सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

साथ आदेश पालन करना सीखना। 10%	bring, take shut, open etc. जैसी activities कराएँ।	करें। Nursery rhyme Hop a little. Jump a little -------------------------.	
• बच्चों में English language listening and speaking motivation learning के लिए कुछ games भी खिलवाएँ 10%	• Game • Simple English usage in conversation May I come in May I go out sorry, thank you और Please का अभ्यास	• शिक्षक बच्चों का हाथ पकड़ कर गोल घेरा बनाएँ और घूमते हुए यह गीत गाएँ– Ring a Ring a Roses Pocket full of Pose. Hush, a Hush a we all fall down. (नीचे बैठते हुए) इस खेल को कई बोलकर खिलवाएं।	• बच्चों को मौखिक मूल्यांकन होगा।
• Recognition of Alphabet letters and sound. • विभिन्न वस्तुओं (Objects) के माध्यम से alphabet के पहचान कराना। 10%	• Fruits • Vegetables and things around them. (परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं)	• सर्व प्रथम Alphabet का चार्ट Class में टाँग दें फिर आप blackboard पर 'a' लिख दें। अब Apple का Picture card दिखाते हुए पूछे यह क्या है? बच्चे जवाब देगें यह सेब है। अब आप बच्चों को बताएगें की यह Apple है और इसका उच्चारण (ऐ) है इसी के साथ कुल्हाड़ी (axe) का चित्र या Object दिखाते हुए उच्चारण कराएं। साथ ही Class में 'A' से आने वाले बच्चों का नाम भी बताएं।	• बच्चों को मौखिक मूल्यांकन होगा। • पहचान के माध्यम से।
• Beginning of 'penmen ship' 5%	• Different strokes circle, semi circle, straight line, slant zig- zag lines.	• बच्चों से स्वतंत्र रूप से पहले Action के माध्यम से फिर कॉपी या blackboard पर बनवाएं।	• सतत् मूल्यांकन के माध्यम से।
• Actions द्वारा Parts of the body सिखाना (incidental	• Nursery rhyme	• Chubby cheeks dimple chin rosy lips Teeth within curly hair very fair, Mummy's pet is that you.	• सतत मूल्यांकन के माध्यम से।

teaching) 15%			
• रंगों की English Language में पहचान कराना साथ ही incidental teaching 5%	• Red, blue, green, yellow and black (Animals, birds, flower, fruit, vegetable).	• शिक्षक कुछ चित्रों को black board पर बनाएं एवं बच्चों से उत्तरपुस्तिका में बनवाएं एवं उनमें रंग भरवाएं उदाहरण, Apple, Parrot, Crow, Rose, Papaya etc. सही रंग भरने पर बच्चों को सही रंग की English बताएं एवं अन्य चीजों के रंगो को बताने को कहें जैसे– class में कौन सी चीजें red color की हैं? बच्चे अपने आप से पहचान कर उन चीजों के नाम बताएंगे। (इसी प्रकार से अन्य चीजों के रंगों की जानकारी बच्चों को दें। बच्चों को गोल घेरे में खड़ा कर के निम्नलिखित खेल खिलवाऐं, (बीच में एक बच्चा खड़ा हो) – Tippy , Tippy Top what color do you want? गोले में अन्दर खड़ा बच्चा बोले I Want blue बाकी बच्चे उस color का ढूँढ़ कर लाएगें, जो बच्चा नहीं ढूँढ़ पायेगा वह Out हो जाएगा। इसी प्रकार सभी बच्चों को बोलने का अवसर दें।	• बच्चों को मौखिक एवं पहचान के माध्यम से।
• बच्चों को 1 से 10 तक की गिनती की पहचान एवं लिखना सिखाना। 10%	• 1 to 10 Number in figures.	• Number is सम्बंधित Nursery का अभ्यास करायेंगे rhyme One, Two, Three, Four, Five, Once I caught a fish alive Six seven, Eight, Nine, Ten then I let it go again.	• मौखिक (Orally)

Class-2

Aims	Content	Activity	Evaluation
• Recapitulation and revision of Class-I बच्चों को पूर्वज्ञान से जोड़कर शिक्षण करना। • Small and capital Alphabet की जानकारी देना। • बच्चों को Articles का ज्ञान कराना Indirect way of teaching Nouns. 10%	• Conversation • Alphabet song • Rhyme • Small letters and capital letters vowel and consonant के आधार पर introduce करें • Articles with names (Nouns) • Circle • square • triangle • rectangle	• Circle, semi circle एवं lines के माध्यम से small letter पहचान एवं Capital letter से मिलान कराएं • शिक्षक चित्र कार्ड्स के माध्यम से A, An को बताए जैसे– A cat, a bat, an apple an ant etc. • Classroom situation एवं दैनिक जीवन से सम्बंधित वस्तुओं के माध्यम से बताएं। जैसे– रोटी का आकार कैसे होता है? बच्चे गोल बताएगें फिर आप बच्चों को बताएं की गोल को हम Circle कहते है। अब आप बच्चों से पूछे कि तुम्हारे आस–पास कौन–कौन सी वस्तुएं Circle आकार की है। इस प्रकार बच्चे स्वयं Construct करके बताएगे की कौन–कौन सी वस्तुएं Circle shapes की है इसी प्रकार से अन्य shapes को बताए। साथ ही Color के साथ बताएं।	• बच्चों से प्रश्न पूछ कर। • पहचान द्वारा Small letter का मिलान करा कर।
• बच्चों को Colours की पहचान की पुनरावृत्ति कराना। 5%	• Rhyme	• Rhyme(activity song) Roses are red. Violets are Blue Sugar is sweet and so are you. etc.	• पहचान के माध्यम से
• बच्चों को animals, birds and flowers की जानकारी English Language में देना। • Writing skill 15%	• Wild and pet animals • Common birds • Common flowers • Capital and small letter	• Picture cards एवं real object की सहायता से बताना। A a B b C c	• प्रश्न पूछ कर। • लिखवाकर।
• बच्चों को	• Dog, Cat, Duck,	• Rhyme के माध्यम से विभिन्न	• सतत् मूल्यांकन।

common animals and birds के sounds, एवं homes की जानकारी देना। 15%	Crow, Cow etc.	जानवरों एवं पक्षियों की Sound को बताएगें। Bow- Bow says the dog. Mew- Mew says the cat, quack- quack says the duck, Chirp- Chirp says the bird Moos Moos says the cow. **Activity** (बातचीत के माध्यम से) Birds live in nest. Cows live in shed. Goat lives in shed. Dogs live in homes. Cats live in homes. Rats live in hole. Bees live in hives शिक्षक इसी प्रकार अन्य जानवरों की आवाजों एवं homes को incidental learning के माध्यम से बताएं।	
• बच्चों को शरीर के प्रमुख अंगों की जानकारी English language के माध्यम से देना। 15%	• Main parts of the body.	चित्र अथवा किसी Student के माध्यम से शरीर के प्रमुख अंगों के नाम एवं उनकी संख्या को बताएं। **Activity** बच्चों को खड़ा करके उनसे उनके शरीर के प्रमुख बाह्य अंगों की जानकारी action के द्वारा दे जैसे बोले– Touch your nose (और बच्चे अपनी नाक छुए)। raise your hands (बच्चे अपने हाथ उठाएं) etc. इसके बाद शिक्षक उनसे Number को जोड़ते हुए पूछे तुम्हारे कितनी आँख, नाक, हाथ है शिक्षक उनके उत्तर English numbers में ले और उनको बोलने के लिए प्रेरित करे जैसे– How many nose do you have? तुम्हारी कितनी नाक हैं? बच्चे बोलेगे One अब आप उनको पूरा	• प्रश्न पूछ कर।

		sentence इस प्रकार बताएँ– I have one nose इसी प्रकार अन्य body parts की जानकारी दें।	
• Revision of 1 to 10 number name and introduction of number 11 to 20 20%	• Writing of 1 to 10 and listening and speaking of 11 to 20	Cards एवं real objects के माध्यम से शिक्षक black board पर number पर आधारित Objects बना दें फिर बच्चों के माध्यम से गिनवाकर लिखवाएँ। 1- One 2 - Two etc.	• पहचान एवं प्रश्न पूछ कर। • लिखवाकर
• परिवार के सदस्यों के नामों की English Language मे जानकारी देना। 15%	• Mother, father, sister, brother, grandfather and, grandmother.	बच्चों से बातचीत के माध्यम से उनके परिवार में रहने वाले सदस्यों के बारे में पूछें एवं rhyme के माध्यम से उनके परिवार के सदस्यों के नाम English में finger puppets की सहायता से बताए इसके लिए हिन्दी का भी सहयोग लिया जा सके जैसे– यह है मेरे अच्छे पापा यह है मेरी अच्छी मम्मी ये है मेरे प्यारे दादा ये है मेरी प्यारी दादी यह है मेरा छोटा भइया नाचे ता–ता थैय्या छोटा सा यह परिवार मेरा जिसको है मुझको बहुत प्यार। finger Puppets की सहायता से पुनः आप English में उनको उनके परिवार के सदस्यों के बारे में इस rhyme के माध्यम से समझ विकसित करें (With action) This is the father, short and stout And this is the mother, This is the brother. This is the sister. This is the baby. This is the family. all in a row.	• पहचान एवं प्रश्न पूछ कर।

• सप्ताह के दिनों की जानकारी English language में देना। • यातायात के विभिन्न साधनों की जानकारी English language में देना (listening and speaking skills. बढ़ाना। 25%	• Sunday to Monday	चर्चा के माध्यम से (look listen and repeat) एवं calendar के माध्यम से देना। चित्रों के माध्यम से चर्चा करना Truck, bus, car, scooter, cycle, motor cycle.	• पहचान एवं प्रश्न पूछ कर।

Class-3

Aims	Content	Activity	Evaluation
पुनरावृत्ति द्वारा reinforcement of the language in all the four skills learnt. 10%	• Capital and small alphabet. • Association of letters with object. • Nursery rhyme	पूर्व कक्षा में अपनायी गई गतिविधियाँ के द्वारा कराएं।	• बच्चों से प्रश्न पूछ कर। • सतत मूल्यांकन के द्वारा।
• बच्चों को English Language में बोले जाने वाले अभिवादन एवं निर्देशों को बताएं और उसका व्यावहारिक जीवन में उसका प्रयोग करना सिखाना 15%	• Greetings, Good morning good after noon, good evening. **Actions** • Sit down, raise you hand, open or close your book, thank you sorry etc. To be introduced and practiced.	शिक्षक इस कार्य को Gestures एवं actions के माध्यम से करायेगें।	• वार्तालाभ के माध्यम से।
• Development	• Sound based	बच्चों को इसका कई बार अभ्यास कराया	• बोलवाकर।

of oral skill. 15%	words to be practiced with a, e, i, o, u	जाएं। जैसे– Hat, bat, cat, rat, red, bed, fed, it, fit, set, pot, cot, lot, bun, tun, run.	
• Development of reading skill, with the help of two or three letter words. 5%	• Sound based words reading cat, bat, rat, red, bed, red, tin, bin, in pot, cot, lot, bun, run, fun.	उपरोक्त दिये गये Words को reading readiness के लिए cutout cards flash cards दिखाते हुए बच्चों से दिखाकर एवं बोलवाकर पढ़वाएं जाएँ। शिक्षक इस अभ्यास की पुनरावृत्ति करवाये।	• बच्चों से छोटे–छोटे शब्दों को पढ़वाकर।
• Developing writing skill through (transcription) श्रुतिलेख 5%	• Sound based poem My Band Listen to my big drum, bang, bang, bang, Listen to my---------. • Writing of small and capital letters and two letter and three letter words.	शिक्षक actions के द्वारा बोले फिर बच्चों से दोहरावाएँ four line note book में इसका अभ्यास कराएं। A a an ant	• बच्चों से लिखवाकर।
• बच्चों को 'article' की पुनरावृत्ति के साथ 'the' का introduction करवाना एवं लिखवाना। 5%	• A book, an owl, the Taj Mahal, The Gita etc.	चित्र एवं Flash cards के माध्यम से कराये।	• पहचान के माध्यम से।
• Number Names सिखाना। 5%	• Eleven to thirty	• Look, count and write. • चित्रों, Objects के माध्यम से गिन कर लिखना बताएं। ●●●●● ●●●●● = Eleven ❊❊❊❊❊❊❊❊ ❊❊❊❊❊❊❊❊20 = Twenty	• पहचान कर एवं लिखवाकर ।
• Singular and	• One and more	• शिक्षक बच्चों को एकवचन एवं	• विभिन्न अभ्यास के

plural का ज्ञान कराना। 5%	with s, es	बहुवचन का ज्ञान Classroom situation, Objects एवं चित्रों के माध्यम से कराये। Toy - toys boy - boys box - boxes	माध्यम से।
• Teaching of simple sentences with the help of proper nouns and articles using this and that with picture object and sketches. 10%	• Subject + Verb + Object को सिखाना। This is a pen. That is a boat.	• शिक्षक सरल English वाक्यों की संरचना S + V + O के आधार पर अभ्यास करवाये। • जैसे 📖 This is a book. This is an apple. This is an orange. etc. That is a car That is a book. 📖	• सीखे गए शब्दों एवं संरचनाओं को चित्रों एवं नए परिस्थितियों में रखकर मूल्यांकन किया जाए।
• Poem के माध्यम से बच्चों में listening speaking एवं वाक्य संरचना का रूचि पूर्ण ढंग से सिखाना। 5%	• Nursery rhyme I am a little tea pot, Short and stout. This is my handle, And this is my spout. When the water's boiling. Hear me shout, "Just lift me up. And pour me out.	• शिक्षक Nursery rhymes का अभ्यास के साथ करवाये।	• बच्चों से बोलवाकर।
• Structures का Plural के साथ प्रयोग सिखाएं Interrogative 'What' से प्रश्न का उत्तर देना सिखाना। 10%	• These are? • Those are? • What are?	• बच्चों को सिखाये गये Plural शब्दों को वाक्य में real objects और चित्रों के माध्यम से प्रयोग करना सिखाना। These are trees What are these ? These are trees. Those are trees.	• सीखे गए शब्दों एवं संरचनाओं को चित्रों एवं नए परिस्थितियों में रखकर मूल्यांकन किया जाए।

		What are those ? Those are trees etc.	
• Pronouns का सरल वाक्य में प्रयोग सिखाना। • Gender का ज्ञान देना। 10%	• He, she, his, her	• Classroom situation picture or sketches की सहायता से पढ़ाना। He is a Ram That is his house. She is Rina That is her book.	• सीखे गए शब्दों एवं संरचनाओं को चित्रों एवं नए परिस्थितियों में रखकर मूल्यांकन किया जाए।
• Poem हाव–भाव के साथ सिखाना। 5%	Ding Dong bell. Pussy in the well. Who put her in. Little Tommy thin. Who pulled her out. Little Johnny stout.	• शिक्षक Poem को action के साथ बोलेगे उसके बाद बच्चे दुहराएंगे।	• बच्चों से बोलवाकर।
• Preposition वाक्य में उचित प्रयोग सिखाना। 5%	In, on, under, over between, behind.	• Classroom situation एवं sketching के माध्यम से इन Prepositions का प्रयोग करके बताएं • This is a pen (शिक्षक हाथ में Pen दिखाते हुए) The pen is <u>in</u> my hand इसी तरह से अन्य Preposition का बताएं।	• उचित प्रयोग के माध्यम से ।
• बच्चों को Picture story के माध्यम से Preposition का उचित प्रयोग सिखाना। 5%	Picture story	• शिक्षक पहले Story को बच्चों को बताये फिर चित्र के माध्यम से Preposition के प्रयोग बताए एवं लिखित कार्य कराएं।	• सही पहचान एवं सही प्रयोग के माध्यम से।
• बच्चों की	Where is ---------? Where are -------?	• Class room situation एवं	• सीखे गए शब्दों

where का उचित प्रयोग करना एवं उत्तर देना सिखाना 5%		sketches को प्रयोग में लाते हुए तथा उपरोक्त कहानी के आधार पर भी where से प्रश्न बनाना सिखाया जाएं। Where is the book ? Where is the rat? where are the trees? आदि	एवं संराचनाओं को चित्रों एवं नए परिस्थितियों में रखकर मूल्यांकन किया जाए।
• Action words with 'ing' form 5%	Hopping, Jumping clapping etc. rhyme	• action के द्वारा look say and do शिक्षक action के साथ अभ्यास कराये। • शिक्षक निम्नलिखित rhymes के माध्यम से ing form बताएं– Look, look see the clown, He's is jumping up (कूदते हुए) He is falling down. (गिरते हुए) He is rolling over like a ball. (हाथ गोला घूमते हुए)	• बच्चों से action करवाकर।
• Possessive pronoun with the use of 'with' 5%	I, my, your I smell with my nose.	• Gestures के साथ use of sense organ (ज्ञानेन्द्रियों) के माध्यम से बताएं। This is my nose. I smell with my nose. These are my hands. I work with my hands. This is your ear. you listen with your ear.	• सीखे गए शब्दों एवं संरचनाओं को चित्रों एवं नए परिस्थितियों में रखकर मूल्यांकन किया जाए।

Class-4

Aims	Content	Activity	Evaluation
Oral Work • Teachers will talk on the language material learnt in the previous class. • बच्चों को नए कक्षा के लिए तैयार करना। • बच्चों में अंग्रेजी भाषा के प्रति समझ विकसित करना। • To enable the children to introduce themselves in English. • बच्चों को इस योग्य बनाना की वे अंग्रेजी भाषा में सरल वाक्य बनाएं। 25% **Poem with action** • बच्चों को encourage करना की वे स्वत्रंत भाव से action के माध्यम से कविता सिखाने। (5%)	• What is your name? • Making them do some actions • Use of articles A - an - the (एकवचन) • Singular- plural (बहुवचन) • What is this ? • What are those? • Nursery rhymes My name is -------------. I am ------------------ old. I live in ------------------. What is your name? Where do you live? • What is your father? **Big engine** I am a big engine Puff, Puff, Puff. Waiting to set off Chuff, Chuff, Chuff.	The teacher will through different devices (विभिन्न गतिविधियों) create an environment to summaries all that has been taught previously. शिक्षक पहले अपना परिचय देगें। फिर बच्चों से उनका परिचय लेगे। My name is --------------------. I am ten years old. I live in Katra. etc शिक्षक action के माध्यम से कविता को प्रस्तुत करें और Indirectly 'I' एवं 'am' का प्रयोग बताएं।	• प्रश्नोत्तर विधि के माध्यम से।

• To give them enough practice in question and answer. • Vocabulary (शब्दकोश) बढ़ाना • To teach them the use of ' with' • speaking and reading skill. का विकास करना। (10%)	What is this/that? What are these/those? 'with' I see with my eyes. I hear with my ears. I smell with my nose. I eat with my teeth. I work with my hands. I walk with my legs.	बच्चों से नये शब्द content words के माध्यम से यह पूछें। What is this? This is a table. What are those? Those are glasses. The teacher will through action teach them new content words as smell, hear, touch , speak, work etc. Touch your nose. (The teacher will say with action). With what do your see? I see with my eyes etc. The teacher will make the students practice these questions and answer many times to give a permanent impress.	• प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से।
• बच्चों को 'ing' forms का poem एवं विभिन्न statement के माध्यम से सिखाना। • साथ ही article ' the' का प्रयोग बताना। • बच्चों से पढ़ना, लिखना एवं बोलने के कौशल का विकास करना एवं कविता के	• The sun is rising . • The moon is shining. • The children are playing. • The women are singing . • The ball is rolling. • The yellow rose.	The teacher will show pictures or sketch on the black board and make the children say. The sun is rising The moon is shining The stars are twinkling . etc. The children can be	•

प्रति रूचि उत्पन्न करना। (5%)	• The blue sky. A picture to be given of any activity or scene.	shown a picture or a scene of outside their class and make to give sentences in the 'ing' form. The boys are playing. The birds are flying. The cows are grazing. फिर शिक्षक बचचों से इन वाक्यों को उनकी अभ्यास पुस्तिका में लिखावाएं।	
• To make the children aware of magic words in English. • To develop communication skill useful in their daily life. (5%)	**Poem** Hello! How are you? I am fine / good. Thank you. How are you? Please give me your book. Thank you. Thank you for the gift. Sorry. I am late.	• दो बच्चे आपस में बोलकर। • शिक्षक उनकी सहायता करें।	• सतत मूल्यांकन।
• वाक्यों का प्रयोग Here/ There with adjectives • बच्चों को picture story के माध्यम से पढ़ाना। • बच्चों में अंग्रेजी भाषा के प्रतिरूचि उत्पन्न करना। • बच्चों में पढ़ने की क्षमता विकसित करना। (5%)	Here/ there Where is the big tree? The big tree is here. Where is the red rose? The red rose is there.	शिक्षक Classroom situation के माध्मय से बच्चों से प्रश्न पूछेगे एवं उनको उत्तर देने के लिए प्रोरित करेगे कि वे adjectives का प्रयोग इस प्रकार करें। A picture story which has qualities (विशेषण आधारित A picture story सुनाएंगे। फिर प्रश्न के माध्यम से कहानी पर आधारित प्रश्न पूछेगें। और इस प्रकार कहानी का	• सतत मूल्यांकन।

		विकास करेंगे।) Where is the dog? The dog is here Where is the small puppy? The small puppy is there. etc.	
• बच्चों को अंग्रेजी भाषा में विभिन्न व्यवसायों की जानकारी देना। • Speaking (बोलने) and writing (लिखने के माध्यम से)। • To know the importance of the people who help us. • Poem (कविता) (10%)	**Professions** • Who he is ? • What is he doing . • Doctor, farmer, postman, gardener, cobbler, teacher, driver. • कविता के माध्यम से।	The teacher will ask children about the various professions seen around them. The work they do and their importance in their lives. कविता के माध्यम से बच्चों को अंग्रेजी भाषा के उच्चारण एवं शब्द के प्रयोग करना सिखाएं।	• सतत मूल्यांकन।
• How much एंव and How many का प्रयोग बताना। • गिनने की समझ विकसित करना। • प्रश्न उत्तर के माध्यम से। • बच्चों को Opposites की जानकारी देना। (15%)	How much ? How many? How much do you want? How many ducks are in the pond ? big - small hot- cold etc.	शिक्षक सामान्य बातचीत के माध्यम से बच्चों को How many एवं How much के प्रयोग में अन्तर करना सिखाएं। • Picture can be used of a zoo to ask how many animals , birds etc. • Picture of a shop with various articles and price tag can be shown to ask how much. • Classroom	• प्रश्नोत्तर विधि

		situation एवं real objects के माध्यम से।	
• बच्चों को सप्ताह एवं महीनों की जानकारी अंग्रेजी भाषा में देना। • To increase their vocabulary. (शब्दकोश) • To develop reading (पढ़ना) and writing (लिखने) के माध्यम से कौशल का विकास करना। 1 से 50 number तक की जानकारी देना 1–50 (10%)	Seven days of the week. The twelve months of a year.	The teacher will show a calendar and through it ask them the days of the week. Putting calendar before them the teacher will ask them. 1. How many days are there in a week. Name them? 2. How many months are there in a year? Name them. The teacher can teach them before and after also along with it. The first second and last can also be taught. शिक्षक blackboard पर लिखेगे फिर बच्चे notebook में उतारें।	• प्रश्नोत्तर विधि
• Reading एवं writing skill का विकास करना। • To develop the skill of writing. • To create an interest by growing illustrious lessons.	Picture story-containing the various structures learnt. (सीखे हुए संरचना) **Composition** A composition of 5-8 sentences A Cow , a mango, A Park , a	The teacher will motivate (प्रेरित करना) the children to write a few sentences on any topic. The children will be asked to draw it first and then describe in simple easy sentences.	• बच्चों से लिखवाकर एवं पढ़वाकर।

• To encourage the children for free expressions. (20%)	watermelon, A Zoo a horse, Your mother etc.	A cow is a useful animal. She gives us milk. She is of different colours. She eats gram, grass and straw. Her baby is called a calf. These statements can be got by putting question and the teacher help them to do. इस कार्य में शिक्षक बच्चों की सहायता करे।	

Class-5

Aims	Content	Activity	Evaluation
• कक्षा में एक दूसरे से परिचय प्राप्त करना सिखाना। • पूर्व में सीखे गए शब्द का प्रयोग सिखाना। • एक दूसरे की पंसद (likes) एवं नापसंसद (dislikes) को जानना। • speaking skill. का विकास करना। (10%)	I am ------------------. I am a student of ------------. I am --------------- years old. I like -------------------------. I don't like ------------------.	The teacher will first ask the names of the children. She /he will then give them time for free expression. By various questions. She can give his/her own statements (कथनों उसके बाद बच्चों से बारी–बारी परिचय देने को कहें।) The children will ask each other similar questions and develop a small composition about oneself . This is to be written on the blackboard the children will follow the pattern. A am ----------------.	• प्रश्नोत्तर विधि

<table>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>I am a student of class V.
I am ----------------- years old
I like ice-cream.
I don't like to swim.</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>बच्चों को हाव–भाव के साथ कविता सिखाना।
• To introduce the use of structure (संरचना) has/have with does not/ do not.
• To speak (बोलना) reading (पढ़ना) and writing (लिखाना) sentences with positive and negative statements.
(5%)</td>
<td>A short poem on nature

has / have
I have two sisters .
He has a big house.
He does not have a car.
I do not have a pen.
• What is your father?</td>
<td>With action
The teacher will ask question and practice these structures.
A substitution table can also be given to the children and they can be asked to make many sentences through them.
Puzzles and language games can also be given to practice these structures.
I have a round face.
I have two hands.
I have walk the whole day.
But no legs.
I never rest what am ? etc.
<table>
<tr><td>I
We
They
Ram</td><td>has
have</td><td>-------

-------</td></tr>
</table>
</td>
<td>सुनकर।
By substitution (प्रतिथापन तलिका) table and question answer method.</td>
</tr>
<tr>
<td>• To make the children aware of various professions, (विभिन्न व्यवसाय)
• their importance (महत्व) for us.
• To read and write in simple</td>
<td>Farmer, tailor, barber, pilot of nurse, plumber, police man, potter, doctor.
A farmer grows food for us.
He works in the field.
A potter makes mud pots for us.</td>
<td>The teacher through discussion will ask the students about the people they see around them, who work for them. e. g.
Who grows wheat for us ?
What does a policeman do?
Who make mud pots for us?</td>
<td>• शिक्षक विभिन्न situation के माध्यम से प्रश्न पूछ कर मूल्यांकन करेंगे।</td>
</tr>
</table>

sentences • easy sentences. (सरल वाक्य) • To increase (बढ़ाना) their vocabulary (शब्दकोष) and spellings of new words. • Develop reading, speaking and writing skills. (15%)	He works on a wheel.	The teacher will practice these statements with the students and make them write.	
Prepositions To increase the area of preposition and their correct use. • preposition के प्रयोग को सिखाना (10%)	In front of, behind, between, beside.	The teacher will with the help of previous learnt (पूर्व में सीखें) preposition and introduce the new preposition in various situation. They can be done through. Pictures, sketch or classroom situation. शिक्षक classroom situation.के माध्यम से इस प्रकार से अभ्यास करेंगे। Ravi is in the class. He is sitting <u>on</u> his stool. He is sitting <u>under</u> the fan. (Now he can use the new words.) **Say-** This is Ravi. He is standing <u>in</u> a line. Where is Satish standing. He is standing <u>in front</u> of Ravi. Where is Satish standing? He is standing <u>behind</u> Ravi.	• प्रश्न पूछ कर। • अभ्यास द्वारा।

		(The teacher can teach the rest with the help of similar situations) the children will be listed by the teacher to take out the word. Plays an important role here. शिक्षक इसी प्रकार से वाक्य सही करके बच्चों को अभ्यास करायेंगे।	
• poem के माध्यम से speaking एवं and reading skill. का विकास करना।	Poem	The poem will be read and drilled by the children will be asked to memorize the poem with comprehension Simple question will be asked to test comprehension. शिक्षक उचित हाव–भाव के साथ कविता को प्रस्तुत करेंगे, फिर बच्चों द्वारा इसकी पुनरावृत्ति सही comprehension उचारण का प्रयोग करें।	•
• Adjective (विशेषण) • To make them aware of the degrees in adjective. • Their correct use in a sentence. • To read and write these adjective in descriptions. (5%)	Adjectives of degree- er, est. positive, comparative, superlative big bigger biggest small high fast tall	शिक्षक classroom situation एवं sketching or statements कथनों के द्वारा निम्नलिखित को स्पष्ट करें।	• प्रश्नउत्तर के माध्यम से। • अभ्यास के द्वारा।
• To develop reading (पढ़ने) skill. • To enable the	What is the time ? It is 6 o' clock. It is 6:30 am/pm Harish goes to school	The teacher will teach time through a clock. (घड़ी) Various question on action can be asked to teach time?	• सतत मूल्यांकन के माध्यम से।

children to know the time (समय) in English. • समय को सरल भाषा में पढ़ना एवं बोलना सिखाने शब्दकोश को बढ़ाना। To read and express time in simple language. • Increase Vocabulary with new spellings. (5%)	at quarter to nine. with questions what, at what.	What time do you get up? When do you reach school? At what time does your father leave for his office? etc.	
• Poem कविता के माध्यम से sense of appreciation. (प्रंशसा का विकास करना।) • To develop an interest in rhythm. (10%)	**A Poem** With previously learnt पूर्व में पढ़े हुए structures. पर आधारित।	The teacher can create interest in students by reading poems and make them read with action and correct pronunciation.	• सही हाव–भाव एवं Pronunciation के द्वारा
• To develop reading skill. (पढ़ने का विकास) • To learn (सीखना) new content words and their usage. (प्रयोग) • To make then read aloud (तेजी) and silent (मौन) reading to be introduced. • To enable the	A small illustrative story with easy simple language.	The given story will be first read by the teacher, with correct pronunciation. (सही उच्चारण) Before that the gist (सरांश) a the story will be given by the teacher. Then the story will be read looking at the illustrations systematically. The students will then be given a chance to read the story aloud in class (The teacher	• प्रश्नोत्तर के विधि।

students to complete (पूर्ण) a story with words given . • imagination Power का प्रयोग लिखने में करना।		will assist them while. शिक्षक बच्चों की सहायता करेंगे, जब वे पढ़ेंगे और नए शब्द को विभिन्न युक्तियों के साथ उचित उच्चारण के प्रयोग करेंगे। Silent reading (मौनवाचन) to be introduced for better comprehension and answering of questions. Some question will be asked based on the story to evaluate them. Story with blanks to be given. Hints can be given to complete it. There was a ---------- who lived in his ---- one day he ------------. बच्चों को कोई अव्यवस्थित कहानी दें, जिसे बच्चे घटनाक्रम के अनुसार arrange करें।	
• देश में होने वाले विभिन्न मौसमों की अंग्रेजी भाषा में जानकारी देना। (10%)	Seasons of India Summer - hot Winter - cold Rain - weather	The teacher will discuss (बातचीत) the various (विभिन्न मौसमों) seasons. With the help of the teacher the children will be given a chance to share their experiences sufficient time must be given for their experiences and expression. • When do we wear cotton clothes? • Why do we wear woolen clothes in winter? • When do we use umbrellas and rain coats?	• पहले मौखिक फिर लिखित रूप से मूल्यांकन।

		• Which season do you like the most. • A Poem on seasons can be effective to develop their interest and develop a sense of beauty for nature.	
Composition • to develop a controlled attitude to write on a given topic. • बच्चों को स्वंत्रत लेखन के प्रति प्रेरित करना। • बच्चों को साफ एवं व्यवस्थित ढंग से लिखना सीखना। (25%)	• Controlled composition based on topics of their experience. • A book. This is my English book. It is a new book. It has beautiful pictures. There are nice stories in it. I like reading my book. etc. My school, my friend My mother Any season.	शिक्षक बच्चों से प्रश्न पूछ कर उन वाक्यों को ब्लॉकबोर्ड पर लिखेंगे। फिर बच्चों से उन वाक्यों को पढ़वाएं और उनकी नोटबुक में लिखवाएं।	•

l= ijh{kk,¡ ,oa fo|ky; Js.khdj.k

बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित विद्यालयों के भौतिक एवं अकादमिक स्तर में सुधार लाने हेतु विद्यालय श्रेणीकरण का प्रावधान किया गया है। विद्यालय श्रेणीकरण हेतु कुल 100 अंक निश्चित किये गए हैं, जिसमें 45 अंक विद्यालय के भौतिक परिवेश, सामुदायिक सहभागिता, नामांकन/उपस्थिति तथा शिक्षण स्तर के लिए निर्धारित किए गए हैं तथा 55 अंक छात्र/छात्राओं की सम्प्राप्ति हेतु निर्धारित हैं। शैक्षिक सम्प्राप्ति का आँकलन सत्र–परीक्षाओं द्वारा किया जाएगा, जो कि सत्र में तीन बार (सितम्बर, नवम्बर व फरवरी के प्रथम सप्ताह में) आयोजित की जाएँगी। सत्र–परीक्षाओं के प्राप्तांकों का उपयोग विद्यालय की श्रेणी निर्धारित करने हेतु किया जाएगा, साथ ही तीनों सत्र परीक्षाओं में प्राप्त औसत अंकों के 25 प्रतिशत अंक मुख्य परीक्षा के अंकों में जोड़े जाएँगे। विद्यालय को प्राप्त श्रेणी का अंकन विद्यालय भवन में प्रधानाध्यापक–कक्ष के निकट खम्भे पर एक फुट लम्बे तथा एक फुट चौड़े काले वर्ग पर सफेद रंग से अंकित किया जाएगा।

विद्यालय श्रेणीकरण के विभिन्न क्षेत्र एवं उनके हेतु निर्धारित अंक निम्नवत् हैं–

ekud fcUnq l[;k	{ks=	fu/kkZfjr vad
1.	भौतिक परिवेश	05
2.	सामुदायिक सहभागिता	05
3.	नामांकन एवं उपस्थिति	15
4.	शिक्षण का स्तर (अध्यापक के लिए)	20
5.	सत्र परीक्षा में विद्यार्थियों का स्तर	55
	;ksx	100

1- HkkSfrd ifjos'k ¼05 vad vf/kdre½

विद्यालय भवन, परिसर व शौचालय की स्वच्छता, रखरखाव, रँगाई–पुताई एवं प्रयोग तथा अभिलेखों के रखरखाव आदि का विद्यालय के भौतिक परिवेश पर विशेष प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के भौतिक परिवेश पर निम्नलिखित बिन्दुओं पर अंक प्रदान किए जाएंगे।

- भवन की रँगाई–पुताई — 1 अंक
- हैण्डपम्प, शौचालय की व्यवस्था एवं उसका प्रयोग — 1 अंक
- वृक्षारोपण/बागवानी — 1 अंक
- अभिलेखों का रखरखाव — 1 अंक
- परिसर की स्वच्छता — 1 अंक

;ksx 05 vad

2- lkeqnkf;d lgHkkfxrk ¼05 vad vf/kdre½

ग्राम शिक्षा समिति/वार्ड शिक्षा समिति के गठन, सदस्यों का बैठकों में प्रतिभाग एवं उनकी क्रियाशीलता, ग्राम शिक्षा समिति का विद्यालय संचालन में सहयोग, विद्यालय हेतु विभिन्न स्रोतों से संसाधन जुटाना आदि बिन्दुओं में ग्राम शिक्षा समिति को जागरूक किया जाना आवश्यक है। समुदाय से सहयोग लेने में विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों की भूमिका पर निम्नलिखित बिन्दुओं पर अंक प्रदान किए जाएँगे।

• ग्राम शिक्षा समिति की नियमित बैठक	1 अंक
• समुदाय द्वारा वित्तीय एवं भौतिक सहयोग	3 अंक
• पी0टी0ए0 की नियमित बैठक	1 अंक
;kx	05 vad

3- ukekadu ,oa mifLFkfr ¼15 vad vf/kdre½

ukekadu ¼05 vad vf/kdre½

नामांकन (हाउस होल्ड सर्वे) के अनुसार, 06–14 वर्ष के कुल चिह्नित बच्चों के सापेक्ष नामांकन पर अंक प्रदान किए जाएंगे। यदि किसी विद्यालय में हाउस होल्ड सर्वे का अभिलेख उपलब्ध नहीं है तो शून्य अंक प्रदान किए जाएँगे। यह बिन्दु प्रथम चरण में मूल्यांकित किया जाएगा और प्रथम चरण के मूल्यांकन अंक शेष चरणों में भी शामिल किए जाएँगे।

• 96 से 100 प्रतिशत	5 अंक
• 91 से 95 प्रतिशत	2 अंक
• 91 प्रतिशत से कम	0 अंक

mifLFkfr ¼10 vad vf/kdre½

विद्यालय में नामांकन के सापेक्ष विद्यार्थियों की उपस्थिति हेतु निम्नवत् अंक निर्धारित हैं–

• 91 से 100 प्रतिशत	10 अंक
• 80 से 90 प्रतिशत	08 अंक
• 75 से 79 प्रतिशत	05 अंक
• 75 प्रतिशत से कम	00 अंक

पर्यवेक्षण दिवस की भौतिक उपस्थिति के आधार पर अंक प्रदान किए जाएँगे।

4- f'k{k.k dk Lrj ¼20 vad vf/kdre½

श्रेणीकरण के लिए शिक्षण स्तर अत्यन्त महत्वपूर्ण बिन्दु है। निरीक्षक जिन बिन्दुओं पर अंक प्रदान करेगा, उनका विवरण निम्नवत् है–

• शिक्षक की तैयारी	02 अंक अधिकतम
• शिक्षण की विधि	05 अंक अधिकतम
• टी0एल0एम0 का प्रयोग	02 अंक अधिकतम
• कक्षा प्रबन्धन	01 अंक अधिकतम
• उपचारात्मक (रिमीडियल) शिक्षण	02 अंक अधिकतम
• पाठ्य सहगामी (को–करिकुलर) गतिविधि	03 अंक अधिकतम
• बालिकाओं की सहभागिता	04 अंक अधिकतम
• विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की सहभागिता	01 अंक अधिकतम
;kx	20 vad

f'k{kd dh rS;kjh ¼vf/kdre 2 vad½

शिक्षक से वार्ता कर तथा उसके द्वारा पढ़ाए गए पाठ का अवलोकन कर निम्नलिखित बिन्दुओं पर अंक प्रदान किए जाएँगे–

• साप्ताहिक समय–सारिणी	01 अंक
• शिक्षक संदर्शिका उपयोग	01 अंक

f'k{k.k dh fof/k ¼vf/kdre 5 vad½

पर्यवेक्षक, शिक्षक द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधि का अवलोकन करेगा तथा यह देखेगा कि–

• प्रशिक्षण के अनुरूप शिक्षण विधि का प्रयोग (प्रस्तुतीकरण)	01 अंक
• समूह कार्य में छात्र/छात्राओं की सक्रियता एवं सहभागिता	01 अंक
• छात्र/छात्राओं को श्यामपट्ट पर अभ्यास के अवसर दिए जा रहे हैं	01 अंक
• पढ़ाए गए अंशों का मूल्यांकन हो रहा है या नहीं	01 अंक
• बच्चों के लिखित कार्य (कॉपी) की नियमित जाँच तथा बच्चों द्वारा संशोधन कार्य	01 अंक

Vh0,y0,e0 dk ç;kx ¼vf/kdre 2 vad½

• विषयवस्तु प्रस्तुतीकरण/समूह कार्य में टी0एल0एम0 की उपलब्धता व प्रयोग	02 अंक

d{kk çca/ku ¼vf/kdre 1 vad½

• समूह कार्य में छात्र/छात्राओं को शिक्षक द्वारा सहयोग	01 अंक

mipkjkRed ¼fjehfM;y½ f'k{k.k ¼vf/kdre 2 vad½

- कक्षावार–विषयवार कम सम्प्राप्ति वाले बच्चों का चिह्नीकरण करना एवं उपचारात्मक शिक्षण व्यवस्था में उच्च कक्षा के बच्चों से छोटी कक्षा के बच्चों का पियर ग्रुप बनाना। — 02 अंक

ikB~; lgxkeh fØ;kdyki ¼vf/kdre 3 vad½

- प्रार्थना–स्थल एवं राष्ट्रीय पर्वों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन — 01 अंक
- पी0टी0 कक्षावार, पी0टी0 सामूहिक, स्काउट, गाइड आदि की व्यवस्था — 01 अंक
- क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन — 01 अंक

ckfydkvksa dh lgHkkfxrk ¼vf/kdre 4 vad½

- प्रतियोगिताओं में भागीदारी — 02 अंक
- प्रश्नोत्तर करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना — 02 अंक

fof'k"V vko';drk okys Nk=@Nk=kvksa dh lgHkkfxrk ¼vf/kdre 1 vad½

- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों हेतु विशिष्ट योजना का क्रियान्वयन — 01 अंक

5- l= ijh{kk esa fo|kfFkZ;ksa dk Lrj ¼55 vad vf/kdre½

प्रत्येक सत्र परीक्षा में 'विद्यार्थियों का स्तर', निम्नलिखित आगणन के अनुसार प्राप्त किया जाएगा।

- 'विद्यार्थीवार औसत' निकाला जाएगा। सूत्र = सभी विषयों में प्राप्त अंकों का योग/विषयों की संख्या
- विद्यार्थीवार औसत के आधार पर 'कक्षावार औसत' निकाला जाएगा। सूत्र = कक्षा के सभी विद्यार्थियों के औसत का योग/कक्षा में कुल बच्चों की संख्या।
- कक्षावार औसत के आधार पर 'विद्यालय का औसत' निकाला जाएगा। सूत्र = विद्यालय की सभी कक्षाओं के औसत का योग/विद्यालय में कुल कक्षाओं की संख्या
- विद्यालय के औसत प्राप्तांक को 0.55 से गुणा किया जायेगा, और इस प्रकार प्राप्त संख्या श्रेणीकरण हेतु 'विद्यार्थियों का स्तर' अंक होगी।

क्रमांक 1 से 5 बिन्दुओं में प्राप्त कुल अंकों के आधार पर निम्नलिखित श्रेणी दी जाएगी–

vad foLrkj	Js.kh
75 से अधिक	अ
60–74	ब
50–59	स
35–49	द

विद्यालय में प्राप्त श्रेणी का अंकन विद्यालय भवन में प्रधानाध्यापक कक्ष के निकट के खम्भे पर एक फिट लम्बे एवं एक फिट चौड़े काले वर्ग पर सफेद रंग से अंकित किया आयेगा।

fo|ky; Js.khdj.k vDVwcj] tuojh vkSj ekpZ में किया जाएगा। श्रेणीकरण न्याय पंचायत समन्वयक के साथ प्राचार्य–डायट द्वारा पूरे सत्र के लिए नामित अध्यापक की संयुक्त टीम करेगी।

d{kk 1 ls 5 ,oa 6 ls 8 Lrj ij l= ijh{kk i)fr ,oa fujh{k.k O;oLFkk

mn~ns';&

- विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को ज्ञात करना
- सत्र परीक्षा द्वारा कमजोर विद्यार्थियों को चिह्नित करना एवं उनके लिए उपचारात्मक व्यवस्था करना।

ijh{kk çfØ;k %

- वर्ष में 3 परीक्षाएँ ली जाएँगी।
- सत्र परीक्षा माह सितम्बर, नवम्बर और फरवरी के प्रथम सप्ताह में ली जाएँगी तथा इन तीनों परीक्षाओं में प्राप्त औसत अंकों के 25 प्रतिशत अंक मुख्य परीक्षा के अंकों में जोड़े जाएँगे।

सत्र परीक्षा के बाद श्रेणीकरण किया जाएगा– जैसे सितम्बर की सत्र परीक्षा के बाद अक्टूबर में श्रेणीकरण। श्रेणीकरण की सूचना न्याय पंचायत/बी0आर0सी0 स्तर पर संकलित की जाएगी। न्याय पंचायत की मासिक समीक्षा बैठक में श्रेणीकरण का विश्लेषण किया जाएगा तथा 'स' और 'द' श्रेणी के विद्यालयों के लिए ^fo|ky; fodkl ;kstuk* बनाई जाएगी। पर्यवेक्षण के दौरान समन्वयक बनाई गई योजना के अनुसार कक्षा–शिक्षण की प्रगति कराएगा।

fo'ks"k %&

- प्रत्येक कक्षा के लिए प्रत्येक विषय की l= ijh{kk 100 vadks की होगी।
- d{kk 1 ,oa 2 ds fy, vf/kdre 50 vadks dh ekSf[kd ijh{kk ली जाएगी। मौखिक परीक्षा लिखित परीक्षा से पहले होगी। अन्य कक्षाओं में विषयवार अलग–अलग परीक्षा ली जाएगी।
- सत्र में पूर्ववत् v)Zokf"kZd@okf"kZd ijh{kkvksa का आयोजन किया जाएगा।

l= ijh{kk gsrq ftyk f'k{kk ,oa çf'k{k.k laLFkku dh Hkwfedk

सत्र परीक्षाओं का आयोजन पूरे जनपद में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा निर्धारित कार्यक्रमानुसार किया जाएगा। प्रत्येक सत्र परीक्षा से 15 दिन पूर्व परीक्षा कार्यक्रम समन्वयक बी0आर0सी0/एन0पी0आर0सी0 के माध्यम से समस्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों एवं प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध कराया जाएगा।

ç/kkuk/;kid dh Hkwfedk

प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय में परीक्षा हेतु पूर्व नियोजन किया जाएगा तथा कक्षावार अध्यापकों को जिम्मेदारी सौंपी जाएगी। परीक्षा के समय प्रश्न–पत्र श्यामपट्ट पर अंकित किया जाएगा। विद्यार्थी सत्र परीक्षा के लिए एक अलग कॉपी रखेंगे। सत्र परीक्षा का मूल्यांकन विद्यालय के अध्यापकों द्वारा ही किया जाएगा। मूल्यांकन की गई उत्तर–पुस्तिकाओं की 5 प्रतिशत रैण्डम चेकिंग बी0आर0सी0/एन0पी0आर0सी0 समन्वयकों द्वारा की जायेगी। सत्र परीक्षा का रिकार्ड एक शैक्षिक सत्र तक विद्यालय स्तर पर सुरक्षित रखा जाएगा। प्रत्येक विद्यालय पर एक निरीक्षण पंजिका प्रधानाध्यापक की संरक्षा में रखी जाएगी और विद्यालय का निरीक्षण करने वाले अधिकारियों द्वारा उसमें अपनी निरीक्षण आख्या अंकित करते हुए तिथि सहित हस्ताक्षर किया जाएगा। यदि विद्यार्थियों की सम्प्राप्ति मूल्यांकन किए बिना एन0पी0आर0सी0 समन्वयक श्रेणीकरण की आख्या प्रस्तुत करते हैं, तो इसके लिए वही उत्तरदायी होंगे।

leUo;d&,u0ih0vkj0lh0 dh Hkwfedk

एन0पी0आर0सी0 समन्वयक, अध्यापकों की मासिक बैठक के दौरान एक समूह बनाकर कक्षावार, विषयवार प्रश्नपत्र तैयार कराएँगे। प्रत्येक सत्र के लिए एक 50–50 प्रश्नों का एक विषयवार मॉडल पेपर भी तैयार कराएँगे और अपने नियंत्रणाधीन न्याय पंचायत के सभी विद्यालयों में इनका प्रयोग सुनिश्चित कराएंगे। एन0पी0आर0सी0 समन्वयक द्वारा प्रत्येक माह अपने न्याय पंचायत के समस्त विद्यालयों का भ्रमण किया जाएगा। परीक्षा के दौरान एन0पी0आर0सी0

समन्वयक द्वारा अपने न्याय पंचायत के सभी विद्यालयों का भ्रमण किया जाएगा, तथा यह सुनिश्चित किया जायेगा कि परीक्षा पूर्ण व्यवस्था के अनुसार हो रही है। परीक्षा के उपरान्त अपने निकटवर्ती न्याय पंचायत के नियंत्रणाधीन समस्त विद्यालयों का भ्रमण किया जाएगा, और इस हेतु न्याय पंचायत का चयन समन्वयक–बी.आर.सी. द्वारा किया जाएगा।

leUo;d&ch0vkj0lh0 dh Hkfedk

बी0आर0सी0 समन्वयक द्वारा विकासखण्ड के समस्त विद्यालयों का शिक्षा सत्र के दौरान दो बार निरीक्षण किया जाएगा। सत्र परीक्षा के समय बी0आर0सी0 समन्वयक तथा सह–समन्वयक द्वारा प्रत्येक दशा में कम से कम 20 विद्यालयों का निरीक्षण किया जाएगा। परीक्षा समाप्त होने पर अपने नियंत्रणाधीन विकासखण्ड के निकटवर्ती विकास खण्ड के 20 विद्यालयों का निरीक्षण किया जाएगा और इस हेतु विकास खण्ड का चयन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा किया जाएगा।

çfr mi fo|ky; fujh{kd@lgk;d cfld f'k{kk vf/kdkjh dh Hkfedk

प्रति उप विद्यालय निरीक्षक/सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा सत्र में अपने नियंत्रणाधीन समस्त विद्यालयों का निरीक्षण एक बार अवश्य किया जायेगा।

एन0पी0आर0सी0/बी0आर0सी0 समन्वयक एवं प्रति उपविद्यालय निरीक्षक/सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी की निरीक्षण आख्याएँ ब्लॉक संसाधन केन्द्र पर सुरक्षित रखी जाएँगी। विद्यालय श्रेणीकरण की सूचना, विद्यालय, एन0पी0आर0सी0, बी0आर0सी0, जिला परियोजना कार्यालय एवं डायट पर सुरक्षित रखी जाए।

ftyk cfld f'k{kk vf/kdkjh rFkk ftyk leUo;d ¼çf'k{k.k½ dh Hkfedk

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी तथा जिला समन्वयक (प्रशिक्षण) द्वारा सत्र में अपने जनपद के प्रत्येक विकास खण्ड के 10–10 विद्यालयों का निरीक्षण किया जायेगा। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी का प्रयास यह रहे कि उनके द्वारा उन्हीं विद्यालयों का निरीक्षण सुनिश्चित किया जाए, जिनका समन्वयक बी0आर0सी0/सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा निरीक्षण कर लिया गया है। ब्लॉक संसाधन केन्द्र पर उपलब्ध इनकी निरीक्षण आख्याएँ, निरीक्षण के दौरान अपने साथ लेकर जाएँ।

e.Myh; lgk;d f'k{kk fun'kd ¼cfld½ dh Hkfedk

मण्डलीय सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक), मण्डल स्तर पर एक टॉस्क–फोर्स का गठन करेंगे। सत्र में दो बार टॉस्क फोर्स के सदस्यों के लिए रैण्डम सैम्पलिंग के आधार पर औचक निरीक्षण किया जाना अनिवार्य होगा। leLr e.Myh; lgk;d f'k{kk fun'kd ¼cfld½ }kjk l= e viu e.My dh çR;d rglhy d 5 fo|ky;k dk fujh{k.k lfuf'pr fd;k tk;xkA

ofj"B vf/kdkfj;k d fujh{k.k e ;fn dfu"B vf/kdkjh d fujh{k.k d ckn deh ikbl tk,xh rk dfu"B d fo#) fu;ekuqlkj vuq'kklukRed dk;okgh dh tk,xhA çR;d fujh{k.kdrk vf/kdkjh dk ;g ç;kl jg fd fujh{k.k d le; xke ç/kku o ch0Mh0lh0 lnL;k l Hkh lEidl dj 'kf{kd leL;kvk l lEcfU/kr tkudkjh çkIr djA यदि विद्यालय श्रेणीकरण के कार्य में कमी पाई जाए तो सम्बन्धित बी0आर0सी0/एन0पी0आर0सी0 समन्वयक के विरुद्ध अपने स्तर पर तत्काल कार्यवाही कराएंगे तथा विश्लेषण आख्या तैयार करें। यदि अपने अधिकार क्षेत्र में न हो तो सम्बन्धित विभाग के उच्चाधिकारी को अर्द्धशासकीय पत्र लिखेंगे।

कृपया उपर्युक्त निर्णयों का अपने नियंत्रणाधीन विद्यालयों में कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित कराया जाय जिससे कि प्रदेश में प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के सम्प्राप्ति स्तर में अपेक्षानुरूप वृद्धि सम्भव हो सके।